

बुर्ज-ए-मुस्तहकम

The

STRONG

ower

بُورْجُ الْمُسْتَحْكَمِ

۱۸۷۵ء

جناب آگسٹس براڈ ہیڈ صاحب

مترجم اگستین برآڈ ہیڈ صاحب

Allama Rev. Brodhead Augustus

AMERICAN MISSION LUDHIANA

1875

किताबे मुसम्मा बह

# बुर्ज-ए-मुस्तहकम

मुतर्जिम पादरी अगस्तन ब्रॉड हैड साहब

वास्ते फख्खआबाद मिशन के शाएअ हुआ

मतबअ अमरीकन मिशन लूदियाना

1875 ई.

## फ़ेहरिस्त मज़ामीन

खुदा हमारा बाप है.....	8
ईसा हमारा बड़ा भाई है.....	9
रूह-उल-कुद्स तसल्ली देने वाला है.....	10
ईमानदारों के लिए मुसीबत का मुकर्रर होना.....	11
आज़माइशों की हद.....	12
मसीह का वसीयत नामा .....	13
इत्मीनान .....	14
मुसीबतें ईमानदारों का हिस्सा आम .....	15
मसीह के नक्शे क़दम पर चलना चाहिए .....	16
लेपालक होने की दलील .....	17
रहम की तर्बियत.....	18
आहज़ारी.....	19
ईमानदार की फ़र्याद.....	20
दुआ .....	21
मुसीबत का ईलाज .....	22
खुदा का हमारे लिए हम्दर्द होना .....	23
तवक्कुल.....	24
गर्ज़-ए-इलाही .....	25
मुहासिबा.....	26
खुदा का इरादा.....	27
खुदा की मर्ज़ी.....	28

मसीह हमारा पेशवा .....	29
मस्लिहत .....	30
जाए-पनाह.....	31
रफ़ीक अज़ीम .....	32
हाल का आराम.....	33
नज़र मुहब्बत.....	34
बे-तब्दील दोस्ती .....	35
नतीजा मुतयक्कन .....	36
आराम .....	37
तैयारी.....	38
शरीरों की हालत का बयान.....	39
मसीह की तारीफ़ .....	40
ईसा बचाने के काबिल है.....	41
ईसा गुनेहगारों को बचाना चाहता है.....	42
ईसा गुनेहगारों पर मेहरबानी करने को तैयार है.....	43
खुदा का मसीह में ज़ाहिर होना .....	44
मसीह का फ़ज़ल से मामूर होना .....	45
ईमानदार का मसीह में होना.....	46
कलाम-ए-खुदा ईसा का लक़ब है.....	47
ईसा का हमारा दोस्त होना.....	48
मसीह की मुहब्बत .....	49
मसीह का फ़ज़ल .....	50
मसीह का बेशक़ीमत लहू.....	51
ईसा का हमारे लिए सरदार काहिन होना .....	52

ईसा हमारी सदाकत होना .....	53
ईसा का हमारी पाकीज़गी होना .....	54
ईसा का हमारी हिक्मत होना .....	55
ईसा का हमारी खलासी होना .....	56
ईसा का हमारा सालिस होना .....	57
ईसा का हमारा वकील होना .....	58
ईसा का हमारा तबीब होना .....	59
ईसा का हमारा चौपान होना .....	60
ईसा का हमारा नमूना होना .....	61
ईसा का हमारी नजात का पेशवा होना .....	62
ईसा का अपने लोगों के लिए अहद का पूरा करने वाला होना .....	64
ईसा का हमारा पेशवा होना .....	65
ईसा का क्रियामत होना .....	66
ईसा का सब का सर होना .....	67
ईसा का दिलसोजी रखना .....	68
ईमानदारों का मसीह में कामिल बनना .....	69
ईसा आने वाला है .....	70
ईसा का अबद तक यकसाँ होना .....	71
हाल खौफनाक .....	72
तसल्ली-देह का शख्स इलाही होना .....	73
रूह-ए-पाक का तसल्ली बख़श होना .....	74
तसल्ली देने वाले का ईमानदारों के साथ हमेशा रहना .....	75
तसल्ली देने वाले का हमा जा होना .....	76
रूह-उल-कुद्स का कादिर होना .....	77

रूह-उल-कुद्स का खुद-मुख्तार होना.....	78
रूहे पाक का सरनू पैदा करने वाला होना.....	79
रूहे पाक का गुनाह की बाबत काइल करना.....	80
रूहे पाक का रास्तबाज़ी के हक में काइल करना.....	81
रूहे पाक का अदालत की निस्बत काइल करना.....	82
रूह-ए-पाक का उस्ताद होना.....	83
रूह-उल-कुद्स का हिदायत करना.....	84
रूह-उल-कुद्स का दिल का पाक करना.....	85
रूह-उल-कुद्स का गवाह होना.....	86
रूह-ए-पाक का मुहर करना.....	88
रूह-उल-कुद्स का बैयाना.....	89
रूहे-पाक का सिफ़ारिश करना.....	90
रूह-ए-पाक का हमारा मदद करने वाला होना.....	91
रूह-उल-कुद्स का जिलाने वाला होना.....	92
रूह-ए-पाक का हमको जिलाना.....	93
रूहे-पाक के वसीले से बाप के पास दाखिल होना.....	94
रूह में चलना.....	95
रूहे-पाक का मसीह के हक में गवाही देना.....	96
रूह-ए-पाक का मसीह की बुजुर्गी करना.....	97
फ़ज़ल की रूह.....	98
लेपालक होने की रूह.....	99
रूह-उल-कुद्स का आज़ादगी रूह होना.....	100
रूह-ए-पाक का याद दिलाने वाला होना.....	101
रूह से भर जाना.....	102

क्या तुमने रूहे अक़दस को पाया .....	103
रूहे पाक की बख़्शिश ईमान लाने पर मुन्हसिर है.....	104
रूह उन में नहीं .....	105



## बुर्ज मुस्तहकम

# खुदा हमारा बाप है

“मैं तुम्हारा बाप होऊँगा। और तुम मेरे बेटे बेटियों होगे ये खुदावन्द कादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है।” (2 कुरिन्थियों 6:18)

ऐ आजमूदा भाई तू यतीम नहीं है खुदा अपनी ज़ात व सिफ़ात के कमालात में तेरा बाप है उस ने तुझे ले-पालक किया है अपनी रूह के वसीले से उस ने तुझे सर-ए-नौ पैदा किया है। उस ने तुझे अहले-दुनिया में से बुलाया और वाअदा किया मैं तुम्हारा बाप होऊँगा अगर तू सलाह (मश्वरा) लेने का मुश्ताक़ है तो अपने बाप से नसीहत ले अगर तू किसी चीज़ का हाजतमंद है। तो अपने बाप से मांग और वो तेरी सारी एहतियाजें रफ़ा (ज़रूरत का पूरा होना) करेगा अगर तू फ़िक्र में है तो अपनी सारी फ़िक्रें अपने बाप पर छोड़ दे अगर तू दुश्मनों से डरता है तो अपने बाप के पास जा और वो तेरी जाये पनाह (पनाह का मक़ाम) होगा अगर तेरी मुश्किलात और तकलीफ़ात बर्दाशत से बाहर हैं तो अपने बाप की तरफ़ रूजू कर खुदा ना सिर्फ़ नाम से बाप है बल्कि वो बाप का मिज़ाज भी रखता है वह ना सिर्फ़ नाम को बेटे और बेटियां कहता है बल्कि ये भी चाहता है कि हम उस को बाप समझें। चाहिए कि हम उस की मुहब्बत पर भरोसा रखें और उस के कलाम पर एतबार करें और अपनी हाजतों के रफ़ा करने के लिए उसी पर तकिया (भरोसा) करें बल्कि हर एक बात में अपनी अर्ज़, दुआ और मिन्नत के साथ खुदा से करें वो निहायत आर्ज़मंद है हम उस के प्यार पर भरोसा रखें और उस के कलाम पर यक़ीन करें और उस की राह ताकते रहें और उस की मर्ज़ी पर खुश हों। ऐ ईमानदार तेरी तकलीफ़ें कितनी ही बड़ी और तेरे दुश्मन कितने ही ज़ोर-आवर और तेरी मुसीबतें कितनी ही सख्त क्यों ना हों तो भी ये नहीं हो सकता कि तो यतीम हो जाये बल्कि हमेशा तेरा एक बाप है जो खुदा है। तेरी राह कैसी ही मुश्किल क्यों ना हो लेकिन तो भी तू खुदा का है क्या ही बे पायां बरकत ये है।

“हम खुदा के फ़र्ज़न्द हैं और जब फ़र्ज़न्द हुए तो वारिस भी यानी खुदा के वारिस और मीरास में मसीह के शरीक।” (रोमियों 8:16-17)



## ईसा हमारा बड़ा भाई है

“जो कोई मेरे बाप की जो आस्मान पर है मर्जी पर चलता है मेरा भाई वही है।” (मत्ती 12:50)

जितने ताल्लुक ईसा अपने लोगों के साथ रखता है सब दिल पज़ीर व नफ़ीस हैं मगर इनमें कुछ हैं जो खासकर ऐसे हैं मसलन वो ना सिर्फ़ हमारा बचाने वाला बल्कि हमारा भाई भी है वो हमारी हड्डी में से हड्डी और हमारे गोशत में से गोशत है। हमारी ज़ात का शरीक और हमारे साथ एक ही ख़ानदान में से हो के वो भाई के मानिंद हमारी ख़बर लेता और भाई की सी हम-मुहब्बत रखता है यकीनन वो एक भाई है जो मुसीबत के दिन के लिए पैदा हुआ है। जब हम खुश होते हैं तो वो भी खुशी करता है। और जब हमगम आलूदा रहते हैं तो वो हमारे साथ गम करता है चाहिए कि हम अपनी सारी तकलीफ़ व मुसीबत में उस के पास जाएं और अपने दिल का मतलब साफ़-साफ़ कहें।

जितना वो हमको प्यार करता है उस के मुकाबले में कौन कर सकता है और मदद देने के लिए उस के बराबर कौन लायक और रज़ामंद है। वो आस्मान पर इसलिए गया ताकि हमेशा खुदा के हुज़ूर हमारे लिए हाज़िर रहे। ऐ आजमूदा ईमानदार तेरी आजमाईश में ईसा तुझे पर नज़र करता है। कान लगा के वो तेरी फ़र्याद सुनता है तेरा रंज व ग़म उस के दिल पर असर करता है और तेरी सिफ़ारिश के लिए वो हमेशा जीता है। क्या ही मुबारक खयाल ये है कि आस्मान पर हमारा भाई है लेकिन एक ऐसा भाई जो हमारे सब दुखों से वाकिफ़ है। यकीनन वो हमारे दुश्मनों को उन के मंसूबे बर आने से महरूम रखेगा। और उस के वसीले से हमारी मुसीबतें खुशी का बाइस ठहरेगी क्योंकि सब चीज़ें उन की बेहतरी के लिए जो खुदा से मुहब्बत रखते हैं मिल के फ़ायदा बख़्शती हैं। अपने क़वी बाजू से वो तेरी दस्तगीरी करेगा अपनी बरकतों के ख़ज़ाने से वो तेरी सब हाजतें रफ़ा करेगा। और दिल-सोज़ हो के तेरे दर्दों में हम्दर्द रहेगा। अपनी मस्लिहत से वो तेरी हिदायत करेगा और इस के बाद तुझे जलाल में लेगा। पस मुसीबत के वक़्त हम उस के पास जाएं और उसे भाई जान कर उसी पर तकिया करें और उसी की मेहरबानी के मुन्तज़ीर रहें।

“जो पाक करता वो जो पाक किए जाते सब एक ही के हैं इसलिए वो उनको भाई कहने से नहीं शर्माता।” (इब्रानियों 2:11)

## रूह-उल-कुद्स तसल्ली देने वाला है

“और मैं अपने बाप से दरख्वास्त करूँगा और वो तुमको दूसरा तसल्ली देने वाला बखशेगा कि हमेशा तुम्हारे साथ रहे।” (यूहन्ना 14:16)

अक्सर ईमानदारों की मुसीबतें ऐसी भारी हैं कि किसी इन्सान से रफ़ा नहीं हो सकतीं इन्सान रफ़ा करने के खिलाफ़ हमारे रंज को बढ़ाते हैं। ईसा ने ये बात समझी और इसी सबब से वो तीन बरस तक अपने शागिर्दों को तसल्ली देता रहा और आस्मान पर जाते वक़्त रूह-उल-कुद्स का जो तसल्ली देने वाला है वाअदा किया रूह-उल-कुद्स रूहे इलाही है वो दिल को पहचानता और हमारे रंज का हक़ीक़ी सबब दर्याफ़्त कर सकता है उस का रहम और उस की मुहब्बत बेहद है और वो लायक़ और मोअस्सर तौर से तसल्ली दे सकता है। ईसा के कुल फ़ज़ाइल (फ़ज़ीलत की जमा, खूबियाँ) उस के पास हैं और जिस बात में और जिस क़द्र हमको तसल्ली ज़रूर है इस बात के लिए और इस क़द्र वो हमारी हाजत रफ़ा करेगा वो बाप के चेहरे पर से गोया पर्दा उठाता है। वो ईसा की लियाक़त व काबिलियत हम पर ज़ाहिर करता है। वो हमारे ले-पालक होने पर गवाही देता है यहां तक कि हम अब्बा यानी ऐ बाप कह सकते हैं। इसी से हर एक तसल्ली देने की उम्मीद शोले की मानिंद दिल में आती है तसल्ली देना उस का काम और उसी की खुशी भी है। पस चाहिए कि अपनी आजमाईशों और इम्तहानों बल्कि अपनी कुल तकलीफ़ात और मुश्किलात में हम उसी पर निगाह रखें शायद ऐसा हो कि इस दुनिया के दोस्त हमारी मदद ना कर सकें लेकिन रूह-उल-कुद्स हमारी मदद कर सकता है और वो मदद भी करेगा। ऐ ईसा इस तसल्ली देने वाले को मेरे दिल में भेज कि वो तेरी मुहब्बत और तेरी नजात की खुशी का मुझे यक़ीन दिलाए काश कि मैं इस तसल्ली बख़श रूह का ज़हूर अपने दिल में देखूँ और ये कि वो मुझको राह-ए-हक़ बताए और ईसा का जलाल मुझ पर ज़ाहिर करे और मुझ पर ख़लासी के दिन तक अपनी मुहर करे।

“वो मेरी बुजुर्गी करेगी इसलिए कि वो मेरी चीज़ों से पाएगी और तुमको दिखाएगी।” (यूहन्ना 16:14)

## ईमानदारों के लिए मुसीबत का मुकर्रर होना

“तुम इन मुसीबतों से लड़िश ना खाओ क्योंकि तुम आप जानते हो कि हम इन्हीं के लिए मुकर्रर हुए हैं।” (1 थिस्सलुनीकियो 3:3)

अगरचे तसदीअ (दर्द-ए-सर, दुख) मिट्टी से नहीं उगती और तकलीफ़ ज़मीन से नहीं पैदा होती लेकिन आदमी तकलीफ़ के लिए पैदा होता है जिस तरह से चिंगारी की खासियत है कि उड़े तकलीफ़ गुनाह का एक फल है बल्कि सारी मुसीबतें इस कड़वी जड़ से निकलती हैं पर तो भी खुदा हमारी मुसीबतों से हमको फ़ायदा पहुँचाता है और उन्हें हमारे हाल व इस्तिक़बाल की बेहतरी के लिए हम पर भेजता है हम को ये ना समझना चाहिए कि हमारी तकलीफ़ें खुदा के क्रहर से पैदा होती हैं। बल्कि वो पिदराना तम्बीह (बाप की डॉट) हैं। खुदा आगे से जानता है कि हम कैसे होंगे और हमारे लिए कैसा सुलूक दरकार होगा चुनान्चे उस ने हमारी मुसीबतों का शुमार और किस्म और इतिहा ठहराई कभी-कभी बे-वसीला हम पर तकलीफ़ें आती हैं। तब खुदा की कुद्रत देखकर हम फ़ौरन उस के मुन्किर होते हैं। लेकिन कभी उस की इजाज़त से हम खुद आपको मुसीबतों में डालते हैं ऐसी हालत में उस का दस्त-ए-कुद्रत नहीं देख सकते और इस सबब से ग़म और रंज में डूब जाते हैं जानना चाहिए कि हर एक ईमानदार के लिए एक पियाला है जो उस के बाप ने उसे पीने को दिया है चाहिए कि उसे ले ईसा की मानिंद कहे कि वो पियाला जो मेरे बाप ने मुझे दिया क्या मैं ना पिऊँ। हर एक मुसीबत खुदा की तरफ़ से है और हमारी बेहतरी के लिए मुकर्रर की गई हर मुसीबत पर मुहब्बत का सर-नामा लिखा जाता है पर मुश्किल ये है कि अक्सर हम ये सर-नामा नहीं पढ़ सकते हैं हर मुसीबत व रंज के वसीले से खुदा हमको ये कह के बुलाता है कि ऐ मेरे बेटे मेरे पास आ कि मैं तुझे बरकत बख्शूँ पस चाहिए कि हम खुदा के पास जाएं और अपना कुल रंज व मुसीबत उस पर छोड़ें हम उस से ये बरकत मांगें कि हमारी तकलीफ़ें हमको दुनिया से उसी तरफ़ खींच लें जो कुछ मेहरबान खुदा से आता है सो वही मुहब्बत है।

“वो खुद सर है और कौन उसे फिरा सकता है जो उस का जी चाहता है सो वोही करता है वो उस बात को जो उस ने मेरे लिए मुकर्रर की पूरा करता है और ऐसी बहुत सी बातें उस के पास हैं।” (अय्यूब 23:13-14)

## आज़माइशों की हद

“बिल-फ़अल चंद रोज़ बज़रूरत तरह-तरह की आज़माइशों से ग़म में पड़े हो।”  
(1 पतरस 1:6)

ईमानदार की आज़माइशों तरह-तरह की हैं और उनका ये मंशा है कि उन के वसीले से उस का ईमान और मुहब्बत जांची जाये अक्सर उस के इम्तिहान निहायत सख्त हैं ताहम एक तसल्ली का बाइस ये है कि वो महदूद हैं चुनान्चे लिखा है कि मुसीबत के दिन में सोच फिर इम्तिहान की घड़ी का ज़िक्र है। फिर हमारी पल-भर की हल्की मुसीबत और फिर ये कि मैंने एक दिन के लिए तुझे तलाक़ दिया इस तरह हमारी आज़माइशों के होने की बाबत एक दिन एक घड़ी एक दम वगैरह का ज़िक्र है और इस से जाना जाता है कि खुदा हर एक इम्तिहान की कुछ हद ठहराता है और कि ये हद इस ज़िंदगी में होगी। आक्रिबत में नहीं पौलुस हवारी कहता है कि मेरी समझ में ज़माना हाल के दुख दर्द इस लायक नहीं कि इस जलाल के जो हम पर जाहिर होने वाला है मुक़ाबिल हों। ऐ अज़ीज़ों ! हमारी रंज व मुसीबत कितनी ही सख्त क्यों ना हो लेकिन तो भी देर तक ना रहेगी बोझ भारी हो तो हो उसे दूर तक ले जाना पड़ेगा। हम जल्द अपनी सलीब उतारेंगे। और आस्मान पर चढ़ कर अपना ताज पाएँगे। शायद ऐसा हो कि हमारे बाप का चेहरा थोड़ी देर तक हमसे छिपा रहे लेकिन वो फिर हम पर जलवागर होगा उस का ग़ज़ब पल-भर का है उस की रजामंदी में ज़िंदगी है। अगर रौना शाम को तो सुबह को गाने की नौबत होती, तेरे हाल की तकलीफ़ चंद रोज़ है। पस उस की बर्दाश्त कर सब्र और दुआ और बचने की उम्मीद के साथ ना उम्मीदी में डूब ना जा शैतान को जगह ना दे खुदा का इंतज़ार कर क्योंकि तू फिर उस की शुक्रगुजारी करेगा जो तेरे चेहरे की नजात और तेरा खुदा ही रात के अंधेरे के एवज़ में सुबह की जलाली रोशनी होगी तेरे दुख और मुसीबतें अंजाम तक पहुंचेंगी, तब अबदी सरवर तेरे सर पर होगा तू खुशी और शादमानी हासिल करेगा और ग़म व आह-ए-सर्द भागेगी।

“अब खुदा जो कमाल फ़ज़ल करता है जिसने हमको अपने जलाल अबदी के लिए मसीह ईसा से बुलाया है आप भी तुमको थोड़ा सा दुख सहने के बाद तैयार मज़बूत उस्तिवार पायदार करे।” (1 पतरस 5:10)

## मसीह का वसीयत नामा

“सलामती तुम लोगों के लिए छोड़ के जाता हूँ अपनी सलामती मैं तुम्हें देता हूँ ना जिस तरह से कि दुनिया देती है मैं तुम्हें देता हूँ।” (यूहन्ना 14:27)

ईसा तजुर्बेकारी से जानता था कि मेरे लोग किन-किन चीज़ों के मुहताज हैं। उस की यहां की ज़िंदगी दुख और तकलीफ़ व रंज से भरी थी हकीकतन वह मर्द-ए-गमनाक था लेकिन तो भी वो सलामती रखता था। उस की रूह चैन में रही उस का ईमान सर-गर्म था और वो कामिल तौर से अपने बाप की मुहब्बत पर तकिया (भरोसा) करता था। जब उस के चारों तरफ़ दुश्मन शोर व गुल मचाते और फ़साद उठाते थे। वो खुश वक़्त व बरकरार रहा और जब वो अपने बाप के पास गया तो हमारे लिए उस ने ये वसीयत की कि सलामती तुम लोगों के लिए छोड़ के जाता हूँ। अपनी सलामती मैं तुम्हें देता हूँ हमारी ज़ाहिरी हालत में हर-चंद घबराहट हो तो भी हम चैन और सुलह से रह सकते हैं। ईसा पर ईमान लाने और अपने दिल उस पर छोड़ने और उस की मर्ज़ी पर खुश होने से हमें सलामती मिलती है। चुनान्चे लिखा है कि जिसका दिल तुझ पर एतिमाद रखता है। तू ख़ूब सलामती से उस की निगहबानी करेगा। क्योंकि उस का तवक्कुल तुझ पर है ऐ मेरी जान मैं तुझे ताक़ीद करता हूँ कि ईसा पर अपना बोझ डाल दे उस की मर्ज़ी का ताबे रह बल्कि अपनी मर्ज़ी से उस की मर्ज़ी को ज़्यादा पसंद कर, ईसा का कलाम अपना क़ानून और अपनी तस्कीन जान, ईसा का जलाल तेरी गर्ज हो उस वसीयत नामे को जो तूने उस से पाया फ़ज़ल के तख़्त के पास ले जा कि वहां तुझे उस के बाप की तरफ़ से मीरास मिलेगी। अपनी सारी तकलीफ़ों और मुश्किलों में दिल व जान के पाक आराम के लिए दुआ मांग और ज़िंदगी में और मौत के वक़्त मसीह पर निगाह करके तस्कीन खातिर रख ईमान ला और तुझे इस वसीयत-नामे के मुताबिक़ मिलेगा तेरा शफ़ी जिसने दुनिया में आके मुझसे इस बरकत का वाअदा किया उसे देने के लिए आस्मान

पर ज़िंदा है। लिहाज़ा उस से मांग सलामती का मुंतज़िर रह और वो तुझे ज़रूर मिलेगी। हम जो ईमान लाए आराम में दाखिल होते हैं।

“किसी बात का अंदेशा ना करो बल्कि हर एक बात में तुम्हारी अर्ज़ दुआ और मिन्नत से शुक्रगुज़ारी के साथ खुदा से की जाये और खुदा का इत्मीनान जो सारी समझ से बाहर है तुम्हारे दिलों और खयालों की मसीह ईसा में निगहबानी करेगा।” (फिलिप्पियों 4:6-7)

## इत्मीनान

**“खुदा हमारे लिए जाए-पनाह और कुव्वत है वो तंगियों में निहायत मददगार पाया गया।” (ज़बूर 46:1)**

खुदा अपने लोगों की सारी इहतियाजों को रफ़ा करेगा क्योंकि उस की सारी सिफ़ात और कमालात उन्ही के लिए हैं। जब वो खतरे में पड़ेंगे तब खुदा उनकी जाए-पनाह (अमन की जगह) है उस के पास जा कर उन को खुदा की अदल और उदूल (इन्कार, मुँह फेर लेना) की हुई शराअ की तहदीद (सरज़निश, डराना) से डरना ना चाहिए जो वो नातवां (कमज़ोर) हैं तो खुदा उन की तवानाई है वो उन्हें बदी से जंग करने की ताकत देगा। और जंग में भी उन को सँभालेगा और आखिर को उन्हें फ़त्ह बख़्शेगा जो वो रंज व मुसीबत में पड़े हों तो वो तंगियों में उनका मददगार होगा। वो अपने लोगों को ग़म व तकलीफ़ की बर्दाश्त करने की ताकत देगा। और ऐसी मदद करेगा कि उन की तकलीफ़ें फ़ायदे का बाइस ठहरें वो छः (6) मुसीबतों से तुझे छुड़ाएगा बल्कि सात (7) में से एक भी तुझको ज़रर (नुक्सान) ना करेगी। ऐ ईसाई हर खतरे में खुदा के पास दौड़ा जा वो तुझे कुबूल करने को अपनी गोद फैलाता है उस का दिल तेरी जाए-पनाह होगा वो तुझे छुपाएगा और अपना दामन तेरे ऊपर फैला के तेरी हिमायत व हिदायत करेगा। खुश-वक्ती और कमबख़्ती में हाँ ज़िंदगी व मौत में वो तेरी हिफ़ाज़त करता रहेगा। अपनी कुल कमज़ोरियों में उस से ज़ोर मांगा कर क्योंकि वो कहता है कि मेरा ज़ोर कमज़ोरी में पूरा होता है। वो मिस्कीन का ज़ोर है और मुहताज की परेशानी के वक़्त उस की कुव्वत अक्सर औकात उस ने ज़ईफ़ों और तंग हालों की मदद की है और तेरी भी करेगा। अपनी

कुल मुश्किलों में तकवियत और तसल्ली के लिए उस के पास जाया कर और वो तेरा इन्कार ना करेगा उस के क्या है गर उनकद्र (कीमती) अल्फ़ाज़ जो वो अपने परेशान लोगों से बोलता है कि तू ना डर क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ। पीछे फिर के ना देख क्योंकि मैं तेरा खुदा हूँ मैंने तुझे मज़बूत किया हूँ तेरी मदद की हूँ तुझे अपनी सदाक़त के दहने हाथ से सम्भाला है वो खतरे में तेरी सिपर और तंगी में तेरा मददगार होगा वो हर वक़्त और हर हाल में मौजूद है और मदद करने और बरक़त देने को तैयार।

“इसलिए आओ हम फ़ज़ल के तख़्त के पास बेपर्वा जाएं ताकि हम पर रहम हो और फ़ज़ल जो वक़्त पर मददगार हो हासिल करें।” (इब्रानियों 4:16)

## मुसीबतें ईमानदारों का हिस्सा आम

“सादिक़ पर बहुत सी मुसीबतें पड़ती हैं पर यहोवा उन सभी से उसे रिहाई बख़्शेगा।” (ज़बूर 34:11)

खुदा के लोग रास्तबाज़ हैं ईसा की कामिल रास्तबाज़ी उन के हक़ में गिनी जाती है उन में रूह-ए-पाक का रास्त काम किया जाता है वो खुदा के कलाम की रास्त तालीम अमल में लाते हैं इस फ़रमांबर्दारी से जो मसीह ने की उन को जन्नत मिलती है। सारे सादिक़ों पर कमो-बेश मुसीबतें पड़ती हैं उन में कोई नहीं जो तकलीफ़ से बचा हो हर एक बेटा तम्बीह पाता है। लेकिन उन की मुसीबतें कितनी ही बड़ी और कितनी ही सख़्त क्यों ना हों तो भी सादिक़ उन पर ग़ालिब होते हैं। उन की मुसीबतों के ज़माने के मुताबिक़ उन की कुव्वत होती है और उन पर ये साबित होता है, कि ईसा का फ़ज़ल उन के लिए काफ़ी है। वो सारी मुसीबतों से उन्हें रिहाई बख़्शेगा जो र्हाईयां खुदा देता है सो हमेशा कामिल हैं वो अपने हर एक बेटे को बचाता है बल्कि हर तरह से और हमेशा के लिए बचाता है इस्राईल खुदावन्द पर भरोसा रख के अबदी नजात के साथ रिहाई पाएगा तुम अबद-उल-आबाद कभी पशेमान (शर्मिदा) और सरासीमा (हैरान परेशान) ना होगे। कभी किसी ईमानदार की मुसीबतें उस की हलाक़त का बाइस ना ठहरी हैं और ठहरेंगी। किसी ईसाई का बोझ उस की बर्दाश्त करने से बाहर ना हुआ है और ना होगा। वाअदा इलाही ये है और ये हमारे तरसाँ दिलों को समझा ले कि जैसे तेरे दिन हों वैसी तेरी कुव्वत हो जब

खुदा-ए-रहीम ऐसा वाअदा करता है क्या अपने कलाम पर वफ़ादार ना होगा। अक्सर हम शक लाए हैं और ख़ौफ़ भी किया ता ना हो कि हम आखिर को हलाक हों, लेकिन तो भी अपने ख़ौफ़ से रिहाई पाके हम इस पर अपनी मुहर कर सकते हैं कि ख़ुदा वफ़ादार है। अगर उस का वाअदा हक़ ही नहीं तो हम अभी तक राह-ए-रास्त पर चलने में साबित-कदम ना रहते।

“तो जिसने बहुत तंगीयाँ और मुसीबतें दिखलाई हैं। फिर आ के हमें जिलाएगा और ज़मीन की घरानों से फिर आ के हमें उठालेगा।”

(ज़बूर 71:20)

## मसीह के नक़शे क़दम पर चलना चाहिए

“ये वही हैं जो पड़ी मुसीबत में से आए और उन्होंने ने अपने जामों को बर्रे के लहू से धोया और उन्हें सफ़ैद किया।” (मुकाशफ़ा 7:14)

खुदा के लोगों में अक्सर ऐसे लोग हैं जो ये समझते हैं कि अगर औरों की तकलीफ़ें और मुसीबतें भारी हों तो हों लेकिन ताहम हमारी मानिंद नहीं हैं। हमारी मुसीबत के बराबर किसी की नहीं हैं। ये ग़लती है खुदा के ख़ानदान के सारे लोग जो अपने आस्मानी घर को गए हैं। एक ही राह हो के गए हैं और बहिसाब औसत उन की मुसीबतें यकसाँ हुई हैं। सभी के लिए बातिनी लड़ाई और ज़ाहिरन एक ही नाहमवार राह है। मसलन नबियों की बड़ी मुश्किल राह थी। चुनान्चे हवारी कहता है कि जो नबी खुदावन्द का नाम ले के कलाम फ़र्माते थे। उन के दुख उठाने और सब्र करने को नमूना समझो जो ईसाई शहर कुरिन्थुस में थे वो समझते थे कि हमारी ऐसी आजमाईशें और तकलीफ़ें हैं कि वैसी औरों की नहीं पर तो भी पौलुस रसूल उन से कहता है कि तुम किसी इम्तिहान में सिवा इस के जो और इन्सान से किया जाता है नहीं पड़े और ख़ुदा वफ़ादार है कि वो तुमको तुम्हारी ताक़त से ज़्यादा इम्तिहान में पड़ने ना देगा। बल्कि वो इम्तिहान के साथ निकल जाने की राह भी ठहराएगा ताकि तुम बर्दाश्त कर सको और जैसा ख़ादिम वैसा ही ख़ावन्द का हाल यानी गुनाह के सिवा वो सब बातों में हमारी मानिंद आजमाया गया और आप ही इम्तिहान में पड़ के वो उन की जो इम्तिहान में



पड़ते हैं मदद कर सकता है। ऐ मुसीबतज़दा ईसाई तू उसी राह पर चलता है। जिसमें ईसा के कुल गल्ले को चलना पड़ता है अपनी राह पर निगाह कर और तुझे बड़े कडरिए के नक्श-ए-पा दिखलाई पड़ेंगे। खातिरजमा रख क्योंकि तेरी बिल-फ़अल की मुसीबतें जलाल आइन्दा की अलामत हैं जंगल की हैबतनाक चीज़ें देखकर आस्मान की खुशी व सआदत ज़्यादा ख़ूब व पसंदीदा होगी।

“जान रखो कि ऐसे ही दुख तुम्हारे भाई जो दुनिया में हैं उठाते हैं।”

(1 पतरस 5:9)

## लेपालक होने की दलील

“अगर तुम तम्बीह में सब्र करते हो तो ख़ुदा तुम से फ़रज़न्दों की मानिंद सुलूक करता है।” (इब्रानियों 12:7)

अक्सर जो मुसीबतें हम पर पड़ती हैं वो तम्बीह (नसीहत) के तौर पर पड़ती हैं। वो हमारे बाप के प्यार के सबब से होती हैं और तम्बीह के लिए दी जाती हैं हलाकत के लिए नहीं। लिहाज़ा जब मुसीबत और दुख आ जाता है तब चाहिए कि हम दर्याफ़्त करें कि इस का क्या सबब है। और नबी की मानिंद कहें कि हम खोजें और अपनी राहों को जांचें और ख़ुदावन्द की तरफ़ फ़िरें ख़ुदा के सारे फ़रज़न्दों के लिए तादीब दरकार है और वो उन सभों को तादीब देता है जो गुनाह कर के तम्बीह नहीं पाता वो अपने को ख़ुदा का प्यारा क्योंकि समझे क्योंकि ख़ुदा जिसे प्यार करता है उसे तम्बीह देता है। और हर एक बेटे को जिसे वो कुबूल करता है बेटा है लेकिन जब हमारे दिल नर्म होते जाते हैं और हमारी तकसीरों (गुनाह, ग़लती) के लिए हमको तम्बीह मिलती है, तब हमारा बेटा होना साबित होता है। ख़ुदा की ये मर्ज़ी नहीं है कि मेरे फ़रज़न्द मुझसे दूर रहें छड़ी और तम्बीह दानिश बख़शने वाली हैं और अगर हम ख़ुदा के सीधे राहों से फ़िरें तो वो हमको तमांचे मारेगा और तम्बीह देगा, अगर मैं गुनाह कर के इस गुनाह से पछताऊँ और जब तक अपने क़सूर का इकरार ना करूँ तसल्ली ना पाऊँ और जब तक ख़ुदा अपना चेहरा मुझ पर जलवागर ना करे। तब तक मैं अपने को अंधेरे में समझूँ तो मुझे फ़र्ज़द-ए-ख़ुदा होने पर शक़ लाना ना चाहिए ख़ुदा मेरा बाप है और मैं कितना ही कमज़ोर व बेकरार व

खुद-पसंद व नालायक हूँ तो भी उस का फ़र्ज़न्द हूँ वो बाप की तरह छड़ी से हमको तादीब देता है और अगर ऐसा ना होता तो हाकिम की मानिंद तलवार से हमको मार डालता। पस मैं अपने बाप के पास जाऊँगा और ये जान कर कि वो जो करता है सो रास्ती से करता है उस की छड़ी को चूमूँगा और उस की हर एक मार को बरकत जानूँगा। ऐ मेरे बाप अपने फ़र्ज़न्द का सर अपनी गोद में ले अपने प्यार की निस्बत मुझे यकीन करा और मेरी मदद कर कि मैं वाजिब तौर पर तादीब पाऊँ ऐ खुदावन्द तम्बीह दे पर अंदाज़े से अपने क़हर से नहीं ना हो कि तू मुझे नेस्त दे।

“मैं जितनो को प्यार करता हूँ उन्हें मलामत और तम्बीह करता हूँ। इस वास्ते सरगर्म हो और तौबा करो।” (मुकाशफ़ा 3:19)

## रहम की तर्बियत

“यहोवा पर अपना बोझ डाल दे और वो तेरी परवरिश करेगा वो सादिक़ को अबद तक टलने ना देगा।” (ज़बूर 55:22)

जिस्मानी मुसीबतें अक्सर रूह को तकलीफ़ देती हैं। ये तकलीफ़ हर तरफ़ से होती है वो हम पर पड़ती है और हम इस को रोक नहीं सकते पर एक काम कर सकते हैं। यानी कह सकते हैं कि हमारा एक बार बर्दार (बोझ उठाने वाला) है जो उन्हें उठाता है क्योंकि उस ने हमारी मशक्कतें ले लीं। और हमारे ग़मों का बोझ उठा लिया बल्कि हमारे गुनाहों को अपने बदन पर उठा के सलीब पर चढ़ गया उस ने इसलिए हमारे गुनाह का इल्ज़ाम और सज़ा उठा लिया कि हमको उन्हें उठाना ना पड़े वो ग़मगीं हुआ ताकि हम खुश रहें वो रंज के तले दब गया ताकि हम उठ कर कामिल खुशी का मज़ा चखें और अभी जब वो देखता है कि हमारे फ़िक्र व रंज व मुसीबत का कैसा भारी बोझ है तो बड़े प्यार से कहता है कि अपना बोझ मुझ पर डाल दे मैं उस को उठा लूँगा। मेरी ताक़त तेरी ताक़त से ज़्यादा है। ऐ भाई तेरा कैसा अच्छा शफ़ी है जो तुझको बोझ उठाना नहीं पड़ता तू जान नहीं सकता कि मैं कैसा कमज़ोर हूँ और वो क्या है ज़ोर-आवर मैं कुछ नहीं हूँ और वो सब कुछ है वो तेरा सब बोझ लिया चाहता है और उस का आर्ज़ुमंद है कि तो खुश हो वो ना फ़क़त तेरे बोझ को बल्कि तुझको भी उठा लेगा। और अपने अबदी

बाजू तेरे नीचे रखकर तुझे समझा लेगा। और आखिरकार अपने हुजूर में पहुंचा देगा अपना हाल का बोझ कितना ही बड़ा क्यों ना हो ईसा के पास लेजा मबादा वो तेरे लिए भारी हो जाये और तू ये सोचने लगे कि मेरा भरोसा बातिल है, अगर तू अपना सारा बोझ ईसा पर डाल देगा। तो वो सिर्फ उठा लेगा बल्कि तू मसीह को अज़ीज़ और प्यारा समझने लगेगा।

“तंगी के दिन मुझे पुकार मैं तुझे छुड़ाऊंगा और तू मेरा जलाल ज़ाहिर करेगा।” (ज़बूर 50:15)

## आहज़ारी

“क्योंकि हम तो जब तक इस खेमा में हैं बोझ से दब कर आहें खींचते हैं।”  
(2 कुरिन्थियों 5:4)

रूह की बूदो-बाश के लिए बदन एक परेशान मकान है पेशतर वो इमारत शरीफ़ था। अब ना पाएदार खेमा जिसकी फ़ज़ीलत थोड़ी और जिसमें हर तरह की तकलीफ़ व एज़ा दाखिल हो गई हैं बदन दुख की जगह और आजमाईश का वसीला है और हमारी रूहानी दौड़ में अक्सर हमको रोकता है इस जिस्मानी खेमे में रह के हम दो अस्बाब (सबकी जमा) से यानी अपने दुख और अपनी हाजत के सबब से भी आहें खींचते हैं और तादम-ए-मर्ग (मरते दम तक) हमें आह-ज़ारी करनी पड़ेगी। अपनी नफिसा नीयत और दुनिया परस्ती और शहवत और ग़फलत और अंधेरेपन और बेईमान के सबब से हमको आहें करना होगा। हम आज़ादगी और पाकीज़गी और कामिल और बिला फ़ासिला सलामती के हासिल करने के लिए आहें खींचते हैं हम तो अभी आह-ज़ारी करते हैं और जब तक ज़िंदगी मौत को निगल ना जाये यही करते रहेंगे। हम आहें खींचते मौत तक पहुँचेंगे। लेकिन उस वक़्त से आह व नाला का अंजाम होगा। क्योंकि जो मसीह के हैं उस के हुजूर में गाते हुए आएँगे और अबदी सरवर उन के सुरों पर होगा। वो खुशी और शादमानी हासिल करेंगे। और ग़म और आह-ए-सर्द भागेगी। मेरे भाई क्या तेरा बदन दुखता रहता है और तुझको आराम नहीं किया तू बदन में गिरफ़्तार हो के आज़ाद हुआ चाहता है खड़े हो के अपना सर उठा इसलिए कि तेरा छुटकारा नज़दीक है जल्दी रोज़-ए-

हश् के पौ फटेगी और उसी वक्त खुदा की कलीसिया की आखिरी आहो-ज़ारी (अफ़सोस व ग़म) खुशी व शादमानी का सरोद (गीत) हो जाएगी। ईसा आता है और जब वो नज़र आएगा। तब दुनिया का छुटकारा होगा। तब सारी जंजीरें आज़ा पर से गिर जाएँगी। कैदखाने के दरवाज़े खुल जाएँगे। दुखी अपने दुख से फ़र्सत पाएँगे। हर तरह की तकलीफ़ व बीमारी जाती रहेगी। और हमारा ये ख़ेमा सा घर बदल के खुदा की कुद्रत व फ़ज़ल से एक आलीशान इमारत हो जाएगी। जिसमें ता-अबद गुनाह का नामोनिशान पाया ना जाएगा।

“हम भी जिन्हें रूह के पहले फल मिले अपने में कराहते हैं और लेपालक होने की यानी अपने जिस्मों की रिहाई की राह तकते रहते हैं।”

(रोमियों 8:23)

## ईमानदार की फ़र्याद

“आह मैं तो सख्त मुसीबत में हूँ। इस मौत के बदन से मुझे कौन छुड़ाएगा।” (रोमियों 7:24)

ईसाई ना सिर्फ़ ज़ाहिरी बल्कि अंदरूनी मुसीबतों में मुब्तला हैं और दिली मुसीबतें सबसे भारी और सख्त हैं हर एक ईमानदार का ये तजुर्बा है कि जब मैं नेकी क्या चाहता हूँ तो बदी मेरे पास मौजूद होती है और ये कि मेरे आज़ा में शरीअत है जो मेरी अक्ल की शरीअत से लड़ती है और पौलुस की मानिंद हर एक ईसाई को ये कहना पड़ता है कि “आह ! मैं तो सख्त मुसीबत में हूँ इस मौत के बदन से मुझे कौन छुड़ाएगा।” एक ही दिल में गुनाह की पुरानी और फ़ज़ल की नई इन्सानियत हस्ती है। और उन के दर्मियान बराबर लड़ाई रहती पुरानी इन्सानियत से शहवतें और मस्तिखाँ और हर तरह की बुरी खसलतें निकलती हैं और नई इन्सानियत से पाक आरजूएँ और रूहानी ख्वाहिशें और आस्मानी मुहब्बतें और पाक होने के इश्तियाक़ पैदा होते हैं। जिस्म चालाक है और हमारे सारे आमालों को बिगाड़ना चाहता है। रूह-ए-पाक भी मुस्तइद हो के हमको जिस्म के जोर व ज़बर्दस्ती से बचाता है नेकी करने की ख्वाहिश है। ताहम बदी व बुराई मौजूद है।

चुनान्चे गुनाह जो मौत का बदन कहलाता है हम को रोक देना और हमारी खुशी को खराब करता है। दिल में गोया दो फ़ौजें हैं जो आपस में लड़ा करती हैं। और बड़ा ताज्जुब ये है कि ईमानदार जब अपने को फ़ल्हयाब समझ कर लड़ाई से बाज़ रहता है। तब वो ज़्यादा खतरे में पड़ जाता है। काश कि हम सभी को फ़ज़ल इनायत होता कि हम इस पुरानी इन्सानियत को उतारें और नई इन्सानियत को जो खुदा के मुवाफ़िक़ रास्तबाज़ी और हकीकी पाकीज़गी में पैदा हुई पहनें शुक्र खुदा का कि जल्दी ये लड़ाई खत्म होगी। जल्दी हमारी पाकीज़गी कामिल होगी। तब हमारी सआदत भी कामिल होगी चाहिए कि पुरानी इन्सानियत मर जाये बल्कि वो अभी मौत के फ़त्वे के तले है और ये कि नई इन्सानियत सलतनत करे वो क्या ख़ूब कि ईमानदार को गुनाह से अबदी आज़ादगी का इन्तिज़ार है।

“जिस्म की ख़्वाहिश रूह के मुखालिफ़ है और रूह की ख़्वाहिश जिस्म के मुखालिफ़ है और ये आपस में बरखिलाफ़ हैं यहां तक कि जो कुछ तुम चाहते हो सो कर नहीं सकते हो।” (ग़लतियों 5:17)

## दुआ

“ऐ यहोवा मुझ पर रहम कर क्योंकि मुझ पर तंगी है।” (ज़बूर 31:9)

खुदा से दुआ करने की इजाज़त एक बड़ी नेअमत है, खुसूसुन मुसीबत के दिन वो निहायत दिलचस्प व मुफ़ीद है। जो हमको ये इजाज़त ना मिलती तो हम कुछ ना कर सकते जब हम लोगों के दिल रंज से भर जाते या हमारे बदन बीमारी से ज़ड़फ़ (कमज़ोर) हो जाते या हम मुफ़लिसी (गुर्बत) में पड़ जाते या हमारे अज़ीज़ गुज़र जाते हैं। तब अगर दुआ ना कर सकते तो क्या ही हैरान व परेशान होते, लेकिन बड़ी तस्कीन इस से हुई कि जिस वक़्त खुदा के हुज़ूर में हमने अपनी अर्ज़ की तब उस ने हमारी फ़र्याद सुन ली और हमको बड़ी तसल्ली और खुशवक़ती हासिल हुई। ऐ ईसाई भाई अपने सब दुख और रंज में खुदा के रहम पर तकिया कर उस की रहमत अबदी है बल्कि माँ की मुहब्बत हर-चंद कि लासानी (जिस जैसा कोई दूसरा ना हो) है। ताहम खुदा की मुहब्बत की मानिंद नहीं हो सकती। वो तेरी सुनेगा और तेरे साथ हम्दर्द होगा। और उस की

मेहरबानी व फ़ज़ल से जो मुसीबतें और बोझ हैं वही बड़े फ़ायदे के बाइस होंगे। कितनों के तजुर्बे में ये बात सच्य ठहरी है कि वो अपनी तंगी में यहोवा को पुकारे उस ने उनकी सख्त मुसीबतों से उन्हें रिहाई बख़्शी गर्ज़ ऐ भाइयो दुआ करते रहो और अगरचे जिस कद्र तुम्हारी दुआएँ बढ़ती उसी कद्र तुम्हारी मुसीबतें भी बढ़ती जाती हैं। लेकिन तो भी साबित क़दम रहो और आखिर को तुम ग़ालिब होगे। अपने लोगों की दुआएं कुबूल करने में ख़ुदा इन्कार ना करेगा। बल्कि उन्हें कुबूल कर के चैन और तसल्ली बख़्शेगा। वो अपना वाअदे कर चुका है। और उसे फ़रामोश ना करेगा। उस के दिल में मुहब्बत है और उस मुहब्बत की तासीर बढ़ती रहेगी। उस का ख़ज़ाना मामूर व नामहसूर है घबराओ मत वो तुम्हारी दुआ की आवाज़ सुनके यक़ीनन तुम पर रहम फ़रमाएगा। बल्कि सुनते ही तुमको जवाब देगा।

“ऐ यहोवा तू अपने नाम के वास्ता मुझे जिलाएगा। तू अपनी सदाक़त के साथ मेरी जान को तंगी से निकालेगा।” (ज़बूर 143 बाब)

## मुसीबत का ईलाज

“कोई हम में से अपने वास्ते नहीं जीता।” (रोमियों 14:7)

आज़मूदा ईसाई के लिए ये बेहतर है कि वो अपनी मुसीबतों और तक़लीफ़ों पर निगाह ना करे। मुसीबतें इसलिए ख़ुदा की तरफ़ से भेजी गई कि वो ईमानदार को राह-ए-रास्त पर चलाएँ। चुनान्चे अक्सर मुसीबत-जदों को ख़ुदा की ख़िदमत में मुस्तइद होने से बड़ी तस्कीन और खातिर जमुई (तसल्ली) हुई है। पस ऐ अज़ीज़ो जो तुम पर दुख और मुसीबत आ गई हो तो बीमारों के पास जा के उन्हें ईसा की मेहरबानी का बयान करो बेवाओं से मुलाक़ात करो और उनकी फ़र्याद सुन के उनको तसल्ली दो। यतीमों को उनके आस्मानी बाप की तरफ़ रहनुमाई करो। कंगालों की हाजत रफ़ा करो बल्कि अपने पर नहीं बल्कि बरअक्स इस के औरों की मुसीबतों और एहतियाज़ों पर निगाह करो और उन के रंज व तक़लीफ़ के रफ़ा करने में मशगूल हो जो औरों को बरकतें देता है। वो बरकतें पाता है। अपने शफ़ी के लिए मुस्तइद रहो और इस से तुम तसल्ली पाओगे। जो अपनी मुसीबत पर नज़र करता उस की मुसीबत ज़्यादा हो जाएगी और जो ये चाहता है कि

अपने दुख से आराम पाए उसे चाहिए कि मसीह की खिदमत में मशगूल रहे। जैसा कि घर में पड़े रहने से कोई सुस्त व नातवां हो जाता है लेकिन बाहर जा कर ताज़ी हवा उसे बहाल करती है। वैसा ही जो अपने दुख और मुसीबत पर सोचता रहता वो गमगीं व दिल-गीर हो जाता है लेकिन जो औरों की भलाई के लिए मुस्तइद है वो अपने को भूल जाता है और कुव्वत इलाही पाके सँभाला जाता है। गर्ज़ चाहिए कि जिस वक़्त तुम खुदा के वाअदे पर तकिया करते हो उसी वक़्त उस की खिदमत में भी चुस्त व चालाक हो, क्योंकि ना सिर्फ़ जिस्मानी बल्कि रूहानी तौर से भी ये बात सच्च ठहरती है वो जो मुस्ती से काम करता है कंगाल हो जाएगा मगर चालाकों के हाथ दौलत पैदा करते हैं।

“और वो सब के वास्ते मुआ कि जो जीते हैं सो आगे को अपने लिए ना जियें बल्कि उस के लिए जो उस के वास्ते मुआ और फिर जी उठा।”

(2 कुरिन्थियों 5:15)

## खुदा का हमारे लिए हम्दर्द होना

“उन की कुल मुखालिफ़त में वो मुखालिफ़ ना था। और उस की हुज़ूर के फ़रिश्ते ने उन्हें बच्चा या अपनी मुहब्बत में और अपने हुलुम में उसी ने उन्हें खल्लासी बख़्शी और उस ने उन्हें उठाया और सारे क़दीम अय्याम में उन्हें ले गया।” (यसअयाह 63:9)

क्या ख़ूब ये है कि हमारी तकलीफों में कोई दूसरा भी हम्दर्द हो मगर जो हम्दर्दी इन्सान करता है वो अक्सर ला-हासिल है कभी-कभी जब कोई शख्स रंज में पड़ता हो तो अगरचे दोस्तों की मुलाक़ात और गुफ़्तगु बहुत तस्कीन देती है। लेकिन आराम पायदार नहीं देती। कोई कितना ही अज़ीज़ क्यों ना हो लेकिन जब वो दुख में पड़े तो अक्सर उस की मदद करने के लिए हमारी मुहब्बत बेकार है, मगर जिस दुखी और मुसीबतज़दा को खुदा प्यार करता है उस की वो मदद कर सकता है क्योंकि उस का बाजू कादिर और उस की हिकमतें बेशुमार हैं पर अजब बात ये है कि कीड़ी की दर्दों में बार तआला हम्दर्द है। ये कलाम मुक़द्दस की गवाई है इस में निहायत दिलसोज़ी व मुहब्बत ज़ाहिर है कि

बनी-इस्राईल ने अजनबी माबूदों को अपने दर्मियान से दूर किया और खुदावन्द की बंदगी करने लगे। तब उस का जी इस्राईल की परेशानी से मलूल हुआ और क्या ही लुत्फ नफीस इस बात में दिखलाई देता है कि खुदा फ़रमाता है, कि “जो कोई तुम को छूता है सो मेरी आँख की पुतली को छूता है।” ऐ आज़मूदा हम-राही जब तेरी रूह ऊंची नीची और तेरी ताकत कम और तेरा दिल ग़मगी और तेरी आँहें भारी हों तब याद कर कि खुदा तेरे सब दर्दों में हम्दर्द होता है। उस की आँखें देखती हैं। और उस के कान सुनते हैं। और उस का दिल दर्द-मंदी से भरता है। चुनान्चे लिखा है कि “जैसा बाप बेटों पर रहम करता है। वैसा ही यहोवा अपने डरने वालों पर रहम करता है।” क्योंकि वही हमारी साखत को जानता है याद रखता है कि हम मिट्टी हैं अगर तू उस पर भरोसा रखे तो ग़मगी ना होगा। अगर उस को यकीन जानता है तो ना कुड़-कूड़ाएगा। खुदा के कलाम पर एतबार रखकर खुशी से अपनी राह पर चला कर उस के सिवा तुझे और क्या दरकार है। खुदा तेरा बाप है बल्कि ऐसा बाप कि तुझे अज़ीज़ फ़र्ज़न्द जान कर तेरे सारे दुख और दर्द में हम्दर्दी करता है और करता रहेगा। यकीनन इस से तुझको तस्कीन और खुशी पैदा होगी।

“क्योंकि हमारा सरदार काहिन ऐसा नहीं जो हमारी सुस्तियों में हम्दर्द ना हो सके बल्कि गुनाह के सिवा सारी बातों में हमारी मानिंद आज़माया गया।”

(इब्रानियों 4:15)

## तवक्कुल

“अगर मैं तंगी के दर्मियान चलूँ तो तू मुझे ज़िंदा रखेगा।” (ज़बूर 138:7)

बाअज़ ईसाई खासतौर से आज़माए जाते हैं। मुसीबतें उन्हें घेरती हैं और कहीं उन को फ़र्सत नहीं मिलती दुनिया की तरफ़ से उनका काम और ख़ानदान में उन के फ़रज़ंदह और कलीसिया में उन के शरीक उन को आज़माते हैं। इस के सिवा वो दिली आराम नहीं पाते बल्कि बरअक्स इस के शैतान उन के दिल में दखल पाता है और वो डोरते और पसो पेश करते हैं। उन्हें आगे चलना पड़ता लेकिन वो किस तरह आगे जा सकते ग़ैर लोग यानी वो जो ईमानदारों की उम्मीद से नावाक़िफ़ हैं ताज्जुब करते हैं कि ये कैसी बर्दाश्त और कैसी पाएदारी है, लेकिन ईमानदार के पास एक भेद है जो उन की समझ से



बाहर है। यानी ये कि खुदा आजमाए हुआओं को बहाल करता है। उस का कलाम उस की मानिंद जो घास पर गिर के उस को तरो-ताज़ा करती उन के दिलों को ज़िंदा करती है फिर रूह-ए-पाक उन के दिलों पर असर करता है और उन्हें ज़िंदगी बख़्शता है। फिर ईसा जो सदाक़त का आफ़ताब है उन पर ज़ाहिर होता है और तारीकी की जगह में रोशनी की जगह में रोशनी चमकती है फिर दुआ करने में उन को बड़ी तसल्ली पैदा होती है और खुदा की सोहबत में वो अपनी मुसीबतों को भूल जाते हैं पर खुदा के घर जा के और उस का कलाम सुन के और उस की हम्द व तारीफ़ कर के वो अपने रूहानी सफ़र के लिए ताक़त हासिल करते हैं। ये औकात जब खुदा खुशक रूह को तरो ताज़ो करता है क्या खुश व ख़ुर्रम हैं तब ईमान नई ताक़त से खुदा के वादों को पकड़ता है। और उम्मीद आने वाले आराम को ताकती है और मुहब्बत हक़ तआला की सिफ़त में खुश होती है। काश कि अक्सर मेरी रूह को ऐसा वक़्त मुबारक मिला करे तूने ऐ मेरे खुदा वाअदा किया है कि मैं इस्राईल के लिए उस की मानिंद हूँगा। वो सोसन की तरह फूलेगा। रोज़ बरोज़ ऐ मेरे खुदा मेरे दिल में ये वाअदा पूरा कर।

“जब हम जाएंगे हाँ खुदावन्द के पहचानने के लिए हम पैरवी करेंगे। सुबह की मानिंद उस का खुरुज़ मुकर्रर है। और बरसात की मानिंद हमारे लिए उस की आमद होगी पिछले मेह की मानिंद जो ज़मीन को तर करता है।”

(होसेअ 6:3)

## ग़र्ज़-ए-इलाही

“जब वो जो हमारे जिस्मानी बाप थे तम्बीह करते थे। और हमने उन की ताज़ीम की तो क्या हम इस से ज़्यादा रूहों के बाप के हुक्म में ना रहें और जिँ कि वो थोड़े दिनों के वास्ते अपनी समझ के मुवाफ़िक़ तम्बीह करते थे। पर वो हमारी बेहतरी के लिए ताकि हम उस की पाकीज़गी में शरीक हों।” (इब्रानियों 12:9-10)

ऐ ईमानदार अगर तू मुसीबतजदा है और दुख और रंज की सारी मौजें तुझ पर से गुजर गई हैं तो जरूर इस में कुछ गर्ज है क्या तू ने उस को दर्याफ्त किया और नहीं तो दर्याफ्त करना चाहिए। मुझे खुदा क्यों आजमाता है? क्या वो मुझसे नफरत रखता है? नहीं। क्या वो क्रहर नाक है? नहीं। क्योंकि उस ने कसम खाई कि अपने लोगों पर क्रहर ना करूंगा। तो फिर क्या सबब है? सबब ये है कि खुदा का ये इरादा है कि तू पाक हो। जैसा वो पाक है वो तुझे गोया जिस्मानी ख्वाहिशों और खुशियों से खींचेंगे तेरी सोच और खसलतें और सारी उम्मीदें अपनी तरफ ले जाना चाहता है वो तुझी में उन चीजों से जो तुझको आलूदा करती हैं। अलग कर के तुझे साफ़ और आरास्ता किया चाहता है ताकि तू उस के जलाल को ज़ाहिर करता रहे तूने दुआ मांगी कि ऐ खुदा मुझे पाक कर खुदा ने तेरी सुनी और तेरी दुआ कुबूल भी की अपने सुलूक के वसीले से जो अभी तेरे साथ करता है। वो तुझे सुधार के तैयार करेगा। ताकि तू ज़मीन पर उस का जलाल ज़ाहिर करे और आखिरकार मुक़द्दसों के साथ आस्मान पर मीरास पाए। वो रहम से मामूर है और जब उस का इरादा अंजाम तक पहुंचेगा। तो तुझे इकरार करना पड़ेगा कि मेरी सारी मुसीबतें और तकलीफें हिक्मत व मुहब्बत-ए-इलाही से मुकर्रर हुईं। पस खुदा का ताबे रह उस की तम्बीह बेउज़ (बहाने के बगैर) कुबूल कर और उस के सुलूक से जो वो तेरे साथ करता है इन्कार कर वो तुझे फ़र्ज़न्द जान कर तेरी भलाई के लिए तम्बीह देता है और क्या मेहरबानी की बात ये है कि जिस कद्र वो तुझ पर बोझ डालता है। उसी कद्र तुझे ताक़त बख़्शता है कि तू अपना बोझ उठा सके। वो तुझे रहम का बर्तन जो उसी हश्मत के लिए उसी से मुकर्रर किया है बनाएगा और आकिबत में तू उस का इसलिए शुक्र करेगा कि ज़िंदगी में तूने मेरी तर्बियत की और मुझे चंगा किया।

“वो मशरिकी हवा के दिन अपनी सख्त आंधी से उसे दूर कर देता है उसलिये इस तम्बीह के वसीले से याक़ब की बदी का कफ़ारा दिया जाएगा।” (यसअयाह 27:8-9)

## मुहासिबा

“मेरी समझ में ज़माना हाल के दुख दर्द इस लायक़ नहीं कि उस जलाल के जो हम पर ज़ाहिर होने वाला है मुक़ाबिल हों।” (रोमियों 8:18)

ईसाइयों के दुख और मुसीबतें अक्सर सख्त और दराज़ हैं। लेकिन वो कितना ही दुशवार हों ताहम इस लायक नहीं कि आने वाले जलाल के मुक़ाबिल हों इस ज़िंदगी में हर एक ईसाई काबिल तर्बियत है। वो उस लड़के की मानिंद है जो मीरास का उम्मीदवार हो के इस उम्मीद के मुताबिक़ कोशिश में रहता है जो तर्बियत वो पाता है। वो अगरचे दर्द अंगेज़ हो मगर इस का नतीजा बरकत आमेज़ होगा। तर्बियत जो दी जाती सो आक्रिबत (आखिरत) में फल लाती है। बल्कि अबदी और बहारे जलाल खुदा ने अपने प्यार करने वालों के लिए वो चीज़ें तैयार कीं। जो ना आँखों ने देखीं ना कानों ने सुनीं और ना दिल में आईं। बदन के लिए ऐसा जलाल होगा। जैसा उस वक़्त ईसा के चेहरे से ज़ाहिर हुआ जब पहाड़ पर उस की सूरत बदल गई। ईसा के लिए भी आइन्दा को एक जलाल होगा और ये इल्म व पाकीज़गी के काम हासिल करने और मसीह से मुशाबेह होने खुदा पर लो लगाए रहने से इलाका रखता है। तब रास्तबाज़ अपने बाप की बादशाहत में आफ़ताब की मानिंद नूरानी होंगे। लेकिन वो जलाल जो हम पर ज़ाहिर होने वाला है बयान से और समझ से बाहर है। चुनान्चे यूहन्ना कहता है कि “प्यारो अब हम खुदा के फ़र्ज़न्द हैं और ये तो अबद तक ज़ाहिर नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे। पर हम जानते हैं कि जब वो ज़ाहिर होगा। हम उस की मानिंद होंगे।” क्योंकि हम जैसा वो है वैसा ही देखेंगे तुझे तसल्ली और खुश-वक़ती पैदा हो तेरे लिए जलाल तैयार है और तुझ पर ज़ाहिर होगा। और तेरी अब की मुसीबतें इस लायक नहीं कि उस जलाल के जो तुझ पर ज़ाहिर होने वाला है मुक़ाबिल हों।

“जब मसीह जो तुम्हारी ज़िंदगी है ज़ाहिर होगा। उस के साथ तुम भी जलाल में ज़ाहिर हो जाओगे।” (कुलस्सियों 3:4)

## खुदा का इरादा

**“मेरी मस्लिहत कायम रहेगी और मैं अपनी सारी मर्ज़ी पूरी करूँगा।”**

**(यसअयाह 46:10)**

खुदा बे इरादा कभी कुछ नहीं करता उस के इरादे मुस्तकीम हैं। और सब अंजाम तक पहुंचते हैं उन के रोकने की ख्वाहिश करना बेफ़ाइदा बल्कि गुनाह है जो गुनेहगार

उन को रोके उस को सज़ा मिलेगी। और अगर कोई ईमानदार रोकने चाहे तो तम्बीह पाएगा चाहिए कि हम हमेशा खुदा पर भरोसा रखें। लिखा है कि आदमी के दिल में बहुतेरे मंसूबे हैं पर फ़क़त खुदावन्द का मन्सूबा कायम रहेगा। उस ने कसम खाई है कि मेरे सारे इरादे पूरे होंगे। वो जैसा चाहता है वैसा आस्मान के लश्करों और ज़मीन के दर्मियान काम करता है और कोई नहीं जो उस के हाथ को पकड़ सके और उसे कहे कि तू क्या करता है। ऐ ईमानदार खुदावन्द तुझमें और तेरी रूहानी खुश-वक्ती में मसरूर है। जो चीज़ तेरी दीनदारी और तेरी हकीकी खुशी व तसल्ली को बढ़ाती है। वही उस को पसंद है चुनान्चे हवारी कहता है, कि हमारी पल-भर की हल्की मुसीबत क्या है बेनिहायत और अबदी भारी जलाल हमारे लिए पैदा करती रहती है तू ने खुदा के लोगों की मुसीबतों पर ताज्जुब किया होगा। क्या तू अभी तक उन पर ताज्जुब करता रहता है वो हकीकतन इसलिए भेजे जाते हैं कि उनके सबब से मुक़द्दसों का ताज ज़्यादा रौनकदार और जूलजलाल हो लाज़िम है कि हम अपनी मुसीबतों को खास बरकतें जानें चाहिए कि हम दुआ मांगें कि हमारी सारी मुसीबतें हम पर ये तासीर करें कि हम अपने खालिक से ना लड़ें और उस की दानाई पर इल्ज़ाम ना रखें और उस की मुहब्बत को रुस्वा ना करें। ये शुक्र का बाइस है ग़म का नहीं कि खुदा की मस्लिहत कायम रहेगी। और उस की सारी सिफ़ात ग़ैर-मुतबद्दल (लातब्दील) हैं। मुहब्बत के खुदा की तरफ़ से उस के फ़रज़न्दों की निस्बत सिर्फ़ मुहब्बत आमेज़ मस्लिहत निकल सकती है। ऐ खुदा हमारे दिलों में नेकी की सब खुशी और ईमान के काम को कुद्रत से पूरा कर।

“यहोवा की मस्लिहत अबद तक कायम रहेगी उस के दिल के मंसूबे पुश्त दर पुश्त।” (ज़बूर 33:11)

## खुदा की मर्ज़ी

“तेरी मर्ज़ी जैसी आस्मान पर है ज़मीन पर भी बर आए।” (मती 6:10)

बिलाशक व शुब्हा खुदा की मर्ज़ी दानाई व पाकी से भरी है वो हमसे सिर्फ वही बातें चाहता है जो उस की मुहब्बत और दानाई से हैं जो सुलूक वो हमारे साथ करता है उस का ये नतीजा है कि हम पाक बनें। पहले वो अपना जलाल ज़ाहिर करता तब हमारी

अब की और आक्रिबत की भलाई कराना चाहता है और इन दोनों इरादों में कुछ इख्तिलाफ नहीं। लिहाज़ा हिक्मत की ये राय है कि हम खुदा की मर्ज़ी को पूरा करने की ख्वाहिश रखें जो हमारी मर्ज़ी और खुदा की और तो हम क्योंकर खुश हों, चाहिए कि हम छोटे बच्चे हों यानी पहले दर्याफ्त करें कि हमारे बाप की क्या मर्ज़ी है तब उस मर्ज़ी से खुश रहें। चाहे उस की ये मर्ज़ी हो कि हमको तंगहाली हो या खुशहाली चाहे बीमारी या तंदरुस्ती चाहे दुख या चैन चाहे मौत चाहे ज़िंदगी हर हाल में हम रज़ामंद रहे। बल्कि खुशी करें ऐ खुदावन्द रूह-ए-पाक को भेज कि वो मेरी मर्ज़ी तेरी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ करे और मेरी ऐसी हिदायत करे कि आइन्दा को खुदा की मर्ज़ी से बखूबी वाफ़िक़ हो के उस को बजा लाया करूँ और उसी के मुवाफ़िक़ अपनी सारी ज़िंदगी को गुज़ारूँ तू मेरी खुश-वक़्त की को चाहता है लेकिन जब तक मेरी मर्ज़ी तेरी मर्ज़ी के खिलाफ़ हो मैं खुश-वक़्त हो नहीं सकता तू मेरी मदद कर कि मैं अपनी मर्ज़ी को छोड़ दूँ और सिर्फ़ ये चाहूँ कि खुदा जो चाहे सो करे काश कि मैं पाकीज़गी के उस मर्तबे तक पहुँचूँ कि तेरी मानिंद कहता रहूँ कि मेरी मर्ज़ी नहीं बल्कि तेरी मर्ज़ी हो।

“ऐ मेरे बाप अगर हो सके तो ये पियाला मुझसे गुज़र जाये तो भी मेरी ख्वाहिश नहीं बल्कि तेरी ख्वाहिश के मुवाफ़िक़ हो।” (मत्ती 26:39)

## मसीह हमारा पेशवा

“वो अनदेखे को गोया देख के मज़बूत बना रहा।” (इब्रानियों 11:27)

मूसा को अक्सर दुख और मुसीबत सहना पड़ा लेकिन इस में कुछ ताज्जुब नहीं क्योंकि खुदा के सब लोगों का यही हाल है। उन के मुखालिफ़ यानी दुनिया और शैतान बंदिश कर रहे हैं। बाअज़ वक़्त उन के पड़ोसी उन को सताते हैं, जैसा कि इस्राईल का हाल मिस्र में हुआ कभी-कभी दुनिया के ब्याबान में हो के वो तरह-तरह के इम्तहानों में फंस जाते हैं। और कलीसिया भी वो दुख और तकलीफ़ से आज़ाद नहीं हैं पर मूसा मज़बूत बना रहा बावजूद ये कि तकलीफ़ें और मुश्किलात थीं तो भी वो साबित-क़दम रहा और मगरूर और ज़ालिम बादशाह से भी ना डरा इस का सबब ये था कि वो अनदेखे खुदा के ज़हूर से आगाह था। वो अपनी नज़र खुदा तआला पर रखता था। बादशाह के

गुस्से से नहीं बल्कि वो खुदा से डरता था और उस की मेहरबानी का तालिब था और उस से बरकत पा के खुश रहा। जो खुदा हमारे साथ हो तो खैर और नहीं तो हमारी मुसीबतें बढ़ती जाएँगी। खुदा हमारे साथ है अगरचे वो गैर मुरई (वो जो नज़र ना आए) है। लेकिन मौजूद है हम दुख की हालत में ईमान की नज़र से अपने आस्मानी बाप को देख सकते हैं वो हमें सँभालता है और हम अपने पेशवा ईसा पर निगाह रख के मुसीबतों को सह सकते हैं। उस ने उस खुशी के लिए जो उस के सामने थी। शर्मिंदगी को नाचीज़ जान के हमारा ऊज़ी हो कर सलीब को सहा और रूह-उल-कुद्स पर तकिया कर के तकलीफ़ उठाई वो क़ादिर हो के हाल व इस्तकबाल में हमको तसल्ली बख़शेगा। ऐ मुसीबतज़दा ईसाई अगरचे तू जिस्मानी आँख से खुदा को देख नहीं सकता ताहम वो तेरे साथ है अभी और हर-आन (हर लम्हा) वो तुझे सँभालता है और उस ने वाअदा किया कि मैं तुझे तर्क ना करूँगा। वो वफ़ादार है और अपने कलाम के मुवाफ़िक़ करता रहेगा। पस सब्र किए रह कि वो तेरी मदद करेगा। कुछ देर ना होगी कि वो नज़र आएगा और तुझे सारी मुसीबतों से रिहाई देगा। अपने चेहरा से तुझे मसरूर करेगा। हाल में दुख और तकलीफ़ हो तो हो पर दरिया-ए-मौत के पार हो के तुझे सलामती और खुश-वक्ती और सआदत अबदी होगी।

“मुबारक वो आदमी जो आज़माईश की बर्दाश्त करता है इस वास्ते कि जब उस की आज़माईश हो चुकी तो ज़िंदगी का ताज जिसका खुदा ने अपनी मुहब्बत रखने वालों से वादा किया है पाएगा।” (याक़ूब 1:12)

## मस्लिहत

“हम हर एक बोझ और उलझाने वाले गुनाह को उतार कर बर्दाश्त के साथ उस दौड़ में जो हमारे सामने आ पड़ी है दौड़ें और ईसा को जो ईमान का शुरू और कामिल करने वाला है ताकते रहें।” (इब्रानियों 12:1-2)

दुनिया एक मैदान है ज़िंदगी दौड़ और हर एक ईसाई दौड़ने वाला। दौड़ की हद पर निशान खड़ा है और ग़ालिबों को इनाम मिलेगा। इस दौड़ में तरह-तरह की रोक-टोक हैं और दौड़ने वालों पर बोझ लदा है, चाहिए कि हर तरह की रोक राह से अलग की जाये

और बोझ उतारा जाये। हम लोगों का उलझाने वाला गुनाह जो कुछ हो वही रोक है और उस को अलग करना और मसीह पर निगाह कर के उस दौड़ में जो हमारे सामने आ पड़ी है दौड़ना चाहिए। ईसा हमारे लिए नमूना है हम को उसी की पैरवी करनी चाहिए वो हमारा पेशवा है। चाहिए कि हम कदम-ब-कदम उस के पीछे चलें। वो हमारा बादशाह है और हमें उस का ताबे होना चाहिए। वो हमारा बार बर्दार और फ़िदया कार है। चाहिए कि उसी पर ईमान लाएं, माफ़ी के लिए उस का लहू और रास्तबाज़ी की वास्ते उस की सदाक़त और ताक़त देने के लिए उस का ज़ोर और हमारी सारी हाजतें रफ़ा करने की वास्ते उस की भर पूरी काफ़ी है। चाहिए कि उन्हीं पर तकिया (भरोसा) करें हर दम हर घड़ी हर रोज़ हम ईसा पर निगाह रखें ना-उम्मीदी के वक़्त वो हमको दिल-जमई बख़शेगा। विस्वास (ईमान, तवक्कुल) के वक़्त वो हमको दिलेर करेगा और जब ना-तवान हैं वो ज़ोर बख़शेगा और हमारे मरते वक़्त हमको ग़लबा देगा। चाहिए कि तेरी नज़र आख़िर ईसा पर हो वोह कहता है कि मेरी तरफ़ रुजू लाओ और नजात लो ऐ ज़मीन के किनारों के सारे रहने वालो कि मैं खुदा हूँ और मेरे सिवा कोई नहीं कोई उस की तरफ़ रुजू ला के महरूम ना रहा जैसा हर एक जो ब्याबान में पीतल के साँप पर निगाह करता रहा बच गया। वैसा ही सब जो मसीह की तरफ़ नज़र ईमान से देखेंगे। उसी से बच जाएंगे अपनी सारी इहितयाजों के रफ़ा करने और अपने सारे ख़ौफ़ों से हिफ़ाज़त पाने के लिए ईसा को ताक़ता रह अपनी आँख उसी पर लगाए रह ऐसा कर के तू दुनिया और शैतान पर ग़ालिब होगा रूहानी दौड़ के निशान तक पहुँचेंगे और हयात-ए-अबदी का ईमान हासिल करेगा।

“उन्हीं ने उस की तरफ़ देखा और रोशन हो गए और उन के चेहरे शर्मिदा हुए।” (ज़बूर 34:5)

## जाए-पनाह

“वो मुसीबत के रोज़ मुझे अपने साएबान में छुपाएगा अपने ख़ेमे की पोशीदगी में मुझे पोशीदा करेगा। मुझे चट्टानों की बुलंद पर रखेगा।”

(ज़बूर 27:5)

हर वक़्त उमूमन और खतरे के वक़्त खुसूसुन माँ बाप अपने बच्चे की हिफ़ाज़त की फ़िक्र करते हैं। इसी तरह ऐ ईमानदार तेरा बाप जो आस्मान पर है। तेरी मुसीबत और खतरे के वक़्त तेरे बचाने के लिए अंदेशा करता है। वो तुझ पर निगाह करके यहां तक तेरी हिफ़ाज़त करेगा कि तुझे अपने साएबान में छुपाएगा साएबान से खेमा शाहाना मुराद है जो फ़ौज के दर्मियान मशहूर बहादुर सिपाहियों से घिरा रहता है। उस में खुद बादशाह रहता है और वह जगह बहुत महफूज़ होती है। ऐ आज़मूदा ये तेरे लिए तसल्ली की बात है कि खुदा अपने साएबान में तुझे छुपाएगा। वहां तेरी सारी एहतियाजें रफ़ा होंगी। और तेरे ज़ख्मों के वास्ते बल्सान और तेरी मुसीबतों के लिए कामिल तस्कीन मिलेगी। बहुतेरे ईसाइयों को बरसों की दुनियावी खुश-वक़ती की बनिस्बत एक हफ़ते की मुसीबतों में ज़्यादा तसल्ली और खुदा के ज़हूर की रोशनी मिली है अपने साएबान में खुदा अपने आज़माए हुआँ के साथ सोहबत रखता है और उस का चेहरा उन पर जलवागर है। और वह सलामती पाते हैं। ऐ मुबारक खुदा मेरी मुसीबत के रोज़ मुझे अपने साएबान में छिपा अपने खेमे की पोशीदगी में मुझे पोशीदा रख और मुझे ये इनाम दे कि मैं उन की सआदत जिनकी ज़िंदगी मसीह के साथ खुदा में छिपी हुई है, पहचानूं। ऐ मेरी जान हर रंज व तकलीफ़ में अपने खुदा की तरफ़ रुजू कर उस के साथ हुज्जत कर के मिन्नत कर कि मेरी हिफ़ाज़त किया कर अपने पैरों के साये तले मुझे छिपा तब तुझको कहना पड़ेगा कि ऐ खुदा तेरी मेहरबानी क्या ही बेशकीमती है। और बनी-आदम तेरे पैरों के साये तले पनाह ले सकते हैं।

“ऐ खुदावन्द पुश्त दर पुश्त हमारी जाए-पनाह तू ही रहा है।” (ज़बूर 90:1)

## रफ़ीक़ अज़ीम

“वो मुझे पुकारेगा। और मैं उस की सुनूँगा। तंगी में मैं उस के साथ रहूँगा।  
मैं उसे छुड़ाऊँगा और उसे इज़ज़त बख्शूँगा।” (ज़बूर 91:15)

कभी-कभी ईमानदारों को ये खयाल होता है कि कोई हमारे साथ हम्ददी नहीं करता हमें अकेला अपना बोझ उठाना पड़ता है। कोई हमारी फ़िक्र नहीं करता शायद इस फ़र्याद की वजह ईसाई भाईयों की ग़फलत हो जो लोग अपने को अकेला जानते हैं उन



को ये सलाह दी जाती है कि ऐ भाइयो ! घबराओ मत ईसाइयों की सोहबत और दिल सोजी बहुत ही दिल पसंद है। इस में कुछ शक नहीं लेकिन तो भी तुम्हारे लिए ये सोहबत जरूर नहीं है याद करो कि खादिम की मुलाकात करने से खुदावंद की सोहबत कहीं बेहतर है और हर एक आजमाए हुऐ ईमानदार की निस्बत उस ने कहा है कि तंगी में मैं उस के साथ हूँ लेकिन इस को मत भूलियो कि सिर्फ ईमान से खुदावन्द का ज़हूर पहचाना जाएगा अक्सर ऐसा होता है कि जब ईमान की कमजोरी के सबब से उस की हुजूरी से खुशी हासिल नहीं होती है, लेकिन तो भी इस से तरह-तरह के फ़ायदे होते हैं अगर हमको खुशी ना मिले तो भी अपने वाअदे के मुताबिक़ वो अपने लोगों के साथ है। अगरचे हमारी बे-एतिक़ादी के बाइस उस की हुजूरी तसल्ली ना दे तो भी वो ताक़त देती है और हमें बुराई से बचाती है। ऐ खुदावन्द तू हमेशा अपने लोगों के साथ उन की मुसीबतों में रहा है अब भी उन के साथ रहता है। तो छः (6) मुसीबतों से उन्हें छुड़ाएगा, बल्कि सात (7) में से एक भी उनको जरूर ना पहुँचाएगी। तेरे कलाम के मुताबिक़ हम जानते हैं कि तेरा फ़ज़ल काफ़ी है और हमारे ज़माने के मुवाफ़िक़ हमारी कुव्वत है। हाल की मुसीबतों में हमारे साथ हो और हमारा ईमान इसलिए ज़्यादा कर कि हम तेरी हुजूरी से वाक़िफ़ हो कर तुझमें मसरूर हों हम चाहते हैं कि तेरी मुहब्बत दर्याफ़्त करें और तेरे चेहरे की रोशनी से रोशन हो जाएं, यहां तक कि मुसीबतों की आग में भी हम तेरा जलाल ज़ाहिर कर सकें। ऐ ईसा जैसा तू जलती भट्टी में तीन (इब्रानियों) के साथ रहा वैसा ही हर एक तापने वाली आग में जो आजमाने के लिए हम पर पड़ी हमारे साथ रह।

“ना डर क्योंकि मैंने तुझे ख़लासी बख़्शी है। मैंने तेरा नाम ले के तुझे बुलाया है। तू ही मेरा है जब तू पानियों में गुज़र करेगा तब मैं तेरे साथ हूँगा। और घरों में तब वो तुझे ना दबाएगी। जब तू आग में चलेगा तब तुझे आँच ना लगेगी और शोला तुझे ना जलाएगी।” (यसअयाह 43:1-2)

## हाल का आराम

“जिस दिल का तकिया (भरोसा) तुझ पर है तू उसे सही सलामत रखेगा।  
क्योंकि वो तेरा मुअतक़िद (अक़ीदतमंद) है।” (यसअयाह 26:3)

जो शख्स मुसीबत के दिन में खुदा ही पर तकिया (भरोसा) करता है। वो खुश-वक्त और साबित-कदम रहता है। खुदा का अहद ईमानदारों की जाए-पनाह है उस की तरफ हम दौड़ सकते और उसी से सलामती पा सकते हैं जो बावर करता है कि खुदा मेहरबान और रहीम है और नेकी और सच्चाई से मामूर और ये भी जानता है कि कादिर-ए-मुतलक का यह इरादा है कि उस की सिफात मज़कूरह मेरे तजुर्बे में ज़ाहिर हों वही तसल्ली पाएगा। और सारे हादिसों में कायम रहेगा। अगर कोई दिली आराम व सलामती चाहे तो चाहिए कि सारी मख्लूकात और वाकियात से नज़र फेर के बराबर खुदा ही पर जैसा वो मसीह में ज़ाहिर है निगाह रखे। चाहिए कि उस के दिल में ये खयाल पैदा हो कि यकीनन खुदा मुहब्बत है और ये भी ज़रूर है कि उस की सच्चाई और वफ़ादारी और बे-तब्दीली पर कामिल भरोसा रखे और तब हर तरह से सलामती होगी, लेकिन जिस वक्त खुदा को छोड़ के ईमानदार और किसी की तरफ़ देखेगा उसी वक्त घबराहट और अंदेशा दिल में पैदा होगा। पतरस जब समुंद्र पर चलता था, तो जब तक उस की नज़र ईसा पर लगी रही वो साबित-कदम रहा पर जब वो हवा का शोर सुनने और लहरें देखने लगा तब डूबने लगा। हमारा भी वही हाल है। पस चाहिए कि हम ताक़त मांगें ताकि हर वक्त खुदा पर भरोसा रखें और उसी पर तकिया किया करें ऐ मेहरबान ईसा तू ने अपना हाथ बढ़ा के डूबते हुए पतरस को बचाया हर वक्त तू हमें बचा और अपने दस्त (हाथ) अबदी हमेशा हमारे नीचे रख।

“मेरी उम्मत सलामती के मकान में और इम्तिहान की सुकूनत-गाहों और चैन की आराम-गाहों में रहेगी।” (यसअयाह 32:18)

## नज़र मुहब्बत

“खुदावन्द ने मेरा दुख देख लिया।” (पैदाइश 29:32)

जब खुदा ने लियाह को बेटा दिया तब औरत मज़कूर ने ये कहा कि खुदावन्द ने मेरा दुख देख लिया लावलदी (जिसकी कोई औलाद ना हो, बेऔलाद) उस की मुसीबत का बाइस थी। पर अब खुदा ने उस पर निगाह की और उसे बरकत दी खुदावन्द की कुद्रत की नज़र से बड़े-बड़े माजरे होते हैं। उसी के सबब से मिस्र के लोग घबराहट और तकलीफ़

से भर गए। और उसी से बनी-इस्राईल ने आराम और तसल्ली पाई। यहोवा की आँखें सादिकों की तरफ हैं और उस के कान उन की फ़र्याद की तरफ। ऐ दर्द-रसीदा ईसाई तेरी तरफ़ खुदा की आँखें लगी हैं वो तेरा सारा हाल पहचानता है। वो रास्तबाज़ों की तरफ़ से चश्मपोशी नहीं करता तू उस से छिप नहीं सकता उस की रहमत की आँख तुझको देखती है और उस की कुदरत का हाथ तेरी तरफ़ फैला है वो उस वक़्त भी तेरे दुख के हाल से बख़ूबी वाकिफ़ है और सिर्फ़ तेरी बेहतरी के लिए तेरी मदद करने में देर करता है चूँकि उस की आँखें तेरी तरफ़ हैं। चाहिए कि तेरी आँखें भी उस की तरफ़ लगी रहें और तेरी नज़र ईमान उस की नज़र रहमत से मिल जाये हों आँसूओं के साथ भी उस की तरफ़ निगाह कर और दाऊद की मानिंद कहता रह कि अपने नाम के आशिकों के हक़ के मुताबिक़ मेरी तरफ़ मुतवज्जोह हो और मुझ पर रहम कर याद कर कि जब ईसा ने अपने शागिर्द पतरस पर निगाह की तब वह शागिर्द पशेमान (शर्मिदा) और ताईब हुआ और जब इस्तीफान (इस्तिफ़नुस) पर ईसा मुतवज्जोह हुआ तो कामिल दिलेरी उस मज़्लूम में पैदा हुई। ईसा का नज़र करना तेरे ईमान को मज़बूत करेगा। और तेरी उम्मीद को तरो-ताज़ा बनाएगा। और तेरी हिम्मत को बढ़ाएगा। ऐ ईसा मैं ज़रूर याद रखूँ कि तेरी आँख मुझ पर लगी है और तू मेरी भलाई चाहता है और तेरी नज़र मुहब्बत से मैं खतरों और दुश्मनों से बच जाऊँगा।

“और खुदा ने बनी-इस्राईल पर नज़र की उन के हाल को मालूम किया।”

(खुरूज 2:25)

## बे-तब्दील दोस्ती

“वो छः मुसीबतों से मुझे छुड़ाएगा। बल्कि सात में से एक भी तुझको ज़रर ना पहुँचाएगी।” (अय्यूब 5:19)

ऐ अज़ीज़ो ! क्या खुदावन्द ने अक्सर औकात तुझको रिहाई नहीं दी क्या तू गवाही नहीं दे सकता कि सादिक चिल्लाए और यहोवा ने सुना और उन की सारी तंगियों से उनको रिहाई बख़शी अगली रिहाई आइन्दा की रिहाइयों का ज़ामिन है अगरचे मुसीबतें बार-बार होंगी। लेकिन रिहाइयां भी मुसलसल आयेंगी। सात (7) मर्तबा तक पहुंचना

कमालियत का निशान है और इस शुमार की इस्तिमाल से मालूम होता है कि खुदा हमें कामिल मखलिसी देगा और जहां तक मदद हमारे लिए दरकार हो मदद करता रहेगा। और ये सोचो कि जब उस ने हमको हमारी मुर्दा सी हालत से रिहाई दी और हमें ज़िंदा किया और अपने आपको हम पर ऐसा ज़ाहिर किया कि हम उस के मक़बूल हुए और अपने जलाल बढ़ाने के लिए हमें मख़सूस कर लिया तो क्या ये नाशुक्र की बात नहीं कि हम उस की वफ़ादारी पर शक लाएं और यकीन ना करें कि वो आखिर तक हमको बचाएगा। गुनाहगारों का बचाना उस के नज़दीक कुछ मुश्किल नहीं है। क्योंकि उस की दानिश बेहद और उस की कुदरत बेपायाँ है। खुदा में मुहब्बत का कुछ खलल नहीं है क्योंकि उस का प्यार अज़ल से ले के अबद तक ग़ैर-मुतबद्दल है पर खुदा के नज़दीक हमारे बचाने में कोई मना करने वाला नहीं है। क्योंकि उस ने हमें फ़र्ज़न्द ठहराया और उस का जलाल हमारे हाल और आइन्दा की बेहतरी के साथ ताल्लुक रखता है खुदा की दस्त-गीरी की निस्बत दाऊद ने हमारे लिए एक नमूना रखा है ये कह के कि ये मुसीबतज़दा चिल्लाया और यहोवा ने सुना और उसे उस की सारी तंगियों से बचाया हर एक के साथ जो खुदा की तरफ़ देखता वैसा ही होगा। आखिरकार वो गुनाह और शैतान और दुनिया से रिहाई पाएगा और रोज़-ए-क़यामत में उस का बदन सड़ने से बच कर और रूह से मिलकर जलाल में दाखिल होगा। इसी तरह हम खुदावंद के साथ हमेशा रहेंगे।

“उस ने हमको ऐसी बड़ी हलाकत से छुड़ाया और छुड़ाया भी है हमको उस से ये उम्मीद है कि वो आगे को भी छुड़ाएगा।” (2 कुरिन्थियों 1:10)

## नतीजा मुतयक्कन

“हम जानते हैं कि सारी चीज़ें उनकी बहाली के लिए जो खुदा से मुहब्बत रखती हैं। मिल के फ़ायदा बख़्शती हैं ये वो हैं जो खुदा के इरादे के मुवाफ़िक़ बुलाए गए।” (रोमियों 8:28)

वाह क्या ही मुबारक ये बात है कि सारी चीज़ें ख़्वाह अच्छी ख़्वाह बुरी ख़्वाह रूहानी ख़्वाह जिस्मानी हों सारी चीज़ें हमारी भलाई में काम आती हैं। वो सब मिल के फ़ायदा बख़्शती हैं जैसा कि जंजीर में एक कड़ी दूसरी के साथ मेल रखती है और सब

मिल कि जंजीर हो जाती हैं वैसे ही ये सारी चीज़ें एक दूसरे की मदद करती हैं। और सब मिल के हमारे हाल और आइन्दा की भलाई के लिए फ़ायदा बख़्शती हैं। वो ये फ़ायदा बख़्शती हैं कि गुनाह को रोकती हैं और हमारी पाकीज़गी को बढ़ाती हैं। वो हमको दुनिया से खींच के आस्मान की तरफ़ रुजू करती हैं। वो हमारी बड़ी ख्वाहिशों को मिटा देती हैं और उन के एवज़ रूहानी ख्वाहिशों उभारती हैं। खुदा ने वाअदा किया है कि मैं अपने फ़ज़ल से उन को बुलाऊँगा। और उस ने अपने क़ौल के मुताबिक़ किया भी है रूह-ए-पाक की मार्फ़त हमारे दिलों में उस की मुहब्बत मौजूद है और इस मुहब्बत से मुहब्बत खुदा और इंसान की तरफ़ मुहब्बत पैदा होती है। वो अज़ीज़ फ़र्ज़न्द जान कर हमारी भलाई चाहता है और अपने इंतिज़ाम व कलाम व रूह के वसीले से ऐसा करता है कि जो वाक़ियात पेश आते हैं। वो हमारा नुक़सान नहीं करते बल्कि बरअक्स इस के हमको फ़ायदा बख़्शते हैं। चुनान्चे हर एक आजमाईश और इम्तिहान और दुख और लज़ज़त और नुक़सान और मुहासिल के हक़ में हम कह सकते हैं कि ये हमारी भलाई के लिए हैं। ऐ मेरी जान जब तुझे रंज व ग़म और दुख और तकलीफ़ के अंधेरे पेश आए तो इस बात को ना भूल कि जिस वक़्त तेरी तकलीफ़ें ज़्यादा हैं। उस वक़्त भी सारी चीज़ें मिलकर तेरी भलाई के लिए फ़ायदा बख़्शती हैं हाल की चीज़ें इस्तिक़बाल की चीज़ों से इलाक़ा रखती हैं और तेरी हल्की मुसीबतें तेरे लिए एक बेनिहायत और अबदी और बड़ा जलाल पैदा करती रहती हैं। चुनान्चे लिखा है कि रास्तबाज़ों से कहो की तुम्हारा भला होगा।

“मैं यकीनन जानता हूँ कि उन्हीं का भला होगा। जो खुदा से डरते हैं और उस के हुज़ूर कांपते हैं।” (वाइज़ 8:12)

## आराम

“हासिले कलाम खुदा के लोगों के वास्ते सबत का आराम बाक़ी है।”

(इब्रानियों 4:9)

थके मांदे को आराम पाना क्या खुश मालूम होता है पर तू भी खुदावन्द के लोगों को यहां बहुत थोड़ा सा आराम मिलता है लेकिन ग़म आलूदा व शिकस्ता रूह को खुदा के हुज़ूर में चैन मिलेगा और जो बदन अक्सर दुख में रहता है वो गोर (क़ब्र) में सारे

दुख और दर्द से रिहाई पाएगा। मांदगी ज़माना हाल से इलाका रखती है लेकिन आराम अबद तक रहेगा। दरिया-ए-मौत के उस पार दुखी सर और थके बाजू या आजुरदा-ए-दिल (नाखुश, रंजीदा) नहीं फिर आस्मान का आराम इसलिए ज़्यादा दिल पसंद होगा कि यहां मेहनतें सख्त थीं। अभी अपने वादों के वसीले गोया अपनी गोद में ईसा हमें फ़रागत देता है। पर वो जल्द हमें अपने बाप के घर में पहुंचाएगा। और कामिल आराम बख़शेगा। वहां क्या ही ख़ूब आराम होगा। गुनाह से, दुख से, लड़ाई से, मेहनत से, रंज से रिहाई मिलेगी बल्कि ऐसा आराम होगा कि जिसमें ईसा आप मसरूर रहता है। हम ना सिर्फ उस के साथ बल्कि उसी की मानिंद आराम पाएँगे। उस के जलाली हुज़ूर में कितने जो यहां थके-माँदे थे। आराम लेते हैं उनका आराम बरकरार होगा। जो यहां किस को आराम मिले तो अक्सर औकात घबराहट और ख़तरे पेश आते हैं लेकिन वहां कमाल चैन और आराम मिलेगा। बल्कि बढ़ता चला जाएगा। खुदा का शुक्र हो उस फ़रागत के लिए जो हम मसीह के वसीला पाते हैं। हज़ारों शुक्र उस अबदी आराम के लिए जो मसीह के साथ हम पाएँगे। ऐ तू जो थका है अपने दुख खयाल में मत ला और मसीह पर निगाह कर के याद रख कि तेरे लिए आराम बाकी है थोड़ी देर बाद तुझको आराम मिलेगा। थोड़े अर्से बाद तू ईसा को देखेगा और उस की मुहब्बत के साथ मसरूर होगा। और अबद तक उस के हुज़ूर में कामिल चैन और फ़र्हत हासिल करेगा। हाल में तुझको थकाई (थकावट) और नातवानी (कमज़ोरी) और दुख हो तो हो पर इस्तिक्बाल में तेरे लिए आराम और सलामती और सआदत कामिल होगी।

“तुम उस आराम और मीरास तक जो खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुमको देता है हनूज़ नहीं पहुंचे।” (इस्तिस्ना 12:9)

## तैयारी

“तुम सब तैयार रहो।” (यशूअ 8:4)

लाज़िम है कि ईसा पर वाक़ेअ के लिए तैयार हो उस के लिए तदबीर की गई और वाअदा किए हुए नमूने पेश किए गए और नसीहतें मिलीं। खुदावन्द का फ़र्मान ये है कि तैयार हो चाहिए कि हम तकलीफ़ात पाने और उन्हें बर्दाश्त करने और उन से फ़ायदा

हासिल करने को तैयार होना चाहिए कि मौत के लिए तैयार हों। मौत जरूर आएगी पर क्या जानें कि कब या किस तरह से आएगी। पस लाज़िम है कि कमर बांध के और आस्मानी बातों पर दिल लगा कर तैयार हों चाहिए कि मसीह की आमद के लिए तय्यार हों जिस तरह वो आस्मान पर गया उसी तरह फिर आएगा और हम उस को रूबरू देखेंगे। लाज़िम कि हमारी उम्मीदें और आरज़ूएँ और इंतज़ार उस की आमद पर होना चाहिए कि हम उस के फिर आने के ऐसे मुंतज़िर रहें जैसे राह गुमकर्दा राह का और पासबान सुबह का और दूल्हन आने वाले दूल्हे की और कैदी रिहाई का मुंतज़िर है। ऐ भाई मैं तुझसे कहता हूँ कि तैयार रह ईसा आता है क्या जानें कि जल्द ये आवाज़ सुनी जाये कि देख दूल्हा आता है उस के मिलने को निकल काश कि उस वक़्त हमारी कमरें बंधी हों और हमारी मशअलें रोशन हों तब खुशी से पुकारेंगे कि ऐ खुदावन्द ईसा जिल्द आ जो ऐसा तैयार है वो काम करने और बेकार रहने और मरने और जीने और यहां रहने और मसीह के पास जाने को तैयार है। ऐ रूह-उल-कुद्स अपने लोगों के दिल पर नाज़िल हो ताकि ये तेरी तासीर से सर-नव पैदा हो कर मसीह के आने की बड़ी आरज़ू व कोशिश से मुंतज़िर रहें। क्या ही मुबारक ये बात है कि खुदावन्द आएगा ऐ ईसा खुदावन्द आ।

“इसलिए तुम भी तैयार रहो क्योंकि जिस घड़ी तुम्हें गुमान ना हो इब्ने-आदम आएगा।” (मत्ती 24:44)

## शरीरों की हालत का बयान

“वोह इन्सान की मानिंद दुख में नहीं हैं। और आदमजाद के साथ मार नहीं खाते।” (ज़बूर 73:5)

अक्सर मुसीबतज़दा ईसाई बदकारों के अहवाल पर गौर कर के ताज्जुब करते हैं कि इन बेदीनों के साथ खुदा का कैसा सुलूक है। आसेफ़ की मानिंद सिर्फ़ अपनी अक्ल से इन्साफ़ कर के वो ठोकर खाते हैं और जब तक आसेफ़ के मानिंद वो मुक़द्दस में नहीं जाते ये भेद उन पर नहीं खुलता अलबत्ता इस में शक की जगह नहीं कि अक्सर दीनदार तंगहाल और बदकार खुशहाल हैं पहले बीमार और दूसरे तंदुरुस्त वो बदशक्ल

और ये खूबसूरत रास्तबाज़ कम्बख्त और दगाबाज़ खुश-वक्त हैं ये क्यूँ-कर है क्या इतिज़ाम इलाही नहीं है कि खुदा अपनों को प्यार नहीं करता हाँ प्यार तो करता है लेकिन याद रखना चाहिए की जो सुलूक खुदा यहां अपने लोगों के साथ करता है सो जल्द मुबद्दल (तब्दीलशूदा) होने वाला है गुनेहगारों पर हसद ना कर और उन की राहों पर चल क्योंकि हाल की खुशी के सिवा उस की कोई दूसरी नहीं वो अभी अच्छी चीज़ें और ईमानदार बुरी चीज़ें पाता है। बदकार ऐश व इशरत में मशगूल हो तो हो और इस दुनिया की दौलत को हासिल करे तो करे मगर उस को याद रखना चाहिए कि बाद इस के अदालत होगी। चुनान्चे लिखा है कि वो गरीब मर गया और फ़रिश्तों ने उसे इब्राहिम की गोद में रखा और दौलतमंद भी मरा और गाढ़ा गया उस के निजाम और अबदी हिस्से का मुक़ाबला कर, अगर खुदा ने तुझे तंगहाल और मुसीबत पज़ीर लोगों में शुमार किया हो तो तुझे उस का शुक्र करना वाजिब है हाल की मुसीबत पर लिहाज़ ना कर बल्कि याद रख कि गुनेहगार फिसलनी जगहों में खड़े हैं और जल्द तबाही ही में गिरा दिए जाएंगे। ऐ गुनेहगार तेरी कामयाबी तेरे लिए एक जाल है तू अब अपनी अच्छी चीज़ें लेता है लेकिन अगर तू बग़ैर मसीह पर ईमान लाए मर जाये तो तेरे लिए फ़क़त रोना और वावेला और दाँत पीसना बाकी है। ईसा के पास ज़िंदगी और सलामती के हासिल करने के लिए दौड़ के जा।

“कि हम ना उन चीज़ों पर जो देखने में आती हैं बल्कि उन चीज़ों पर जो देखने में नहीं आतीं नज़र करते हैं क्योंकि जो चीज़ें देखने में आती हैं चंद रोज़ की हैं और जो देखने में नहीं आतीं हमेशा की हैं।”

(2 कुरिन्थियों 4:18)

## मसीह की तारीफ़

“तू बनी-आदम से अज़-हद हसीन व जमील है तेरे लबों में लुत्फ़ उंडेला गया इसलिए खुदा ने तुझे अबद तक बरकत दी है।” (ज़बूर 45:2)



ऐ पढ़ने वाले में एक शख्स की तारीफ़ करना चाहता हूँ जो तेरी मुहब्बत के लायक है और तेरे अहवाल से मुताबिक़त रखता है इन्सान की गैर-फ़ानी रूह बहुतेरी एहतियाजें और आरजूएँ रखती है और ईसा के सिवा कोई मख्लूक उन को रफ़ा नहीं कर सकता जो कुछ तुझे दरकार हो उस के पास है तेरे सारे इश्तियाक़ (शौक़) वो बर लाएगा फ़क़त मसीह इस काम के लिए काफ़ी है। जो मैं कहता हूँ सो तजुर्बे से कहता हूँ। मेरी ऐसी हाजतें और इश्तियाक़ थे उस के रफ़ा करने वाले को मैं ढूँढता फिरा पर सिर्फ़ ना उम्मीदी पाई आख़िर को मैंने ईसा पर लिहाज़ किया। मैं ने उस का कलाम पढ़ा और उस पर भरोसा रखकर यक़ीन किया कि वो मेरे मतलब के मुवाफ़िक़ है। लिहाज़ा उस की तरफ़ रूजू किया उसी पर ईमान लाया उसी से आराम पाया मुझे सलामती व खुशी मिली बस वो मेरा है और मैं उस का हूँ ता-अबद वो मेरा रहेगा। और मैं उस का रहूँगा। उस वक़्त उस से मुद्दत दराज़ हुई और उस तमाम अर्से मैं ईसा की किफ़ायत बढ़ती चली गई है और मुझे ज़्यादा तर यक़ीन हुआ कि वो मेरे सारे मक्सूद में काम आएगा। उस को पहचानना उस को प्यार करना है उस पर ईमान लाना नजात पाना है जब तक कोई उस की मुहब्बत की शीरीनी ना पाएगा। तब तक उस की सोहबत की महज़ खुशी जान नहीं सकता। उस की फ़ज़ीलत में तुम पर ज़ाहिर किया चाहता हूँ और मेरी ये गर्ज़ है कि उस की चंद सिफ़तों का इशारा करूँ और तुम पर साबित कर दूँ कि वो तुम्हारे हाल के मुताबिक़ है और मेरी ये उम्मीद है कि उस की खूबियों से वाक़िफ़ हो कर तुम उस पर ईमान लाओ और उस में मिलकर हर तरह से बढ़ते जाओ।

“उस का नाम अकेला बुलंद है उस का जलाल ज़मीन व आस्मान के ऊपर है।” (ज़बूर 148:13)

## ईसा बचाने के काबिल है

“वो उन्हें जो उस के वसीले खुदा के हुज़ूर जाते हैं आख़िर तक बचा सकता है।” (इब्रानियों 7:25)

बड़े गुनेहगारों के लिए बड़ा बचाने वाला चाहिए जब कोई शख्स रूह-ए-पाक के वसीले से गुनाह का काबिल होता है वो अपना भरोसा किसी मज़बूत बुनियाद पर डालना

चाहता है जिस कद्र गुनाह की पहचान बढ़ती है उस कद्र आक्रिबत (आखिरत) बनाने की फ़िक्र होती है। जब ऐसी फ़िक्र पैदा होती है तब तरह-तरह की तदबीरें इस्तिमाल की जाती हैं, लेकिन कोई काम नहीं आती कभी-कभी बिल्कुल नाउम्मीदी का सोच पैदा होता है। पर ऐसा सोच शैतान की तरफ़ से है और जो इस को जगह देता है वो मसीह को बे-हुरमत करता है और अपनी जान को तकलीफ़ देता है ईसा के सिवा और कोई बचा नहीं सकता सिर्फ़ उस के कामिल कफ़ारे से नजात होती है। हमारे आँसू और दुआएं और मेहनतें हमें बचा नहीं सकतीं ईसा बचा सकता है आस्मान के तले कोई ऐसा मख़लूक नहीं है जिसे वो बचा नहीं सकता चूँकि उस की काबिलियत उस की उल्हियत और उस की कुर्बानी की लियाक़त के साथ इलाका रखती है। लिहाज़ा वो बचा सकता है क्योंकि खुदा हो के वो सब कुछ कर सकता है और उस की कुर्बानी की लियाक़त बेहद है ईसा का कफ़ारा इस काबिल है कि वो सारे आदमियों के गुनाहों को मिटाए क्योंकि वो मौजूद बेपायाँ है और नामुम्किन है कि उस का कफ़ारा महदूद हो। पस वो गुनेहगारों के बचाने के लिए वो कितने ही क्यों ना हों और उन के सारे गुनाहों के मिटाने के लिए काफ़ी है। ऐ पढ़ने वाले ! ईसा तुझे बचा सकता है बल्कि अगर तू ईमान लाए तो उस वक़्त तुझे बचाएगा और तेरे बचाने से उस को इज़ज़त मिलेगी। कुछ शक मत ला क्योंकि वो कादिर-ए-मुतलक है मत डर क्योंकि उस का लहू सारे गुनाहों से पाक करता है।

“ये कौन है मैं सदाक़त में कलाम करने वाला बचाने के लिए क़वी हूँ।”

(यसअयाह 63 बाब 1)

## ईसा गुनेहगारों को बचाना चाहता है

“अगर तू चाहे तो मुझ पाक कर सकता है मैं चाहता हूँ तू पाक हो।”

(मर्कुस 1:40-41)

अक्सर लोग मान लेते हैं कि ईसा इस काबिल है कि हमको बचाए लेकिन उस की रजामंदी पर शक रखते हैं ये ग़ैर-मुनासिब है क्योंकि जितनी दलीलें उस के बचाने की काबिलियत पर हैं उतनी ही उस की रजामंदी पर भी हैं। उस के कलाम से मैं जानता हूँ कि मसीह मुझको बचा सकता है और वही कलाम जिससे उस की काबिलियत जानी

जाती है मुझे साफ़-साफ़ बताता है कि वो बचाना भी चाहता है। उस कौड़ी को शक आया कि वो मुझे चंगा करेगा या नहीं क्योंकि उस के चंगा करने का कुछ वाअदा ना था। वो अपनी तंगहाली में आया और जिस दम को अज़ रुए ईमान के ईसा की काबिलियत का काइल हुआ उसी दम जान लिया कि वो मुझे बचाना चाहता है और फ़ौरन दोनों बातें उस पर साबित हुईं। अज़ल ही से मसीह गुनेहगारों के बचाने का शौक रखता है और जब तदबीर इलाही कामिल हुई तो वो दुनिया में आया और शरीअत का फ़रमांबर्दार हो के और दुख उठा के नजात की राह खोल दी ज़मीन पर उस ने मुसीबत ज़दों के साथ हम्दर्दी की और सभी पर ज़ाहिर किया कि मैं तुम को हर तरह की बुराई से रिहाई दूंगा। और जो मेरे पास आते हैं उन्हें निकाल ना दूंगा उस का दिल रहीम और दर्द-मंदी से भरा था। हर एक की मदद करता रहा जो किया हमारी नसीहत के लिए किया कि जैसा उस वक़्त लोगों को जिस्मानी नेअमतेँ दीं वैसा ही अब भी रूहानी बरकतेँ देने को तैयार है। जिसने जिस्मानी बीमारो मुसीबत ज़दों को बचाया मुहाल है कि वो जहन्नुमी मौत से ना बचाए, पर ये बात ऐसी साफ़ व रोशन है कि इस के लिए कुछ दलील की ज़रूरत नहीं, चुनान्चे पाक कलाम में लिखा है कि जो कोई चाहे आब-ए-हयात मुफ़्त ले। ऐ पढ़ने वाले अगर ईसा के वसीले से बचना तुझे मंज़ूर है तो वो तुझे बचाएगा। और तेरा मंज़ूर होना उस का सबूत है क्योंकि अगर तुझे बचाना ना चाहता तो तेरे दिल में ये ख्वाहिश पैदा ना करता।

“तुम क्यों ऐसे ख़ौफ़नाक हुए और काहे को एतिक़ाद नहीं रखते।”

(मर्कुस 4:40)

## ईसा गुनेहगारों पर मेहरबानी करने को तैयार है

“यहोवा तुम पर मेहरबान होने के वास्ते इंतज़ार करेगा।”

(यसअयाह 30:18)

अगर हमको ख़ुदावंद के लिए इंतज़ार करना पड़ता तो कुछ ताज्जुब नहीं अजीब बात ये है कि हमारे लिए वो इंतज़ार करता है। ख़ुदावन्द ईसा तख़्त फ़ज़ल पर बैठ के

गुनेहगारों को बुलाता है और मेहरबानी करने के लिए वो गुनेहगारों को माफ़ी और सलामती और हयाते अबदी बख़्शना चाहता है। ये अजीब तरह का फ़ज़ल है। आज ईसा इंतज़ार करता है शायद ऐ पढ़ने वाले तू भी ऐसा शख्स हो कि ईसा तेरे लिए इंतज़ार करता है। इस वास्ते वो ग़ज़ब करने में देर करता है कि तू अपनी हमाक़त से वाक़िफ़ हो जाये और अपनी बुराई से बाज़ आए और अपनी रास्तबाज़ी का भरोसा छोड़ के और उस की रास्तबाज़ी की उम्मीद रख के सिर्फ़ उसी पर ईमान लाए अगर उस के पसंद के लायक़ तेरे पास कुछ है तो वो यही है कि तू मुफ़्लिस और नाचार और गुनेहगार है। वोह तुझे मोहलत देता है कि तू हर एक बेकार भरोसे को छोड़ के कामिल रिहाई के लिए उस के पास आए वो तुझे बरकतें देने पर तैयार है। तुझे कुबूल किया चाहता है। बार-बार उस ने तुझे बुलाया है अब भी तुझे बुलाता है। उस के इंतज़ाम में जो कुछ वाक़ेअ होता है और जो कलाम तू सुनता है और जो कुछ तेरी तमीज़ को दहशतनाक मालूम होता है और बाइबल का सारा मज़मून ये सब ईसा की तरफ़ से दावतें हैं। सभी से तुझे ये ख़बर मिलती है कि ईसा तुझे बचाना चाहता है और इस सबब से वो सज़ा देने में सब्र करता है बल्कि तुझे कहता है कि तेरी नादानी और सरकशी और बेईमानी के सिवा तेरे और हयात-ए-अबदी के दर्मियान और कुछ रोक नहीं है मसीह की मुहब्बत क्या ही अजीब है। अगरचे माँ बड़ी आरज़ू रखती कि मेरा भटका हुआ बेटा मेरी गोद में फिर आए लेकिन उस की मुहब्बत से ईसा की मुहब्बत ज़्यादा और मज़बूत है। फ़क़त मसीह ऐसा ला-सानी प्यार दिखा सकता है। उस की मेहरबानी में कुछ शक़ मत ला।

“वो अभी दूर था कि उसे देख के उस के बाप को बड़ा रहम आया और दौड़ के उस को गले लगा लिया और चूमा।” (लूका 15:20)

## ख़ुदा का मसीह में ज़ाहिर होना

“ख़ुदा ने मसीह में हो के दुनिया को अपने साथ यूँ मिला लिया कि उस ने उनकी तक़सीरों को उन पर हिसाब ना किया।” (2 कुरिन्थियों 5:19)

अगर हम साफ़ व सरीह और खुशी से ख़ुदा पर लिहाज़ करें तो चाहिए कि उस पर ऐसा लिहाज़ करें जैसा वो मसीह में ज़ाहिर है मसीह की सूरत में ख़ुदा ज़हूर में आया

मसीह में उलूहियत का सारा कमाल मुजस्सम हो गया फ़क़त मसीह खुदा को कामिल तौर से ज़ाहिर करता है। जो ईसा है सो ही खुदा है। ईसा ने जो कुछ कहा खुदा की तरफ़ से कहा और जो कुछ उस ने किया सो खुदा ही ने किया। मसीह ने खुद कहा कि जिसने मुझे देखा है उस ने बाप को देखा है। ये बात तसल्ली से भरी है खुदा को देखने के लिए खल्कत की तरफ़ रुजू होना ना चाहिए अगर मैं ये दर्याफ़्त किया चाहूँ कि खुदा क्या है तो कोह-ए-सिना या शरीअत पर नहीं बल्कि बरअक्स इस के ईसा पर निगाह करना लाज़िम है जब उस का काम देखता हूँ तो खुदा का काम इसी से मैं जानता हूँ देखता हूँ जब उस की सुनता हूँ तो इस को खुदा की आवाज़ जानता हूँ कि खुदा क्या है और वो क्या करेगा बेदार हो के मैं उस के पास जाऊँ वो मुझे हटाने ना देगा। बल्कि बरअक्स इस के कुबूल करेगा अपना हाथ फैला के कहता है, “ऐ थके-माँदे मेरे पास आ मैं तुझे आराम दूँगा। “ऐ प्यासे आ पीने को दूँगा। गुनेहगार आ माफ़ी बख़्शूँगा गुमराह आ कुबूल करूँगा। खुदा पर ऐसी नज़र रखना गुनेहगार के लिए क्या ही बाइस तस्कीन है। हकीकतन खुदा ईसा में था और अभी तक ईसा में है। अज़ीज़ ! खुदावन्द ईसा तू मुबारक है कि तू ने इस तरह हम पर बाप को ज़ाहिर किया है ऐ मेरी जान अगर तू गुलाम की मानिंद खुदा से डर सकती है तो ईसा पर अपनी निगाह रख और उस पर लिहाज़ कर के जान ले कि खुदा मुहब्बत है।

“खुदा को किसी ने कभी ना देखा इकलौता बेटा जो बाप की गोद में है उसी ने बतला दिया।” (यूहन्ना 1:18)

## मसीह का फ़ज़ल से मामूर होना

“और कलाम मुजस्सम हुआ और वो फ़ज़ल और रास्ती से भरपूर होके हमारे दर्मियान रहा और हमने उस का ऐसा जलाल देखा जैसा बाप के इकलौते का जलाल।” (यूहन्ना 1:14)

खुदा का फ़ज़ल ये है कि ना लायक़ पर वो रहम की नज़र करे सारे इनाम जो हमको मिलते हैं फ़ज़ल से हैं। सारा फ़ज़ल मसीह की माफ़त हमको मिलता है आगे हम गुनाहों और ख़ताओं के सबब से मुर्दा थे। पर अब फ़ज़ल से हम ज़िंदा हो गए। आगे

नारास्त थे और अब फ़ज़ल से रास्तबाज़ ठहरे, फ़ज़ल से रफ़ता-रफ़ता पाक और आस्मान में बसने के लायक तैयार हो जाते हैं। फ़ज़ल के वसीले से ख़ुदा की मर्ज़ी बजा लाने की काबिलियत हम में पाई जाती है फ़ज़ल से हमको हिमायत और हिदायत मिलती है और आख़िरकार फ़ज़ल से आस्मानी आराम हासिल होगा। हम फ़ज़ल के सबब से ईमान ला के बच गए हैं और ये हमसे नहीं ख़ुदा की बख़िश है। मसीह के वसीले से फ़ज़ल हमको मिलता है और सिर्फ़ वही फ़ज़ल का चशमा है। सिर्फ़ उसी से सारा फ़ज़ल मिल सकता है इसलिए फ़ज़ल के तख़्त के पास बेपर्वा जाएं ताकि हम पर रहम हो और फ़ज़ल जो वक़्त पर मददगार हो हासिल करें। ऐ पढ़ने वाले क्या तू ने मसीह से फ़ज़ल पाया है, अगर पाया हो तो उस की तासीर ये हुई होगी कि तू मसीह के पास दौड़ा गया होगा और उसी से आराम पाया होगा और रफ़ता-रफ़ता उस की मानिंद बनता जाएगा अगरचे फ़ज़ल पाया तो और ज़्यादा पाने की ख़्वाहिश करेगा। और मसीह के पास जाया करेगा कि उसे पाए ऐ ईमानदार जो शैतान तुझे आजमाए जो दिली ख़राबी तुझे तकलीफ़ दे जो दुनिया तुझको हक़ीर जाने जो मौत के ख़ौफ़ से तू हैरान हो तो याद कर कि ईसा में फ़ज़ल की मामूरी है और ये फ़ज़ल तेरे लिए है।

“क्योंकि बाप को पसंद आया कि सारा कमाल उस में बसे।”

(कुलुस्सियों 1:19)

## ईमानदार का मसीह में होना

“अंगूर का दरख़्त मैं हूँ तुम डालियां हो वो जो मुझमें कायम होता है और मैं उस में वही बहुत मेवे लाता है क्योंकि मुझ से जुदा होके तुम कुछ नहीं कर सकते।” (यूहन्ना 15:5)

ईमानदारों का मसीह में पैवस्ता होना कलाम इलाही की एक खास तालीम है ये तालीम साफ़ व सही और तरह-तरह की मिसालों से ज़ाहिर होती है। और वो एक हक़ीकी बरकत है नूह कश्ती में और लूत शहर ज़गर में और ख़ूनी शहर-पनाह में थे। और वहां रह के महफूज़ रहे और जिस कद्र वो महफूज़ थे उसी कद्र बल्कि उस से ज़्यादा ईमानदार

मसीह में महफूज़ रहेंगे। जैसा अंगूर के दरख्त से डाली और न्यू से इमारत और सर से उजू मिल के एक ही हो जाता है। वैसा ही मसीह से ईमानदार मिल के वो दोनों एक ही हो जाते हैं। मसीह से पैवंद होना तरह-तरह की कीमती नेअमतों और बरकतों का सोता है। उन पर जो मसीह ईसा में हैं सज़ा का हुक्म नहीं है। हसन व बार आवरी मसीह में पैवंद होने से निकलती हैं और इस मेल (मिलाप) के नीचे सलामती और पा गेयज़गी हैं अगर कोई मसीह में है। तो वो नया मख्लूक है हम मसीह ईसा में हो के अच्छे कामों के वास्ते पैदा हुए जिनके लिए खुदा ने हमें आगे मुकर्रर किया था। कि हम उन्हें क्या करें उन को जो मसीह में हैं नया दिल दिया जाता है। जिससे नई सोच, नई ख्वाहिशें, नई उम्मीदें, नए खौफ़, नए ग़म, नई गरज़ें बल्कि ज़िंदगी की नई रौशें निकलती हैं। अगर हम मसीह में हो के उस के साथ एक ही हैं तो शुरु और दुनिया और ज़िंदगी हाल गुज़शता की निस्बत मुर्दे हैं मसीह और उस के लोग एक ही हैं। शरीअत की नज़र में वह एक ही हैं अदल के रु से एक ही हैं। बाप के नज़दीक एक ही है मसीह सर है और वो उजू मसीह अंगूर का दरख्त है और वो डालियां मसीह दूल्हा है और वो दुल्हन। ये मेल फ़कत मसीह के इरादे से पैदा हुआ। इन्सान ने ना इस को ईजाद किया ना चाहा है। ये तो मसीह की मुहब्बत की एक क़वी दलील है। ईसाई का दिल ईसा का मस्कन है इस में वो सुकूनत और हुक्मत करता है। ऐ ईसा मेरे दिल में सुकूनत कर।

“मैं मसीह के साथ सलीब पर खींचा गया लेकिन ज़िंदा हूँ। पर तो भी मैं नहीं बल्कि मसीह मुझमें ज़िंदा है और मैं जो अब जिस्म में ज़िंदा हूँ सो खुदा के बेटे पर ईमान लाने से ज़िंदा हूँ। जिसने मुझसे मुहब्बत की और आपको मेरे बदले दिया।” (ग़लतियों 1:20)

## कलाम-ए-खुदा ईसा का लक़ब है

“इब्तिदा में कलाम था और कलाम खुदा के साथ था और कलाम खुदा था।”  
(यूहन्ना 1:1)

जो कलिमे इन्सान बोलते हैं वो उनकी दिली सोच और खयाल के निशान हैं। मसीह उस इरादे मुहब्बत को जो खुदा की मर्ज़ी में अज़ल से था ज़ाहिर करता है।

चुनान्चे वो इसी सबब से खुदा का कलाम कहलाता है अगर हम खुदा के प्यार को पहचानना चाहें तो ईसा पर निगाह करना चाहिए वो हमको बताता है कि खुदा का क्या इरादा था। यानी खुदा ने जहान को ऐसा प्यार किया है कि उस ने अपना इकलौता बेटा बखशाता कि जो कोई उस पर ईमान लाए हलाक ना हो बल्कि हमेशा की ज़िंदगी पाए। खुदा का इरादा हमारी नजात के लिए था और उस ने ईसा को इस इरादे के ज़ाहिर करने के लिए भेजा। ईसा ने अपनी ज़िंदगी कामों, बातों, दुखों से और खासकर अपनी मौत से खुदा की मुहब्बत हम पर ज़ाहिर की। ऐ मेरी जान अगर तू जाना चाहती है कि खुदा का अज़ल से क्या इरादा था और है और रहेगा तो ईसा पर लिहाज़ कर क्योंकि वो कलाम है जो खुदा के इरादे जलाल को ज़हूर में लाता है। उस के वसीले से मैं जानता हूँ कि खुदा उन सभी के लिए जो उस के बेटे के कफ़ारे से उस से मिलाए जाते हैं मुहब्बत है। ऐ ईसा मैं तुझे बाप का ज़िंदा कलाम जानूँ तेरी मर्ज़ी को बजा ला के बाप की मर्ज़ी को बजा लाऊँ और अपनी सारी ज़िंदगी उस के जलाल का बाइस ठहरूँ। तुझ पर ईमान ला के बाप को देखूँ। ऐ रूह-उल-कुद्स ईसा को मुझ पर साफ़ व रोशन ज़ाहिर कर ताकि उस पर लिहाज़ कर के मैं अपनी कैफ़ीयत से वाकिफ़ होऊँ। और उस की किफ़ायत जान कर फ़क़त उसी पर भरोसा रखूँ तेरा ये काम है कि ईसा को ईमानदारों पर ज़ाहिर करे उस को मुझ पर ऐसा ज़ाहिर कर कि उसे पहचान कर मैं बाप का जलाल देखूँ और बाप और ईसा के और तेरे साथ सोहबत रखूँ।

“खून में डूबा हुआ लिबास वो पहने था और उस का नाम कलाम-ए-खुदा है।”  
(मुकाशफ़ा 19:13)

## ईसा का हमारा दोस्त होना

“कोई शख्स इस से ज़्यादा मुहब्बत नहीं करता कि अपनी जान अपने दोस्तों के लिए दे जो कुछ कि मैंने तुम्हें फ़रमाया अगर तुम करो तो मेरे दोस्त हो।” (यूहन्ना 15:13-14)

दोस्ती करने से ज़िंदगी को खूबियाँ शीरी-तर होती जाती हैं। लेकिन ऐसा दोस्त मिलना जो कामिल तौर से वफ़ादार हो और जिसके सपुर्द हम अपना सब कुछ कर सकें



अज़-बस मुश्किल है। ईसा ऐसा ही दोस्त है। वो हम पर अपनी दोस्ती के साबित करने और हमसे दोस्ती हासिल करने के लिए मुजस्सम हुआ और दुख उठा के मर गया, मर के वो जी उठा और सभी का जो उस पर ईमान लाते हैं दोस्त है। चाहिए कि उस की तरफ़ अपनी सारी एहतियाजों के रफ़ा करने के लिए देखें क्योंकि वो इस के काबिल और रज़ामंद भी है। अपनी सारी तकलीफों के साथ उस के पास जाएं क्योंकि वो सुनने और मदद और नसीहत करने को तैयार है। उस से कुछ ना छुपाएं वो किसी बात को जो उस के लोगों की सलामती या खुश-वक्ती या खुशी के लिए काम आती है। हकीर ना जानेगा। वो हमारे सारे दर्दों में हम्दर्दी करता है। हमारी रोज़मर्रा की दिक्कत उस के पास पहुंचाई जाये और उस के कान में बोली जाये अक्सर औकात उस के ना करने से और उस सोच से कि ये क्या ही छोटी बात है कि मैं इस ईसा को बताऊं ईमानदार की तकलीफ़ बढ़ जाती है चाहिए कि हमको दिक्कत करने से ना डरें वो अपने ऊपर हमारा बोझ उठाना चाहता है और अगर कभी उस को तकलीफ़ मिलती है तो उस वक़्त मिलती है जब वो ये देखता है कि हम उस के पास ना जाएंगे। बल्कि बरअक्स इस के मदद हासिल करने के लिए और किसी पर तकिया (भरोसा) करते हैं चाहिए कि फ़क़त मसीह पर तकिया (भरोसा) करें, क्योंकि जो किसी मख़लूक़ पर भरोसा रखें तो वो हमारी मुराद को अंजाम ना पहुंचाएगा, लेकिन ईसा में ना पाएदारी नहीं। मख़लूक़ टूटा हुआ सेंठा है मगर ईसा ज़मानों की चट्टान है। ऐ मेरी जान ईसा को अपना दोस्त बना कर और उस के साथ सोहबत कर के अपनी दोस्ती ज़ाहिर कर।

“मैंने तुम्हें दोस्त कहा है कि सब बातें जो मैंने अपने बाप से सुनी हैं। मैं ने तुम्हें बतलाई” (यूहन्ना 15:15)

## मसीह की मुहब्बत

“मसीह की मुहब्बत जो दर्याफ़्त से बाहर है दर्याफ़्त कर सको। ताकि तुम खुदा की सारी भरपूरी से भर जाओ।” (इफ़िसियों 3:19)

ईसा की मुहब्बत क्या ही अजीब है उस ने गुनेहगारों से जब वो अपने गुनाहों में मुर्दा थे मुहब्बत रखी, बल्कि यहां तक उन को प्यार किया कि उन के बचाने के लिए

अपनी जान दी वो हमारी लियाकत के सबब से नहीं बल्कि इसलिए हमसे मुहब्बत रखता है कि हमें प्यार करना उस को पसंद है। इस से वो कोई दूसरा सबब नहीं बतलाता है अपनों को प्यार कर के वो उन्हें आखिर तक प्यार करेगा। क्योंकि वो अपनी सिफात व तबइयत में गैर-मुतबद्दल है खुद वो कहता है और ये बिल्कुल शीरीं बात है कि मैंने अबदी इश्क से तुझे प्यार किया इसलिए मैंने बड़ी चाह से तुझे खींचा है हम उस की मुहब्बत में मसरूर हों पर उस से बखूबी वाकिफ नहीं हो सकते क्योंकि दर्याफत से बाहर है उस की मुहब्बत हमारी पहचान और हमारे सारे खयालों से बाहर है फरिश्ते भी इस मुहब्बत के जोर को जान नहीं सकते। फ़कत मसीह हमें ऐसा प्यार कर सकता है क्योंकि उस की उलूहियत के सबब से उस की मुहब्बत बेपायाँ है अपनी इन्सानियत के बाइस वो हमारे साथ बड़ी मुताबिकत रखता है जो कुछ मसीह ने ज़मीन पर हो के किया मुहब्बत की रु से किया और जो अभी करता है बे-तब्दील मुहब्बत से करता है अगर हमें तंगहाल करे तो ये प्यार से करता है अगर हम पर भारी सलीब लाए तो ये प्यार से करता है। हमसे अपना मुँह छुपाए तो ये भी मुहब्बत से है। चुनान्चे वो कहता है कि मैं जितनों को प्यार करता उन्हें मलामत करता हूँ। इस वास्ते सर-गर्म हो और तौबा कर। ऐ अज़ीज़ ईसा तेरी मुहब्बत मेरे दिल में बढ़ती रहे ताकि मैं तेरी राह-ए-रास्त पर चलूँ।

“मसीह ने हमसे मुहब्बत की और खुशबू के लिए हमारे एवज़ में अपने को खुदा के आगे नज़र और कुर्बान किया।” (इफ़िसियों 5 बाब 2)

## मसीह का फ़ज़ल

“तुम हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के फ़ज़ल को जानते हो कि वो दौलतमंद था और तुम्हारे वास्ते मुफ़्लिस हो गया ताकि तुम उस की मुफ़लिसी से दौलतमंद हो जाओ।” (2 कुरिन्थियों 8 ब 9)

ईसा में उलूहियत की सारी दौलत व हिक्मत व जलाल शामिल है। लेकिन उस ने हमें ऐसा प्यार किया कि मुफ़्लिस हो गया। बल्कि हमारे लिए अपना सब कुछ दिया, चुनान्चे खुद उस ने कहा कि लोमड़ियों के लिए मांदें और हवा के परिंदों के वास्ते बसेरे हैं। पर इब्ने-आदम के लिए जगह नहीं जहां सर धरे। हकीकतन ईसा का फ़ज़ल बेनज़ीर

व बे-बयान है। जो शख्स उस पर जिसने ऐसा फ़ज़ल दिखलाया शक लाए। वो कैसा गुनेहगार होगा, क्या मसीह इस से ज़्यादा क्या कर सकता क्या अपने को और पस्त कर सकता किया और किसी तदबीर से ज़्यादा मुहब्बत ज़ाहिर कर सकता है। ये मुहाल है लेकिन उसने ना सिर्फ हम पर अपना फ़ज़ल यूँ ज़ाहिर किया पर इलावा इस के हमको अपनी मामूरी से फ़ज़ल बख़शा करता है। फ़ज़ल जो वक़्त पर मददगार हो वो देता है। फ़ज़ल की किफ़ायत देता है। ताकि हम भारी मुसीबतें सहें और ज़ोर-आवर दुश्मनों पर ग़ालिब हों। चुनान्चे जब पौलुस हवारी (शागिर्द) ने शैतान की पैक से घूँसा खाया और खुदावन्द से इल्तिमास की कि ये मुझमें से दूर हो जाये तब उस को ये जवाब मिला कि मेरा फ़ज़ल तुझे किफ़ायत करता है। क्योंकि मेरा ज़ोर कमज़ोरी में पूरा होता है। ऐ पढ़ने वाले मसीह के सिवा और कोई तुझे ऐसा फ़ज़ल दिखला नहीं सकता। सिर्फ वही फ़ज़ल दे सकता है ताकि तेरी सारी हाजतों को रफ़ा करे वो फ़ज़ल से भरपूर है और उस की भर पूरी से हम सबने पाया बल्कि फ़ज़ल पर फ़ज़ल फ़ज़ल पाते हैं कि अपनी बुरी खसलतों को मारें और दुनिया पर फ़त्ह करें। और शैतान को अपने पांव तले कुचलें और अपनी फ़ज़ीलातों में जो फ़ज़ल से होतीं खुश हो और अपने फ़राइज़ को बजा लाएं और दिलेरी से मौत को हासिल करें। और मसरूर हो के दुनिया को छोड़ें कि हमेशा मसीह के साथ रहें चाहे कि हम रोज़ बरोज़ ईसा से फ़ज़ल के तालिब हों ताकि हम उस के नाम-ए-मुबारक का जलाल ज़ाहिर करें।

“हमको यकीन है कि हम खुदावन्द ईसा मसीह के फ़ज़ल से नजात पाएँगे।”

(आमाल 15:11)

## मसीह का बेशकीमत लहू

“जिसे खुदा ने आगे से एक कफ़़ारा ठहराया जो उस के लहू पर ईमान लाने से काम आए।” (रोमियों 3:25)

चाहिए कि हम मसीह के लहू पर नज़र-ए-ईमान रखें क़दीम इस्राईलियों की दीनी रसूमात में लहू बक़स्रत इस्तिमाल होता था। हर सुबह और शाम नज़रों के सिवा कुर्बानियों का लहू भी बहाया गया। जब कभी इस्राईली खैमागाह या हैकल में दाखिल होते

थे। वो लहू को देखते थे इसी तरह चाहिए कि ईसा का लहू हमारे सामने रखा जाये। वो ही लहू हमारा कफ़ारा है। उसी से हमको सलामती हासिल हुई और उसी से वो सलामती कायम व दाइम भी रहेगी। हमसे और खुदा से उस के बेटे की मौत के वसीले से मेल (मिलाप) हुआ और सिर्फ़ ईसा का लहू हमें सारे गुनाह से पाक कर सकता है। जिस क्रद हम अपनी निगाह इस लहू पर रखते हैं उसी क्रद दिलेरी से खुदा के पास आ सकते और शैतान पर फ़्तह कर सकते। और दिली आराम हासिल कर सकते हैं हम हर आन गुनाह करते हैं और अपनी सज़ा की सज़ा वारी बढ़ाते हैं और गोया शैतान के हाथ में ऐसा हथियार जिससे वो हम पर ग़ालिब हो देते हैं। और सिर्फ़ आप और गुनाह और शैतान से मुनहरिफ़ हो कर और ईसा के लहू पर लिहाज़ कर के हम माफ़ी और सलामती को हासिल कर सकते हैं और शैतान को अपने पांव तले दबा सकते अगर हम एक घंटा भी इस लहू पर निगाह ना रखें तो ज़रूर किसी गुनाह या इम्तिहान में फंस जाएं मसीह के लहू पर निगाह करने से हमारी हिफ़ाज़त होती है। इस के याद रखने से कि मसीह हमारे गुनाहों के सबब से मुआ और फिर के जिलाया गया ताकि हम रास्तबाज़ ठहरें और ये कि वो हमेशा जीता है कि हमारी सिफ़ारिश करे। हमारी सलामती होती है। चाहिए कि मसीह के बेशक़ीमत लहू पर मेरी नज़रे-दिल रहे और जब शैतान मुझ पर हमला करे या मैं बीमारी में मुब्तला हूँ या मौत की तलातुम में डूब जाऊं तब ऐ ईसा तेरे लहू की याद मुझे तस्कीन व बख़्शो।

“हम उस में हो के उस के खून के बदौलत छुटकारा यानी गुनाहों की माफ़ी उस के निहायत फ़ज़ल से पाते हैं।” (इफ़िसियों 1:7)

## ईसा का हमारे लिए सरदार काहिन होना

“इस सबब से ज़रूर था कि वो हर एक बात में अपने भाईयों की मानिंद बने ताकि वो खुदा की बातों में लोगों के गुनाहों का कफ़ारा करने के वास्ते एक रहीम और अमानतदार सरदार काहिन ठहरे।” (इब्रानियों 2:17)

गुनेहगारों के लिए एक काहिन चाहिए जो कफ़ारा हो के हमें खुदा से मिला सकता है और हमारी दुआएं उस के हुज़ूर पहुंचा सकता है। ऐसा काहिन ईसा है उस ने

हमारे गुनाहों के लिए अपने को कफ़ारे के तौर पर कुर्बान कर दिया। अपनी मौत के वसीले से उस ने हमारे और खुदा के बीच में मेल (मिलाप) कराया और अदल के सारे दाअवों को अदा कर के ऐसी राह खोली है कि जिससे हम खुदा के पास जा सकते हैं और वो हमें कुबूल कर सकता है उस के कफ़ारे के सबब से खुदा जो कामिल रास्त है गुनेहगारों को रास्त ठहराता है। अपने लहू के वसीले से ईसा ने हमारा मेल (मिलाप) कराया और अपनी सिफ़ारिश से वो इस मेल (सुलह) को सलामत रखता है। वो रहीम है। पस हमारे साथ दिल सोज़ी करता है। और हमारी सारी कमज़ोरियों और आजमाईशों और तकलीफों में हमारे साथ हम्ददी करता है वो वफ़ादार है और अपने वाअदों को पूरा करता है अपने ओहदे पर इज़ज़त बख़्शता है। अपने कलाम के मुताबिक़ करता रहता है और सभों के जो उस पर ईमान लाते हैं हाल की कबूलियत और आइन्दा की नजात कायम करता है। अब लहू बहाना और कफ़ारे के तौर पर दुख उठाना ना चाहे। अपने बेटे के काम से बाप का गुस्सा ठंडा हो गया। और जो कुछ वो ईमानदारों के लिए करता है मुहब्बत की रु से करता है। ऐ मेरी जान में तुझे ताकीद करता हूँ कि और सारे काहिनों और कुर्बानियों को छोड़ के ईसा और उस के कामिल कफ़ारे पर तकिया कर क्योंकि उस ने एक ही नज़्ज़ गुज़राने से मुक़द्दसों को हमेशा के लिए कामिल किया। मसीह के सिवा तेरा दूसरा नहीं।

“हमारा सरदार काहिन ऐसा नहीं जो हमारी सुस्तियों में हम्दद ना हो सके बल्कि गुनाह के सिवा सारी बातों में हमारी मानिंद आजमाया गया।”

(इब्रानियों 4:15)

## ईसा हमारी सदाक़त होना

“उस का नाम ये रखा जाएगा खुदावन्द हमारी सदाक़त।” (यर्मियाह 23:6)

बज़ाता कोई रास्तबाज़ नहीं है एक भी नहीं। हम अपने आप ऐसी रास्तबाज़ी हासिल नहीं कर सकते जिसमें खुदा के हुज़ूर सादिक़ ठहरें। लेकिन अगर हमको ऐसी रास्तबाज़ी जो शरीअत के सारे दाअवों को अदा करेगी। हासिल ना हो तो खुदा हमें रास्तबाज़ ठहराएगा, बल्कि हमें रास्त ठहरा नहीं सकता। पस ऐसी रास्तबाज़ी कहाँ से

मिलेगी। इस का जवाब ये है कि ईसा मौत तक फ़रमांबर्दार हो के अपने लोगों के लिए ये रास्तबाज़ी हासिल कर चुका वो रास्तबाज़ी इन्जील में हम पर ज़ाहिर होती है। ईमान के हाथ से हम उसे पकड़ सकते हैं और खुदा उसे हमारी रास्तबाज़ी जानता है। वो हमारे हिसाब में गिनी जाती हैं। और इसी तरह हम रास्तबाज़ ठहरते हैं हमारी रास्तबाज़ी ईसा से है। अगर हम अपनी रास्तबाज़ी का सबब दर्याफ़्त क्या चाहते हैं तो अपने पर नहीं मसीह पर लिहाज़ करना चाहिए। जब तमीज़ इल्ज़ाम दे तो चाहिए कि उस के इल्ज़ाम पर ये हुज्जत (दलील) करें कि हमारे लिए ईसा ने दुख उठाया और मर गया। जब शैतान हमें आजमाए और सताए तब ईसा पर निगाह करना चाहिए, जब मौत नज़र आए और अदालत का खौफ़ घबराए तब भी चाहिए कि ईसा के कामिल कफ़ारे पर तकिया (भरोसा) करें और उस की खातिर से बचने की उम्मीद रखें। आदम की नाफ़र्माबर्दारी से हम गुनेहगार ठहराए गए और मसीह की फ़रमांबर्दारी से हम रास्तबाज़ ठहरते हैं। चुनान्चे लिखा है कि शरीअत की गायत ये है कि मसीह हर एक ईमानदार की रास्तबाज़ी हो इसी से सब जो उस पर ईमान लाते हैं। रास्तबाज़ी पाते हैं। उन पर गुनाह गिना नहीं जाता उन्हीं को बगैर आमाल के रास्तबाज़ ठहराता है। हमारे रास्तबाज़ होने की निस्बत फ़क़त मसीह काम आता है। हमारे आमाल नहीं हमारे दुख नहीं फ़क़त मसीह अमल करने वाला वो है और उस के आमाल के फल हमको मिलते हैं।

“तुम ईसा मसीह में हो के उस के हो।” (1 कुरिन्थियों 1:30)

## ईसा का हमारी पाकीज़गी होना

“वो हमारे लिए खुदा की पाकीज़गी है।” (1 कुरिन्थियों 1:30)

पाक होने से दुनिया से अलग होना और खुदा की ख़िदमत के लिए मख़सूस किया जाना और खुदा से मुशाबहत रखना मुराद है। ईसा हमारी पाकीज़गी की अस्ल और जड़ है। जैसा हम उस में मिलाए गए और रास्तबाज़ ठहराए गए वैसा ही हमारी पाकीज़गी उस से निकलती है। पाकीज़गी से साफ़ होना मुराद है और वो हमें पाक-साफ़ कर सकता है। इस से मुराद धोना है, चुनान्चे रूह-उल-कुद्स से गुस्ल दिलाए गए इस से मुराद अलग करना है। चुनान्चे लिखा है कि इस वास्ते ईसा भी ताकि लोगों को अपने लहू से पाकीज़गी बख़्शे फाटक के बाहर मारा गया जो हमें पाक करता है। सो रूह-ए-पाक ही

वसीला जिससे पाकीज़गी होती है। मसीह की सच्चाई है नज़ीर (मिसाल) जिस पर लिहाज़ करने से पाकीज़गी बढ़ती जाती है। मसीह है हमारी सारी पाकीज़गी। उसी से है और उस से पैवस्ता होने के बग़ैर पाकीज़गी हासिल नहीं हो सकती। पैवस्ता मार्फ़त डालियां दरख़्त से अपनी परवरिश पाती हैं। और बदन में सर और उज़ूओं के बीच ऐसा ही मेल (मिलाप) हुआ है इसी तरह हम ईसा से मिलकर उस से ज़िंदगी और सलामती और पाकीज़गी बल्कि हर एक बरकत पाते हैं। इस के बमूजब खुद ईसा ने कहा कि मुझसे जुदा तुम कुछ नहीं कर सकते बग़ैर उस के लहू भी हमारे लिए कफ़ारा नहीं है। बग़ैर उस के पाकीज़गी का लिबास पहने खुदा के हुज़ूर मक़बूलियत नहीं हो सकती। उस से मिलने के बग़ैर पाकीज़गी कहीं नहीं मिल सकती वो हमारा बदला हुआ हमारा फ़िदया दिया रूह-ए-पाक के वसीले से हमें जिला दिया वही रूह भी हमें दिया करता और हमें इस लायक करता है कि हम नूर यानी पाकीज़गी में मुक़द्दस लोगों के साथ मीरास पाएं। अगर हम पाक हुआ चाहते हैं तो चाहिए कि ईसा पर निगाह करें उस से फ़ज़ल पाएं उस के साथ चले जाएं उस के नक़शे क़दम पर हो लें। और बहर तरह (इसी तरह) उस के जलाल के तालिब हों।

“हम उस की कारीगरी हैं और मसीह ईसा में हो के अच्छे कामों के वास्ते पैदा हुए जिनके लिए खुदा ने हमें आगे से मुक़रर किया था, ताकि हम उन्हें किया करें।” (इफ़िसियों 2:10)

## ईसा का हमारी हिक्मत होना

“वो हमारे लिए खुदा की हिक्मत है।” (1 कुरिन्थियों 1:30)

खुदा ने ईसा को इस क़द्र तक किफ़ायत बख़शी कि वो हमारी सारी इहितयाजों के रफ़ा करने के काबिल हो। ईसा हमारी हिक्मत है। उस में हिक्मत और मार्फ़त के सारे खज़ाने छुपे हैं और ये हिक्मत सबकी सब हमारे काम आती है उस के वसीले से ईसा हमारी मुहब्बत को दुनिया की तरफ़ से अपनी तरफ़ खींचता है और हमारे पांव को फिसलने से रोक कर हमें राहे रास्त पर साबित-क़दम चलाता है। अपनी हिक्मत के वसीले से उस ने हमारा मेल और क़बूलियत खुदा के साथ कराई इसी हिक्मत से वो

हमारे दुश्मनों को गारत करता है और इस के सबब से बारगाह आस्मान में हमारा मुकद्दमा दुरुस्त होता है। अपनी हिक्मत की मार्फत वो हमें राह-ए-हक़ बताता है। अपनी हिक्मत से वो आलम के ऊपर सल्तनत करता है। और हमारी भलाई के लिए सारी बातों का इंतज़ाम करता है। ग़ौर के लायक़ ये भी है कि ईसा ना फ़क़त अपनी हिक्मत हमारे लिए सर्फ़ करता है बल्कि हमें भी इस का एक हिस्सा दिया करता है और उसे हासिल कर के हम आने वाले ग़ज़ब से भागते हैं और इस जाए-पनाह को जो इन्जील में हम पर ज़ाहिर है। ढूँढते हैं और ईसा से मिलना चाहते हैं और उस को अपनी रास्तबाज़ी और पाकीज़गी और ख़लासी जानते हैं। कलीसिया की हिक्मत उस के सुरमें है और ये सर मसीह है। हमारी हिक्मत मसीह में है और चाहिए कि वो मसीह से हमको मिले वो इन्सान और फ़रिश्तों की हिक्मत से अजीब-तर है। ऐ मेरी जान तू याद रख कि फ़क़त मसीह तेरी हिक्मत है उसे हासिल करने के लिए मसीह के पास जाना चाहिए। उस को उसी से माँगना चाहिए और मांग के हम उस का ये वाअदा पेश करें कि ख़ुदाया तू ने कहा है कि अगर तू मार्फ़त के लिए पुकारेगा। और चिल्ला के फ़हमीदा (हिक्मत, दानिशमंदी) का तालिब होगा और अगर उसे यूँ ढूँढेगा जिस तरह रूपये को ढूँढते हैं और यूँ उस की तलाश करेगा। जिस तरह गंज निहां (ख़ज़ीना, गोदाम, ख़ज़ाना, अनाज) की तलाश करते हैं तब तू ख़ुदावन्द के ख़ौफ़ को समझेगा और ख़ुदा की शनासाई को पाएगा।

“अगर कोई तुम में से हिक्मत में नाक़िस हो तो ख़ुदा से मांगे जो सबको सखावत के साथ देता और मलामत नहीं करता है कि उस को इनायत होगी।” (याक़ूब 1:5)

## ईसा का हमारी ख़लासी होना

“वो हमारे लिए ख़ुदा की ख़लासी है।” (1 कुरिन्थियों 1:30)

हम सब के सब शैतान के गुलाम और गुनाह के जालों में गिरफ़्तार थे शैतान ने हमें जीता शिकार किया ताकि उस की मर्ज़ी पर चलें गुनाह मुतफ़रिक् सूरतों से हमें जंजीरों से बाँधता था। शैतान के ताबे हो कर हम ख़ुदा के बागी और उस के तख़्त व सल्तनत के नमक-हराम हुए। अदल ने हमारी रिहाई के लिए फ़िदया का दावा किया। तब



ईसा हमारा फ़िदाकार बना वो मुजस्सम हो के दुनिया में आया और दुख उठा के और अपना लहू बहा के उस ने हमारे कफ़ारे के लिए अपनी जान दी। तब वो आस्मान में फिर गया ताकि रूह-उल-कुद्स हम पर नाज़िल करके हमें ना सिर्फ़ गुनाह के इल्ज़ाम बल्कि उस की ज़बरदस्ती से भी रिहाई बख़्शे। अपने जाने के वक़्त उस ने हुक्म फ़रमाया कि इन्जील अबदी जो उस की मुहब्बत की बहुतायत और हमारे कफ़ारे का दाम और उस जलाल की अजाइबात जो ईमानदार की मीरास ही इशारा करती है हर कहीं सुनाई जाये। लेकिन अगरचे हमने गुनाह से रिहाई पाई और शैतान की हुक्मत के तले नहीं हैं तो भी गुनाह के सबब से हमें मरना है, लेकिन मसीह के वसीले से बदन फिर जियेगा। फ़िद्ये का दाम जो दिया गया सो ना सिर्फ़ रूह के बल्कि बदन के लिए भी दिया गया। पस इस का जी उठना यकीनी बात है। चुनान्चे लिखा है कि जो मसीह में हो के मुए (मरे) हैं वो पहले उठेंगे। हाँ क्रियामत के दिन रास्तबाज़ अपने दुश्मनों पर सलतनत करेंगे। फ़क़त मसीह हमारी ख़लासी है। उस ने अहद बांध के अपने अहद को पूरा किया और हमारे कफ़ारे का दाम खुशी से दिया रूह-ए-पाक की मार्फ़त उस ने हमें तारीकी की हुक्मत से बुलाया आख़िर को हमें कब्र से उठा के और अपनी बादशाहत जलाली में दखल दे के और हमें बेदाग़ और बेऐब कर के वो हमको खुदा के हुज़ूर में हाज़िर करेगा।

“मैं उन्हें पाताल के क़ाबू से फ़िद्या में लूँगा मैं उन्हें मौत से छुड़ाऊँगा। ऐ मौत तेरी मरी कहाँ है ऐ पाताल तेरी हलाकत कहाँ पछताना मेरी आँखों के सामने से छिपा है।” (होसेअ 13:14)

## ईसा का हमारा सालिस होना

“हमारे दर्मियान कोई सालिस नहीं जो अपने हाथ दोनों पर धरे।”

(अय्यूब 9:33)

मुसीबतज़दा अय्यूब एक सुलह-कार का मुहताज था। यानी ऐसे शख्स का मुहताज जो उस के और खुदा के दर्मियान हो के सुलह कराए हर एक कैद की गई जान को ये हाजत है, लेकिन हम नहीं कह सकते कि कोई सुलहकार नहीं क्योंकि ऐसा है। जो हमारी

हाजत रफा करने के लायक है वो इलाही हो के जैसा हम-सर हम-सर के साथ खुदा से मुआमला कर सकता है और इन्सान हो के हमारे साथ हम्दर्दी कर सकता है और हमारी एहतियाजें खुदा के हुज़ूर में ज़ाहिर कर सकता है। वो हमारे और खुदा के दर्मियान आता है एक हाथ से हमारे लिए खुदा को नज़रीन गुज़रान कर उस को मनाता है और दूसरे हाथ से हमें हमारे गुनाहों की माफ़ी की सनद बख़्शता है। वो सुलह करता है सारे एतराज़ों को ले जाता है उस के हम पर हाथ रखने से कुछ डर नहीं। ऐ पढ़ने वाले अगर तू खुदा के पास जाने से डरता है अगर उस की बुजुर्गी तुझे दहशत देती है। या उस का कहर तुझे डराता तो तूझे डरना ना चाहिए। एक जो इलाही है पर तो भी तेरी ज़ात में है। खुदा के तख़्त के सामने नज़र आता है। ईसा तेरा सुलहकार वहां हाज़िर है अपना मुआमला उस के सपुर्द कर तो तू ग़ालिब होगा। उस के साथ हुज्जत कर और तेरे लिए वो बाप के साथ हुज्जत करेगा। वो अदल के दाअवों को घटाना ना चाहेगा। पर तेरे सारे गुनाहों के लिए पूरा बदला देगा। वो अपने बाप के चेहरे पर से पर्दा उठाएगा। और तुझ पर ज़ाहिर करेगा कि खुदा मुहब्बत है। फ़क़त मसीह को अपना सुलहकार और माँझी और शफ़ी होने दे वो इस काबिल है और किसी दूसरे में काबिलियत नहीं। ऐ आज़मूदा (आज़माया हुआ) अपना सर उठा ईसा तख़्त के आगे मौजूद है वो तेरे और पाक खुदा के दर्मियान खड़ा रहता है कुछ डर नहीं जो तुझसे तलब किया गया। सो उस ने भर दिया है उस ने तेरा जुर्माना अदा किया और हमेशा जीता है कि तेरी सिफ़ारिश करे।

“कि खुदा एक है और खुदा और आदमियों के बीच एक आदमी दर्मियानी है वो मसीह ईसा है।” (1 तीमुथियुस 2:5)

## ईसा का हमारा वकील होना

“अगर कोई गुनाह करे तो ईसा मसीह जो सादिक है बाप के पास हमारा वकील है।” (1 यूहन्ना 2:1)

गुनेहगारों के लिए सिफ़ारिश करना हमेशा दरकार है। चुनान्चे ईसा उनका सिफ़ारशी हमेशा जीता है कि उन की सिफ़ारिश करे। लेकिन जब किसी ख़ास वक़्त में हम तख़्त-ए-अदालत के आगे लाए जाते हैं और कोई हमारा मुद्दई होके हम पर इल्ज़ाम

देता है। तब हमारे लिए वकील निहायत जरूर है। ईसा ऐसा वकील है वो शैतान को जो ईमानदारों का मुद्दई है जवाब देता है और उस को मग़्लूब करता है। वो अपना ताबे होना और लहू बहाना हमारे लिए हुज्जत करता है और इसी बाइस से हमारे लिए रिहाई हासिल करता है। फ़र्ज करो कि ईमानदार शैतान के इम्तिहान में फंस जाये तो बारगाह आस्मान में ईसा उस का वकील है। उस के लोगों के लिए ये बड़ी खातिरजमा का और शैतान के लिए महज़ हैरानी का बाइस है। ऐ मेरी जान खुशी कर कि तेरे खुदा ने तेरी सारी इहितयाजों के लिए तदबीर की है। यहां तुझे बहाली और खुशहाली मिलती है और आखिरकार नजात अबदी मिलेगी। ईसा तेरा सब कुछ है तेरा मुकद्दमा उस के हाथ में है और उस के वसीले से तू गलबा करेगा। वो तेरे मुद्दई को लाजवाब करेगा। वो तेरे सारे गुनाहों के लिए कुल्ली माफ़ी पाएगा। वोह तुझे खुदा के हुज़ूर रास्त ठहराएगा। इसलिए फ़कत मसीह की तरफ़ देखता रह, तारीकी में, आजमाईश में, बल्कि उस वक़्त जब तू गुनाह में फंस गया हो तो ईसा की तरफ़ देख और उस को वकील जान कर उस पर तकिया (भरोसा) कर वोह तेरी सुनेगा। तेरा इकरार करेगा। तेरा मुकद्दमा पेश करेगा। और तुझे रिहाई दे के तेरा चेहरा अपने चेहरे के जल्वे से जलवागर करेगा। ऐ अज़ीज़ खुदावन्द तू जो अपने लोगों का वकील है जैसा तूने हमेशा अपने भटके हुआओं के मुकद्दमे को पेश किया है वैसा ही मेरा मुकद्दमा अपने ज़िम्मे ले और मुझे मेरी मुश्किलात से रिहाई दे ताकि मैं हमेशा तक अपने और तेरे बाप की हुज़ूरी में रहूं। ऐ रूह-ए-पाक ईसा के इस ओहदे जलील को मुझ पर ज़ाहिर कर।

“क्योंकि मसीह उस पाक मकान में जो हाथों से बनाया गया और हकीकी मकान का नमूना है दाखिल नहीं हुआ बल्कि आस्मान ही में ताकि अब से खुदा के हुज़ूर हमारे लिए हाज़िर रहे।” (इब्रानियों 9:24)

## ईसा का हमारा तबीब होना

“ईसा ने उन्हें कहा कि भले चंगों को हकीम दरकार नहीं बल्कि बीमारों को।”  
(मती 9:12)

ईसा के सिवा कोई दूसरा तबीब (हकीम) गुनाह आलूदा जान को चंगा नहीं कर सकता। इस का बल्सान सिर्फ उस का लहू है और फ़क़त उसी से उस को सेहत मिलती है तमाम जहान के बाशिंदों को ख़बर होती जाती है कि हर इक़लीम (मुल्क, विलायत) और क़ौम और ज़बान के गुनेहगार मसीह के पास आएँ और चंगे हो जाएँ। वो गोया हमारे घर का तबीब है, चुनान्चे लिखा है कि वाअदा तुमसे और तुम्हारे लड़कों से है कुछ ज़रूर नहीं कि जब तक कोई मोहलिक मर्ज़ हमको ना पकड़े उस के पास ना जाएँ। हम तो अपनी सारी मुसीबत में ख़्वाह सर की ख़्वाह दिल की हो उस के पास जाएँ और वो ऐसी दवा देगा, जिससे हमको आराम मिलेगा। ये ना समझना चाहिए कि अपने आपको चंगा कर सकते हैं बल्कि फ़ौरन ईसा के पास जाएँ बीमार जो उस के पास गए वो सब के सब चंगे हुए। किसी आर्ज़मंद को उस ने कभी नहीं कहा कि मैं तेरी मदद नहीं कर सकता। पर हिक्मत व शऊर ला-सानी से वो हर एक को जो रूहानी सेहत का तलबगार हो रूहानी सेहत देता है, बल्कि मुफ़्त देता है। फ़क़त मसीह इस काबिल है कि हमारा तबीब (हकीम) हो। फ़क़त मसीह इस ओहदे पर मुक़र्रर किया गया। उन मुक़ददसों को जो अभी जलाल में पहुंच गए फ़क़त मसीह के वसीले गुनाह से रिहाई मिली। हम भी उस के पास जाएँ हर वक़्त और हर हाल में हमारी मुसीबत बड़ी या छोटी कितनी ही क्यों ना हो हम ईसा मसीह के पास जाएँ। हम अपने बीमार दिल को उसी के पास ले जाएँ और वो उन्हें चंगा करेगा। वो हमारे दिलों की सुस्ती और कम निगाही और गुमराही और ढलाई को मिटा सकता है और उन्हें मिटाएगा। ये ना समझना चाहिए कि हमारे लिए सेहत नहीं है।

“देख मैं उसे सेहत और शिफ़ा बख़्शुंगा मैं उन्हें चंगा करूँगा और अमान और सच्चाई की कस्रत उन पर ज़ाहिर करूँगा।” (यर्मियाह 33:6)

## ईसा का हमारा चौपान होना

“मैं उन के लिए एक चौपान (चरवाहा) मुक़र्रर करूँगा। और वो उन्हें चराएगा।” (हिज़्कीएल 34:23)

जैसा गल्ले की सदा खबर लेना और उस की हिमायत करना चाहिए वैसा ही ईमानदार की हिमायत और हिदायत करना ज़रूर है। बज़ाते वो गुमराह होने पर माइल रहता है। वो मर्ज़ के हाथ में है और होशियार और ज़ालिम दुश्मनों के खतरे में बेशक उस के लिए चौपान और निगेहबान ज़रूर है। इस ओहदे पर ईसा अपने बाप की तरफ़ से मख़सूस किया गया उस ने उस ओहदे को ले लिया और अपनी भेड़ों का चौपान बना अपने इस ओहदे को वो इज़ज़त बख़्शता है। वो अपने गल्ले का शुमार और इस में हर एक का नाम और अहवाल जानता है। उसने अहद बाँधा है कि मैं उनकी खबर लूँगा, उन को चरा दूँगा, उनकी हिमायत करूँगा और अपने बाप के हुज़ूर उन्हें कामिल कर के पहुंचा दूँगा। वो अपने काम को कभी ना छोड़ेगा। वो अपने काम में खुश होता है। अपने गल्ले को प्यार करता है उस को चराता है बरों को अपने हाथ से फ़राहम करता और अपनी गोद में उठा के ले चलता और उन को जो बच्चे वालियाँ हैं मुलाइमियत से ले जाता है। उस की ऐसी होशियारी और खबरदारी है कि अगरचे हज़ारों भटक गए तो भी उस के गल्ले में से एक भी खोया ना गया और कभी एक खोया ना जाएगा। वो अपनों को हरी चरागाहों में बिठाता है और राहत के चश्मों के पास उन्हें ले जाता है। वो उन पर खुश होता है कि उनकी भलाई करे। ऐ मेरे दोस्त क्या तू ईसा के गल्ले का है क्या तू गडरिये की आवाज़ जानता है। जब वो बुलाता है क्या तू जल्द आता है और उस के पीछे चला जाता है। क्या तू फ़क़त मसीह को अपना निगेहबान जान कर परवरिश और रहनुमाई और हिमायत और हिदायत और नजात अबदी के लिए उसी पर भरोसा रखता है? जो ऐसा हो तो तू खुशहाल है और तेरा इस्तिक़बाल जलाल से भरा है अपने चौपान के नज़दीक हो हमेशा उस की आवाज़ सुनता रह।

“अच्छा गडरिया (चरवाहा) मैं हूँ अच्छा गडरिया (चरवाहा) भेड़ों के लिए अपनी जान देता है।” (यूहन्ना 10:11)

## ईसा का हमारा नमूना होना

“मसीह भी हमारे वास्ते दुख पा के एक नमूना हमारे लिए छोड़ गया है ताकि तुम उस के नक्शे क़दम पर चले जाओ।” (1 पतरस 2:21)

अक्सर औकात ईसाई दीन को उस के मकरून (करीब) की बद रविश (बुरे ढंग) से नुकसान पहुंचा वो पुरानी इन्सानियत को उस के फ़ेअलों समेत उतार नहीं फेंकते और नई इन्सानियत को जो मार्फ़त में अपने पैदा करने वाले की सूरत के मुवाफ़िक़ नई बन रही है नहीं पहनते, इकरार तो करते हैं कि मसीह हमारा नजातदिहंदा है पर तो भी उस के पीछे नहीं हो लेते, लेकिन ये दो बातें आपस में बड़ी निस्बत रखती हैं, जिसने हमारे लिए अपनी जान दी खुद अपने को एक नमूना हमारे लिए छोड़ गया है ताकि हम उस के नक़शे क़दम पर चले जाएं चाहिए कि फ़क़त मसीह हमारा नज़ीर (मिसाल) हो और हमारी ये गर्ज़ हो कि उस की सूरत में बनें जो सच्चे ईसाई हैं। सो मसीह की मानिंद होते जाते हैं। चुनान्चे वो कहता है कि मुझ ही से सीखो ना सिर्फ़ उस की तालीम से बल्कि उस की सारी रविशों से सीखना चाहिए जैसा वो करता है वैसा ही हमको भी करना चाहिए। रूह-उल-कुद्स का एक काम ये है कि वो हम पर ईसा को ज़ाहिर करता है और अपनी हिदायत से हमें ईसा की मानिंद बनाता है। उस की मदद मांग के चाहिए कि रोज़ बरोज़ मिज़ाज और चाल चलन में मसीह की पैरवी करते रहें। जो मुझे दुख उठाना पड़ता है तो पूछना चाहिए कि मसीह के दुख उठाने में कैसी चाल थी ताकि फ़ज़ल मांग के उस की मानिंद दुख सहूँ जो खुदा के लिए काम करना पड़ता है तो दर्याफ़्त करना चाहिए कि मसीह ने क्यूँ-कर काम किया ताकि उस की मानिंद करूँ। इसी तरह मेरी ज़िंदगी का गोया एक अक्स हो और मेरी चाल उस की सी हो चाहिए कि हमारा ये मंशा व मतलब हो ये खुदा के फ़ज़ल से हो सकता है और वो फ़ज़ल पर फ़ज़ल देगा। हम तरक्की करते चले आए हैं और आइन्दा को भी होते होते मसीह की सूरत में बन जाएंगे। ऐ रूह-उल-कुद्स हमें हमारे अज़ीज़ खुदावन्द की मानिंद ठीक-ठीक बना।

“इसलिए मैंने तुम्हें एक नमूना दिया है ताकि जैसा मैंने तुमसे किया तुम भी करो।” (यूहन्ना 13:15)

## ईसा का हमारी नजात का पेशवा होना

“उस को जिसके लिए सब कुछ है और जिसके वसीले सारी चीज़ें मौजूद हैं ये मुनासिब था कि जब बहुत से फ़रज़न्दों को जलाल में लाए उन की नजात के पेशवा को अज़ीयतों से कामिल करे।” (इब्रानियों 2:10)

ईमानदार रूह-उल-कुदूस के वसीले से सर-नौ पैदा हो के जलाल को पहुँचेंगे। अब रूहानी लड़ाई लड़ते हैं। हमारा पेशवा ज़िंदगी का मालिक है अपने दुखों के वसीले से ईसा ने इस काम के लिए तैयारी हासिल की। और वो हमें हमारे घर पहुंचाने के काबिल है। वो हमारी तबीयत और अहवाल और दुश्मनों और मुश्किलों से वाकिफ़ है। एक दफ़ा उस ने हमारे लिए फ़तह पाई पर हम में हो के फ़तह पाएगा। कभी उस का कोई सिपाही हलाक ना हुआ जंग होने के बाद जब सब हाज़िर किए जाएंगे। तब मालूम होगा कि उनमें से जो उस के झंडे तले लड़ते थे एक भी गैर-हाज़िर नहीं सब के सब उस के गिर्दागिर्द होके अपना ग़ालिब होना उस की मार्फ़त समझेंगे। ऐ पढ़ने वाले अगर ईसा तेरा पेशवा है तो वो तुझे शैतान से मुकाबला करने की ताकत देगा चाहिए कि तू उस पर ग़ालिब हो गुनाह के मुकाबले करने की ताकत देगा। तुझे उस को मग़्लूब करना चाहिए। तेरे लिए हथियार बना के वो तुझे जंग करने को बुलाता है। उस ने वाअदा किया है कि जो ग़ालिब होता है मैं उसे अपने तख़्त पर अपने साथ बैठने दूंगा। चुनान्चे मैं भी ग़ालिब हुआ और अपने बाप के साथ उस के तख़्त पर बैठा। यशूअ की रहनुमाई से मुल्क कनआन बनी-इस्राईल को मिला और जो ईसा हमारा रहनुमा हो तो आस्मान पर उस का सारा जलाल हमको मिलेगा। शुरू में वो इस जंग में पेशवा था और वो उसे अंजाम तक पहुंचाएगा। चाहिए कि हम उस की पैरवी कर के ब-हिम्मत लड़ते रहें, चाहिए कि खुदा के सारे हथियार बांधें ताकि शैतान के मन्सूबों के मुकाबिल कायम रह सकें। हम अपने पेशवा पर निगाह करते रहें और उस के और अपने दुश्मनों को अपने दिलों में जगह ना दें रात बहुत गुज़र गई है और सुबह नज़्दीक हुई। पस हम अंधेरे के कामों को तर्क करें और रोशनी के हथियार बांधें।

“अब उस के लिए जो तुमको गिरने से बचा सकता और अपने जलाल के हुज़ूर कामिल खुशी से तुम्हें बेऐब खड़ा कर सकता है जो खुदा-ए-वाहिद हकीम और हमारा बचाने वाला है जलाल और कुदरत और इख़्तियार अब से अबद तक हो आमीन।” (यूहन्ना 1:24-25)

## ईसा का अपने लोगों के लिए अहद का पूरा करने वाला होना

“मैं तुझे उम्मत का अहद और क़ौमों का नूर ठहराऊंगा।” (यसअयाह 42:6)

अक्सर लोगों को तरह-तरह के ओहदों की तालीम की निस्बत जो बाइबल में मिलती है फ़िक्र और अंदेशा है जो मैं ईसा को खुदा का अहद जानता तो मुझे फ़िक्र नहीं होती। वो कहता है कि मैंने अपने बरगुज़ीदा से अहद बाँधा। फिर कहता है कि इस की सुनो, अगर कोई खुदा का अहद बखूबी समझे तो चाहिए कि ईसा की सुने और उस पर ग़ौर करे। वो कहता है कि जिसने मुझे भेजा है, उस की मर्ज़ी ये है कि हर एक जो बेटे को देखे और उस पर ईमान लाए हमेशा की ज़िंदगी पाए और मैं उसे आखिरी दिन उठाऊंगा। इस अहद का जो बाप और बेटे के बीच बाँधा गया ये बयान हो सकता है कि गुनेहगार की फ़रमांबदारी और दुख उठाने और मर जाने के एवज़ में खुदा ईसा की फ़र्मांबरदारी और दुख उठाने और मर जाने को कुबूल करता है और ये वाअदा करता है कि मैं सभों को जो मसीह पर ईमान लाएँगे। हयात-ए-अबदी दूंगा। जितना अदल गुनेहगार से दावा करता है उतना ही ईसा अदा करता है और जो कुछ गुनेहगार से दरकार हो वो ईसा की खातिर से दिया जाता है। जो मैं ये कुबूल करूँ कि ईसा को अपना शफ़ी जानूँगा। और अपने माफ़ होने और रास्तबाज़ ठहराने और पाक हो जाने के लिए उस के लहू बहाने और ताबे होने पर भरोसा करूँगा। तब खुदा ईसा की खातिर मुझे कुबूल करेगा। और मेरे गुनाहों को माफ़ कर के मुझे रास्त ठहराएगा। इस तरह खुदा मसीह में हो के गुनेहगारों को अपने साथ मिला लेता है कि वो उनकी तकसीरों (ग़लती) को उन पर हिसाब नहीं करता और वो जो गुनाह से वाकिफ़ नहीं था। हमारे बदले गुनाह ठहरता कि हम उस के सबब इलाही रास्तबाज़ ठहरें। इसी तरह खुदा मसीह में हो के रास्त रहे और उसे जो ईसा पर ईमान लाए रास्तबाज़ ठहराए फ़क़त मसीह में अहद की सारी शर्तें पूरी हुईं। और उसी के वसीले से अहद की सारी बरकतें ईमानदारों को पहुँचती हैं।



“अपना कान झुकाओ और मेरे पास आओ सुनो और तुम्हारी जान जीती रहेगी और मैं तुम्हारे साथ अबदी अहद बांधूंगा। यानी दाऊद की सच्ची मेहरबानियां।” (यसअयाह 55:3)

## ईसा का हमारा पेशवा होना

“जहां पेशतर व ईसा जो मलिकेसिदक़ की तरह हमेशा के लिए सरदार काहिन है हमारे वास्ते दाखिल हुआ।” (इब्रानियों 6:20)

ईसा महज़ मुहब्बत से हमारे लिए नजात हासिल करने को ज़मीन पर आया और फिर आस्मान पर हमारा पेशरु हो के चला गया। वोह ना सिर्फ़ राह दिखलाता है बल्कि खूद उसी राह पर चला जाता है। हर एक रोक-टोक जिस पर हम गालिब ना हो सकते थे वो उठा ले गया और उस के नक्श-ए-क़दम पर निगाह कर के हमको उस की पैरवी करना चाहिए। हमें कुड़कुड़ाना ना चाहिए कि उसी राह पर जिस पर ईसा चला गया, हमको भी चलना पड़ता है। उस ने हमारे लिए आस्मान में दाखिल हो के हमारे लिए आस्मान का दरवाज़ा भी खोला ताकि हम उस की पैरवी कर के दखल पाएं वो राह को आशकार (ज़ाहिर) करता है और कहता है कि इसी पर चलते रहो। वो उस मकान का जहां वो सुकूनत करता है। बयान कर के कहता है कि जहां मैं हूँ तुम भी होगे। ऐ अज़ीज़ शफ़ी ऐ पेशरु जलील हमको फ़ज़ल इनायत कर ताकि तेरी पैरवी करें और जब हम पर आज़माईश पड़ती है तो तू हमें याद दिला कि मैं ही उसी राह पर तुम्हारे आगे चला और अब तुम्हारे लिए जगह तैयार कर के अपने बाप के घर में हाज़िर हूँ ताकि तुम्हें अपनी हुज़ूरी और जलाल में दाखिल करूँ। ईसा आगे गया कि हमारे आने की खबर दे वो सारे राह की हाजत को रफ़ा करता है। फ़क़त मसीह ऐसी मुहब्बत और फ़िक्रमंदी दिखला सका। ऐ मेरी जान अपने पेशरु जलील पर निगाह रख और उस पर ताकने वाले हो कर उस दौड़ में जो तेरे सामने आ पड़ी है, दौड़ती जा अपनी सारी मेहनतों में आने वाले आराम पर सोचती रह अपनी लड़ाईयों में आने वाली फ़तह पर ध्यान कर और जब तुझे फिर ने का इम्तिहान हो तो ईसा के नक्श-ए-क़दम को ढूँढ कर उस के पीछे चलती रह। वो तो तमाम राह में दिखलाई देगा। ऐ रूह-उल-कुद्स हमारी मदद कर कि हम ईसा पर सोचें और उस पर तकिया (भरोसा) कर के उस के उम्मीदवार हों।

“पस जिस हालत में हमारा एक ऐसा बुजुर्ग सरदार काहिन जो अफ़लाक से गुज़र गया खुदा का बेटा ईसा है तो चाहिए कि हम अपने इकरार पर साबित-क़दम रहें।” (इब्रानियों 4:14)

## ईसा का क्रियामत होना

“क्रियामत और ज़िंदगी में ही हूँ जो मुझ पर ईमान लाए अगरचे वो मर जाये जियेगा।” (यूहन्ना 11:25)

इंसान ने गुनाह किया और इसलिए मरते जाते हैं ईसा मुआ और इस सबब से इन्सान जी उठेंगे। क्रियामत की तालीम तालीम अज़ीज़ है मार्या ने इस तालीम को कुबूल किया पर सोचते थे कि एक वक़्त सब जी उठेंगे और उस वक़्त तुज मुर्दे रहेंगे, चुनान्चे अपने भाई लाज़र के हक़ में उस ने कहा कि मैं जानती हूँ कि क्रियामत में पिछले दिन फिर उठेगा। तब ईसा ने कहा कि क्रियामत में ही हूँ। वो मौत पर इख़्तियार रखता है। वो क़ब्र की कुंजी रखता है। मुर्दों को फिर ज़िंदा करना उस के काबू में है। वो हमको उठाएगा। उस मेल (सुलह) की तासीर से जो हमारे और उस के दर्मियान होता है। वो हमें ठीक अपनी ही मानिंद उठाएगा। हमारे बदन रूहानी होंगे। उन में ना दुख ना दर्द ना किसी तरह की बद-सूरती होगी। वो ख़ूबसूरत और कामिल और जलील होंगे। ईसा के जी उठने के सबब से हम भी जी उठेंगे। क्योंकि वो उनका जो सो गए हैं पहला फल है और जैसा फ़स्ल के पहले फल खुदा को गुज़राने जाते हैं और उस को मक्बूल हैं। वैसा ही तमाम फ़स्ल के फल उस को गुज़राने जाएंगे। ऐ वालदैन् तुम्हारा लड़का या लड़की जो मसीह पर ईमान ला के मर जाये, फिर उठेंगे। ऐ लड़के तेरे माँ बाप जो मसीह पर ईमान ला के गुज़र गया है जी उठेगा। अगर वह खुदावन्द में मर गए तो जी उठेंगे ताकि उन से खुदावन्द को जलाल मिले चुनान्चे लिखा है, कि ईसा आएगा ताकि अपने मुक़द्दसों से जलाल पाए और अपने सब ईमानदारों में ताज्जुब का बाइस हो ये फ़ानी बका को पहनेगा। और ये मरने वाला हमेशा की ज़िंदगी को और जब ये फ़ानी गैर-फ़ानी को और ये मरने वाला हमेशा की ज़िंदगी को पहन चुकेगा। तब वो बात जो लिखी है पूरी होगी कि फ़त्ह ने मौत को निगल लिया।

“अगर उस की रूह जिसने ईसा को मुर्दों में से जिलाया तुम में बसे तो मसीह का जिलाने वाला तुम्हारे मुर्दा बदन को अपने उस रूह के वसीले से जो तुम में बस्ती है जिलाएगा।” (रोमियों 8:11)

## ईसा का सब का सर होना

“और सब कुछ उस के पांव तले कर दिया। और उस को कलीसिया के लिए सब का सर बनाया।” (इफ़िसियों 1:22)

कलीसिया यानी सारे सच्चे ईमानदार मसीह को अज़ीज़ हैं। उस ने कलीसिया को प्यार किया और उस के लिए अपने आपको दिया उस के लिए वो सब का सर बन गया है। सारी चीज़ें ईसा के पांव तले हैं वो सारी चीज़ों का इख़्तियार रखता है। वो कादिर-ए-मुतलक है और अपने लोगों की भलाई के लिए सारी बातों पर ख़्वाह आस्मान पर ख़्वाह ज़मीन पर ख़्वाह दोज़ख में हों हुक्मत करता है। कलीसिया का सर वो है और कलीसिया उस का बदन है। हर ईमानदार उस से इलाका रखता है उस से मुतवस्सिल है और उस से सब कुछ पाता है। कलीसिया का सर हो के वो उस के लिए देखता और सुनता और बोलता और बहर-सूरत उस की ख़बर लेता है। लेकिन ईसा ना फ़क़त कलीसिया का बल्कि सब का सर है। सब कुछ उस पर ज़ाहिर होता है और उस की कुद़त से सँभाला जाता है। और उस की हुक्मत से मुंतज़िम किया जाता है। एक गोरा (चिड़िया) भी उस की बे मर्ज़ी ज़मीन पर नहीं गिरता काश कि सारी बातों में हम ईसा पर लिहाज़ करें। काश कि ये जानें और यक़ीन करें कि फ़क़त मसीह हकीम मुतलक और ख़ुदा-ए-कादिर है। इस सोच से मेरी रूह खातिरजमा रहे, अगर ईसा सारा इंतज़ाम करता है। तो ज़रूर सारी चीज़ें उन की बहबूदी (तरक्की) के लिए जो ख़ुदा से मुहब्बत रखते हैं मिल के फ़ायदा बख़्शेंगी, यानी उन के लिए जो ख़ुदा के इरादे के मुवाफ़िक़ बुलाए गए हैं। चाहिए कि हम ये आरजू रखें कि सारी बातों के हक़ में ख़ुदा की मर्ज़ी पूरी हो जाये चाहिए कि अपनी मर्ज़ी को दबाए और सिर्फ़ उस की मर्ज़ी मंज़ूर करें हमारे हाल की खातिर जमुई और आइन्दा की तरक्की और आक़िबत की खुशहाली सबकी सब इसी पर मौकूफ़ है और जब तक हमारी और मसीह की मर्ज़ी में कामिल मुवाफ़िक़त ना बने तब तक हमको कामिल खुशी व खुर्मी हासिल नहीं हो सकती।

“और वो सबसे आगे है और उस से सारी चीज़ें बहाल रहती हैं। और वह बदन यानी कलीसिया का सर है वही शुरू में मुर्दों में से पहलौठा है ताकि सब बातों में उस का अक्वल दर्जा हो।” (कुलस्सियों 1:17, 18)

## ईसा का दिलसोज़ी रखना

“क्योंकि हमारा सरदार काहिन ऐसा नहीं जो हमारी सुस्तियों में हम्दर्द ना हो सके बल्कि गुनाह के सिवा सारी बातों में हमारी मानिंद आजमाया गया।”  
(इब्रानियों 4:15)

ईसा ने दुख उठाया उस ने इसलिए दुख उठाया कि तजुर्बेकारी से जाने कि मेरे लोगों को क्या सहना है। उस ने हमारी हालत से बखूबी वाक्किफ़ होना चाहा और जहां तक हो सकता वो हमारी मानिंद बन गया। पस वो तजुर्बा से जानता है कि हमारी दुखी और सुखी हालत है वो हमसे ऐसा वाक्किफ़ है जैसा कोई फ़रिश्ता वाक्किफ़ नहीं हो सकता इसलिए कि फ़रिश्ते ने हमारी ज़ात व तबीयत कभी नहीं पकड़ी। ईसा की रिक्कत व दिलसोज़ी फ़रिश्तों की निस्बत बहुत ज़्यादा है वो जिस्मानी दुख और रूहानी दुख को भी जानता है वो जानता है कि घबराहट और दिल गेरी और जान कुंदनी किया है। उस की जान आजुर्दा हुई उस के बदन में भूक और प्यास और ठंडा और थकावट और ज़ख्मों से तक्लीफ़ हुई। वो बदन व जान व रूह में दुखी था और जानता था कि बर्दाश्त करने के लिए ताक़त और सँभालने के लिए तसल्ली पाना चाहिए। वो हमारे दर्द के सबब से दर्द-मंद है। हाँ हमारे ही साथ दर्द-मंदी करता है। वो सर है और हम उस के उजू हैं सर और आज़ा के दर्मियान हमदर्दी जल्द और पाएदार व मुलाज़िम व कामिल है। ईसा की ऐसी दर्द-मंदी होती है। ऐ दुखी फ़क़त मसीह कामिल तौर से तेरे साथ हम्दर्द हो सकता है, क्योंकि उस की हम्दर्दी मोअस्सर है वो तुझे सँभालेगा। और तेरे दुख को तेरे फ़ायदे का बाइस ठहराएगा और आखिर को तुझे कामिल रिहाई देगा। ईसा तुझ पर सदा निगाह रखता है और तेरा दुख और रंज उस के दिल पर असर करता है वो तुझको तेरी ताक़त से ज़्यादा बोझ उठाने ना देगा। उस की रहमत बहुत नर्म है और उस की शफ़क़तें ला-इंतिहा हैं। अपनी सारी रंज और आफ़तों और दुखों में उस पर निगाह कर और इस सोच से अपने लिए तसल्ली हासिल कर कि मेरे सारे दर्दों में ईसा हम्दर्द है।

“और जब उस ने जमाअतों को देखा उस को उन पर रहम आया क्योंकि वो उन भेड़ों की मानिंद थे जिनका चरवाहा ना हो आजिज़ व परेशान थीं।”

(मती 9:36)

## ईमानदारों का मसीह में कामिल बनना

“और तुम उस में जो सारी सरदारी और मुख्तारी का सर है कामिल बने हो।” (कुलस्सियों 2:10)

मसीह का जलाल लासानी है उस की सरफ़राज़ी की कोई मुवाफ़िक़त नहीं है। वो सारी मुबारकबादी के ऊपर सरफ़राज़ है। उस के जलाल में उस के लोग हिस्सेदार हैं। वो आप ना-कामिल हैं और उनकी फ़ज़ीलातों में कमाल नहीं मिलता उन के सारे कामों में गुनाह मिलाया जाता है। वो बोझ से दब कर आहें खींचते हैं वो कामिलियत के लिए बड़ी आरजू रखते हैं। पर मसीह में कामिल बन गए। उस में पैवस्ता हो कर वो उस के शरीके विरासत हो गए हैं। मसीह को छोड़ के और किसी में कमाल नहीं मिल सकता शराअ ने कुछ कामिल नहीं किया पर उस फ़रमांबदारी के वसीले से जिसे मसीह ने किया और उस कुर्बानी की मार्फ़त जिसे उस ने दिया ईमानदार उस में कामिल बने। पहले उस की फ़रमांबदारी के वसीले से उस के लोग कामिल बनें उस की जिंदगी का काम खुदा की फ़रमांबदारी थी। ये उस के लोगों के लिए थी वो उन के हिसाब में गिनी जाती है। उस के बाइस वो फ़त्वे से आज़ाद और हयात-ए-अबदी के हक़दार हैं पर उस के होने के वसीले से उस के लोग कामिल बनें उसने एक ही नज़र गुज़राँने से मुक़द्दसों को हमेशा के लिए कामिल किया। क्या ख़ूब ईसा का एक नज़र गुज़राँना काफ़ी था। उस के सारे लोगों के लिए वो काफ़ी है और इसी से वो हमेशा के लिए कामिल बने पर मसीह में सारी भरपूरी है। चुनान्चे लिखा है कि बाप को ये पसंद आया कि सारा कमाल उस में बसे और ये सारी कमालियत उस के लोगों के लिए है फिर वो ताक़त बख़शता है जैसा लिखा है कि तेरे ज़माने के मुवाफ़िक़ तेरी कुव्वत हो वो दानिश भी देता है जो हमारे मुताबिक़ हो और पाकीज़गी बख़शता कि हम आस्मान पर रहने को तैयार हों। फ़क़त मसीह में हम कामिल हैं अपनी सारी इहितयाजों के रफ़ा करने के लिए उस की तरफ़ माइल होना चाहिए।

“वहां ना यूनानी है ना यहूदी ना खतना, ना नामखतूनी, ना बरबरीयत ना  
उसकोती ना गुलाम ना आज़ाद पर मसीह सब कुछ और सब में है।”

(कुलस्सियों 3:1)

## ईसा आने वाला है

“मैं फिर आऊंगा। और तुमको अपने साथ लूंगा ताकि जहां मैं हूँ तुम भी  
हो।” (यूहन्ना 14:3)

जो रसूमात मसीही दीन से इलाका रखती हैं। वो बेश कद्र हैं। मसीह का कलाम भी बेश कद्र है, लेकिन खुद मसीह के मुकाबले में ये कहा है जिस को हम प्यार करते हैं वो खुद मसीह है और जिस कद्र हमारी उम्र बढ़ती है उसी कद्र हमारी आरजूएँ मसीह के लिए बढ़ती जाती हैं। जो आस्मान पर मसीही ना हो तो वो जगह हमारे लिए खातिरपसंद ना हो और ज़मीन पर जिसके हम आर्ज़ूमंद हैं सो मसीह है, अगर मसीह के साथ होने की इंतज़ारी ना हो तो मौत की बाबत सोचना क्या ही दिलगीरी होती। मसीह का आना हमारी उम्मीद की गर्ज है एक बार उसने पस्त हाली में आ के हमारे लिए दुख उठाने और मर जाने में अपना प्यार दिखाया। दूसरी बार अपने जलाल में आएगा। तब हमको अपनी मानिंद करके हमको अपनी हुजूरी से खुश करने में अपनी मुहब्बत दिखलाएगा। अभी वो खुदा के हुज़ूर हमारे लिए हाज़िर रहता है और जल्द आएगा और हमें अपने पास लेगा। उस ने सिर्फ थोड़े अर्से के लिए इस दुनिया को छोड़ा है और अब हम उस के इंतज़ार में हैं कि आस्मान पर से उतरेगा और हमको ग़ज़ब से छुड़ा के अबदी जलाल में दाखिल कर देगा। फ़कत मसीह और उस की हुजूरी हमारे साथ हमारी जानों की आरजू को रफ़ा करेगी। चूँकि जब उस ने कहा कि मैं यकीनन जल्द आता हूँ लिहाज़ा हम उस के ज़हूर के मुंतज़िर हैं और आर्ज़ूमंद हो के पुकारते हैं कि हाँ ऐ खुदावन्द ईसा तमाम खल्कत के लिए वो दिन जब मसीह आएगा क्या ही मुबारक दिन होगा। क्योंकि तब उस की चीखें मारने के अय्याम खत्म होंगे और उस के पेड़ें (दुख, दर्द) याद भी ना आएगी। और अगर खल्कत के लिए ऐसी खुशी बाक़ी है तो कलीसिया के लिए जो मसीह का बदन है कितना ज़्यादा होगा। इस वास्ते तुम अपने फ़हम की कमर बांध के होशयारी से इस

फ़ज़ल की कामिल उम्मीद रखो जो ईसा मसीह के ज़ाहिर होते वक़्त तुम पर नाज़िल होगा।

“अब ऐ बच्चो तुम उस में रहो ताकि जब वो ज़ाहिर हो तो हम बेपर्वा हों और उस के आते वक़्त उस के आगे शर्मिदा ना हूँ।” (1 यूहन्ना 2:28)

## ईसा का अबद तक यकसाँ होना

“ईसा मसीह कल और आज और अबद तक यकसाँ है।” (इब्रानियों 13:8)

दुनिया मुतगय्यर (बदली हुई) और बे-सबात है दो रोज़ के वाक़ियात में क्या ही दूर नगी (बेगानगी, मुनाफ़क़त) है। शायद हमारे रिश्तेदारों में से बाअज़ मेरे दोस्तों की निस्बत ख्वाह बदनी ख्वाह दिली मुफ़ारक़त (जुदाई, अलैहदगी) हो के सेहत के एवज़ बीमारी और आराम के एवज़ दुख और सलामती के बदले तकलीफ़ और ख़ुशी की जगह रंज और ज़िंदगी मौत से बदल जाये। हमारे अंदर और पाया सब नापायदार और तब्दीली पज़ीर है, मगर एक है जो बदलता नहीं ईसा हमेशा यकसाँ है। उस की ज़ात व सिफ़ात बे तब्दील हैं उस की मुहब्बत मुस्तहकम है। उस की शफ़क़ते हर सुबह को नूअ बनूअ हैं वो बे-इंतिहा हैं उस का दिल हमारी तरफ़ लगा रहता है वो हमेशा हमारे लिए मोअस्सर काम करता है। उस की आँखें मुझको देखती हैं। उस के अबदी बाजू हमारे नीचे हैं हाँ कमबख़ती और ख़ुश-वक़ती बीमारी और तंदरुस्ती मौत और ज़िंदगी में ईसा यकसाँ है। उस की ज़ात व तबीयत बे-तब्दीली हैं। जो उस के मुँह से निकला उसे ना बदलेगा। पहाड़ जाते रहेंगे और कोह हिल जाएंगे पर उस की मेहरबानी में जो हम पर है कुछ फ़र्क़ ना पाया जाएगा और उस की सुलह का अहद जुंबिश ना करेगा। आलम बदले तो मुम्किन है लेकिन ईसा का प्यार और कलाम यकसाँ रहेगा आस्मान और ज़मीन टल जाएंगे मगर उस की बातें हरगिज़ ना टलेंगी। वो जो कहता सो पूरा करेगा। उस के हाथ हमेशा फैले हैं कि हम आएँ और उस की गोद में आराम पाएं उस के लहू का चशमा हमेशा बहता रहता है और उस में हम अपने गुनाहों को धो डालें और अपना लिबास उजला करें। फ़क़त मसीह पर हमारा भरोसा रखा जाये। वो हमारी तसल्ली का सोता और हमारे ख़ुश करने का बाइस होगा। अगर ईसा हमारा हो तो हर वक़्त और हर हाल में हम दाऊद की मानिंद गा सकते हैं कि

खुदावन्द जिंदा है और मेरी चट्टान मुबारक है और खुदा मेरी नजात की चट्टान बुलंद व बाला है।

“तू वही है और तेरे बरस जाते ना रहेंगे।” (इब्रानियों 1:12)

## हाल खौफनाक

**“जो कोई खुदावन्द को अज़ीज़ नहीं रखता मलऊन हो। हमारा खुदावन्द आने वाला है।” (1 कुरिन्थियों 16:22)**

क्या हम ईसा से मुहब्बत ना रखें क्या ऐसे लोग भी हैं जो ईसा से मुहब्बत नहीं रखते। हाँ बहुतेरे ऐसे हैं उस की निस्बत सुनते हैं। उस के हक में पढ़ते हैं। उस की बाबत गुफ्तगु करते हैं पर उस से मुहब्बत नहीं रखते अगर वो कभी बच जाएंगे, तो ईसा के वसीले से बचना चाहिए लेकिन तो भी उस को प्यार नहीं करते ये हाल खौफनाक है। ऐ मेरे दोस्त फ़क़त मसीह तुझे बचा सकता है अगर वो तुझे ना बचाए तो तुझे दोज़ख में जाना पड़ेगा। तुझे दोज़ख के अज़ाब को सहना पड़ेगा। तू सदा शैतान की शराकत करेगा। सिर्फ़ मसीह के वसीले से आदमी बाप के पास पहुंच सकता और उस को मक़बूल हो सकता है। सिर्फ़ ईसा पर ईमान लाने से आस्मानी मीरास मिलेगी। फिर जो लोग मसीह से मुहब्बत नहीं रखते वो उस पर ईमान भी नहीं रखते। ये भी सोचो कि अगर कोई गुनाह से नफ़रत ना रखे तो वो ईसा से मुहब्बत नहीं रख सकता। ऐ प्यारो ! उस के सिवा कोई दूसरी राह नहीं फ़क़त मसीह के वसीले से बचना चाहिए या हलाक होना चाहिए। खुदा का फ़ज़ल जिससे नजात है तुम पर ज़ाहिर हुआ इस फ़ज़ल को ईमान पकड़ता है और पकड़ते हैं फ़ौरन ईसा ईमानदार को अज़ीज़ है। चुनान्चे पत्रस कहता है कि वो तुम्हारे वास्ते जो ईमान लाए हो कीमती है। पस अगर तुम्हारे लिए मसीह कीमती ना होतो इस सबब से है कि तुम उस पर ईमान नहीं लाते और अगर तुम उस पर ईमान नहीं लाते तो तुम अब तक अपने गुनाहों में गिरफ़्तार हो और खुदा का ग़ज़ब तुम पर बना रहता है और अगर अपने गुनाहों में गिरफ़्तार हो के मर जाओ तो जब मसीह आएगा, तुम मलऊन होगे। पस मेरा ये इल्तिमास सुनो कि आपको जांचो कि तुम ईमान



के साथ हो कि नहीं अपने को परखो और ये जान लो कि ईसा मसीह तुम में है और नहीं तो तुम ना मक़बूल हो।

“जो बेटे पर ईमान लाता है हमेशा की ज़िंदगी उस की है और जो बेटे पर ईमान नहीं लाता हयात को ना देखेगा। बल्कि ख़ुदा का क़हर उस पर रहता है।” (यूहन्ना 3:36)

## तसल्ली-देह का शख्स इलाही होना

“क्यों शैतान तेरे दिल में समाया कि तू रूह-उल-कुदुस से झूट बोले तू आदमी से नहीं बल्कि ख़ुदा से झूट बोला।” (आमाल 5:34)

हर एक खुसूसियत जिससे शख्स होना जाना जाता है। पाक कलाम में रूह-उल-कुदुस को दी जाती है। वो भेजा जाता आता और काम करता है वो सिखलाता ले जाता और राह बतलाता है। वो बोलता बातें ज़ाहिर करता और गवाही देता है वो शख्स इलाही है और कुदुरत व बुजुर्गी और जलाल में ख़ुदा बाप और ख़ुदा बेटे का हम-सर है। बपतिस्मा के ज़ाबते में वो बाप और बेटे के साथ शरीक होता है क्योंकि हम बाप और बेटे और रूह-उल-कुदुस के नाम से बपतिस्मा पाते हैं। उस दुआ से भी जो रसूलों ने दी और जो कलीसिया में दी जाती है। उस का नाम है यानी ये कि ख़ुदावन्द ईसा मसीह का फ़ज़ल और ख़ुदा की मुहब्बत और रूह-उल-कुदुस की शिरकत तुम सभों के साथ हो आमीन। जो दलीलें हैं कि ख़ुदा बाप एक शख्स और इलाही है वही दलीलें रूह-उल-कुदुस के शख्स होने और इलाही होने के लिए काम आती हैं। उल्हियत की सारी सिफ़ात उस को दी जाती हैं और बाप और बेटे के बराबर कलीसिया से हम्द और जलाल और इज़्जत पाने के लायक है। ख़ुदा के कलाम के तज़किरे में वो कभी मुतकल्लिम फिर मुखातिब और फिर ग़ायब है और हर शख्स की काम अमल में लाता है। वो बाप और बेटे से अलेहदा (अलग) है और बाप और बेटे के साथ हमता (बराबर, नज़ीर, शरीक) है और वो आप ही में ज़ात इलाही की भरपूरी रखता है क्योंकि वो बज़ाते असालतन और हमेशा ख़ुदा है। ऐ रूह-ए-पाक अपनी शख्सियत और ज़ात इलाही और असली जलाल की बाबत हमें साफ़ समझा दे

काश कि पाक कलाम में तुझे देखें और अपने दिलों में तुझे हाज़िर जानें और रोज़ बरोज़ तेरे साथ सोहबत रखें।

“क्या तुम नहीं जानते कि तुम खुदा की हैकल और ये कि खुदा की रूह तुम में बस्ती है।” (1 कुरिन्थियों 3:16)

## रूह-ए-पाक का तसल्ली बख़्श होना

“अगर मैं ना जाऊं तो तसल्ली देने वाला तुम्हारे पास ना आएगा पर अगर मैं जाऊं तो मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा।” (यूहन्ना 16:7)

खुदा के लोगों के लिए एक तसल्ली बख़्श चाहिए क्योंकि उन को हर तरह का रंज व ग़म मिलता है। चूँकि अंदर गुनाह और बाहर दुनिया की आजमाइशें और हर कहीं शैतान है और ये सब उस को सताते और वरगलानते हैं। लिहाज़ा कुछ ताज्जुब नहीं कि अक्सर वो नाउम्मीदी और तकलीफ़ में डूब जाएं। इलावा इस के उनकी रोज़मर्रा फ़िक्रें उनको दबाती और घबराती हैं और जब वो ज़बरदस्तों का जुल्म और मिस्कीनों की तंगहाली और ईसाइयों का कम ईमान और कम मुहब्बत देखते हैं तो ज़रूर रंज व ग़म खाते हैं, ऐसे हाल में इन्सान थोड़ी तस्कीन दे सकते हैं। सिर्फ़ खुदा वाजिबी तौर से तसल्ली बख़्श सकता है, चुनान्चे रूह-ए-पाक ने ये ओहदा लिया है। वो ईमानदारों के लिए तसल्ली बख़्श है वो ईसा की सारी भरपूरी और बाप के सारे इरादों से वाकिफ़ है। जलाल की सारी दौलत और फ़ज़ल के खज़ाने उस के जाने जाते हैं और उस का काम ये है कि इसी से खुदा के लोगों को तसल्ली दे वो हर एक ईमानदार को और उस के हाल को भी पहचानता है वो दिल में दाख़िल हो के हमारी सब हाजतों को रफ़ा कर सकता है। वो हर एक दुश्मन और आजमाइश से वाकिफ़ है वो हमारी नज़र ईसा की तरफ़ रुजू करता है वो हमें ऐसी तर्गीब देता है कि खुदा पर भरोसा रखें। वो हमारे दिलों में जलाल की उम्मीद पैदा करता है। वो खुदा के वादों को ले के हमको बतलाता है कि उन में हमारा क्या हिस्सा है। वो गोया हम पर कफ़ारे का खून छिड़कता है। वो सलामती देता है। वो हमको शैतान से लड़ना सिखाता है। हमारी सारी तकलीफ़ों में वो हमको तसल्ली देता है, बल्कि ऐसी तसल्ली बख़्शता है कि गुनाह से नफ़रत रखें और ईसा को प्यार करें

और पाकीज़गी को ज़्यादा चाहें। ऐ रूहे पाक हमारे दिलों पर नाज़िल हो और हमको ये खूब तसल्ली दे।

“जैसा आदमी जिसे उस की माँ तसल्ली बख़्शती है वैसा ही मैं तुमको तसल्ली बख़्शूंगा और तुम यरूशलेम में तसल्ली पाओगे।”

(यसअयाह 66:13)

## तसल्ली देने वाले का ईमानदारों के साथ हमेशा रहना

“मैं अपने बाप से दरख्वास्त करूँगा और वो तुम्हें दूसरा तसल्ली देने वाला बख़्शेगा कि हमेशा तुम्हारे साथ रहे यानी रूहे हक़।”

(यूहन्ना 14:16-17)

ईसा कुछ अर्से तक अपने लोगों को तसल्ली देने और उन की तस्कीन अबदी की बुनियाद डालने को दुनिया में आया। वो तसल्ली का चशमा है और सारी रूहानी तसल्ली उस के कामिल काम पर मुन्हसिर है लाज़िम था कि वो अपने बाप के पास फिर जाये ताकि हमारे लिए हमेशा सिफ़ारिश करे मगर उस ने रूह-उल-कुद्स को भेजा कि वो कलीसिया के साथ रहे। रूह-उल-कुद्स जो पंतिकोस्त के रोज़ बक़सत ज़ाहिर हुआ, कलीसिया के साथ उसी वक़्त से रहा है और उस के साथ अबद तक रहेगा। कलीसिया में रूह-उल-कुद्स ईसा को दिखलाता है और उस का जलाल ज़ाहिर करता है। वो ईमानदार के दिल पर नाज़िल होता है और उसे ईसा की हैकल में बदलता है और वहां हमेशा हुकूमत करता है। गाह-गाह (कभी-कभी) वो हमारी रविश को देखकर ग़म खाता है, कभी तम्बीह देता है। अपनी तसल्ली वो तासीरें नहीं देता हमको हमारी उम्मीद की बाबत यक़ीन नहीं दिलाता। हमारे ले-पालक होने पर गवाही नहीं देता पर वो हमें कभी तर्क नहीं करता। हमेशा हमारे साथ रहता। खयाल मुबारक ये है सोचता हूँ कि अगर मुम्किन होता कि रूह-ए-पाक अपनी हैकलों को छोड़े और नाफ़रमांबरदारों और बागीयों को तर्क करे तो

मुद्दत से मुझ को छोड़ता अभी तक उसने हमारे वास्ते मेहनत की है और फ़ल्ह भी पाई और फ़ल्ह पाना उस में ज़ाहिर है कि जब हम अपने बाप से दूर गए थे। रूह की हिदायत व हिमायत और नाला व मिन्नत के साथ हम फिराए और उस की बगावत हमने की फिर ताबे हुए। ऐ रूह मुबारक तेरा शुक्र हो कि तू वफ़ादार है। मेरे साथ रहा कर और मुझ पर ईसा को ज़ाहिर कर के मुझे मसरूर कर।

“जो कोई वो पानी जो मैं उसे दूंगा पिए वो कभी प्यासा ना हो बल्कि जो पानी मैं उसे देता हूँ उस में पानी का सोता हो जाएगा जो हमेशा की ज़िंदगी तक जारी रहेगा।” (यूहन्ना 4:14)

## तसल्ली देने वाले का हमा जा होना

“तेरी रूह से मैं किधर जाऊँ और तेरे हुज़ूर से किधर भागूँ, अगर आस्मान पर चढ़ जाऊँ तो वहाँ तू है और क़ब्र को बिस्तर बनाऊँ देख तू वहाँ है।”  
(ज़बूर 139:7-8)

किसी दोस्त का हमारे साथ मौजूद होना दिल पज़ीर है पर ऐसा दोस्त मिलना जो हर बात में हमारा हम्दर्द हो और उस का हमेशा हमारे साथ रहना क्या ख़ूब है रूह-ए-पाक ऐसा ही दोस्त है और वो हमेशा साथ है। खुदा हो के वो इस काबिल है कि हमा जा (हर जगह) हो सकता और उसने अहद भी बाँधा है कि ईमानदारों के साथ हर वक़्त और हर जा (जगह) हाज़िर रहूँगा। वो ना सिर्फ़ हाज़िर है बल्कि हमारे दिलों को हिदायत करने और हमको ख़ताओं से मुतनब्बाह (आगाह किया) करने और हमारी तबीअतों को इल्ज़ाम देने और हमको सच्चाई के हक़ में याद दिलाने और हमारे दिलों को पाक-साफ़ करने और दुखों में हमें तसल्ली देने के लिए मौजूद है। वो हमको कभी ना छोड़ेगा। अगरचे हमारी ख़ताओं के सबब से वो ग़म खाए और हमको तसल्ली ना दे पर तो भी हमारे दिलों पर असर करेगा और इल्ज़ाम दे के और तम्बीह कर के हमें जगाएगा। और हमको भटकने से लौटा देगा। वो अपने हाथ के काम को कभी ना छोड़ेगा। पस चाहिए कि हम उस की वफ़ादारी और कामिल मुहब्बत पर इसी तरह सोचते रहें कि रूह-ए-पाक मेरे साथ है वो मेरी सारी चाल को देखता और मेरे दिल के मन्सूबों को पहुँचाता है। चाहिए कि ऐसी

सोच हमारे दिल में रहें तो हम जिस्म के लिए ना बोएँगे। जिससे खराबी की फ़स्ल है पर रूह के लिए बोएँगे और हमेशा की ज़िंदगी पाएँगे। ऐ मेरी जान याद रख कि रूह-ए-पाक हमेशा तेरे साथ है और तुझे बरकत दिया चाहता है वो तेरा रोज़-रोज़ का सिखलाने वाला है तेरा दोस्त है कभी उस को ग़मगीं ना कर।

“रूह सब चीज़ों को बल्कि खुदा की गहरी बातों को भी दर्याफ़्त कर लेते है।”  
(1 कुरिन्थियों 2:15)

## रूह-उल-कुद्स का क़ादिर होना

“जब रूह-उल-कुद्स तुम पर आएगा तो तुम कुव्वत पाओगे।” (आमाल 1:8)

सब अजीब मोअजज़ात जो रसूलों से किए गए और फ़ज़ल की बड़ी करामात जो ईमानदार के दिल में ज़ाहिर की गई। रूह-उल-कुद्स की कुद़त से मन्सूब हुई बग़ैर कुद़त के हकीकी दीनदारी नहीं हो सकती और रूह की कुद़त के सिवा और कोई कुद़त इस काबिल नहीं है। हवारियों ने ईसा से हुक्म पाया कि येरूशलेम से बाहर ना जाओ बल्कि बाप के वाअदे की राह देखो। वाअदा ये था कि तुम थोड़े दिनों के बाद रूह-उल-कुद्स से बपतिस्मा पाओगे। रूह-उल-कुद्स अपनी कुद़त और तासीर के बतलाने के लिए अपने को तीन अनासिर क़वी से मुक़ाबला करता है। यानी हवा और आग और पानी से उस की कुद़त गुनेहगार की खराबी को जीत लेती और गुनेहगार को मसीह की तरफ़ रुजू करने और उस को इस क़द्र सँभालती है कि अगरचे कमज़ोरी में कीड़ा सा हो, लेकिन अपने सारे दुश्मनों पर ग़ालिब होता है। रूह-उल-कुद्स के हमारे दिल में बसने से हमको खुदा के साथ कुद़त है और शैतान के ऊपर भी कुद़त और गुनेहगारों के दिलों पर असर कर सकते हैं। रूह की कुद़त से हम सब कुछ कर सकते हैं और सब दुखों को बर्दाश्त कर सकते हैं। ये कुद़त कलीसिया को ज़रूर है ताकि वो बरूमंद हो और उस के शरीकों में खलामला हो और वो पाक बन के तरक्की पाए और ये कुद़त हर एक ईसाई को चाहिए ताकि वो खुश रहे और दुनिया से अलेहदा (अलग) हो के खुदा की तालीम को सब बातों में रौनक दे, मगर हम को रूह की कुद़त की ऐसे ख़्वाहिश नहीं जैसा लाज़िम है और इस सबब से इस की तलाश वाजिब तौर से नहीं करते। जानना चाहिए कि अगर हम दीनदारी में तरक्की

पाएं और मसीह की मानिंद बनते जाएं और खुदा का जलाल ज़ाहिर करें तो रूह-उल-कूदस की कुद्रत से भर जाना चाहिए। ऐ रूह-ए-पाक तू कुद्रत की रूह होके मेरे दिल में रह और बहरसूरत मुझे खुदावन्द ईसा मसीह की मानिंद बना।

“खुदा ने हमको दहशत की रूह नहीं बल्कि कुद्रत और मुहब्बत और होशयारी की दी है।” (2 तीमुथियुस 1:7)

## रूह-उल-कुदस का खुद-मुख्तार होना

“लेकिन वही एक रूह ये सब करती है मगर जैसा चाहती है हर एक को बाँटती है।” (1 कुरिन्थियों 12:11)

अगले ज़मानों में रूह-ए-पाक के इनाम और काम कलीसिया में बहुत से और तरह तरह के थे और ये खुद रूह से दिए गए। उन के हक में किसी का कुछ दावा ना था। अब भी वैसा ही है। रूह-उल-कुदस खुदा हो के इख्तियार रखता है कि जो चाहिए सो करे मुकद्दसों को बुलाने में वो बिल्कुल इख्तियार रखता है और उनको ऐसा आराम देता है, जैसा उनकी हाजत के मुताबिक हो खुदा का कलाम जब तक रूह-ए-पाक उस के सुनने और सुनाने पर बरकत ना दे बे-तासीर रहेगा। लेकिन इस काम में भी यही रूह बरतर है और एक को काइल करता और दूसरे को तम्बीह देता और तीसरे को तसल्ली बख्शता है। वो गुनेहगार को फ़रोतन करता है और ईसा पर इज़ज़त बख्शता है और खुदा के फ़ज़ल को सर्फ़राज़ करता है। हर काम और हर बात वो कादिर-ए-मुतलक है, अगरचे अपनी मर्ज़ी के मुताबिक करता है, लेकिन वो कभी-कभी आदमी के ज़िम्मे और जवाबदेही को नहीं रोकता और अक्सर बग़ैर वसीले के किसी के दिल पर असर नहीं करता बल्कि इस के बरअक्स उस की ये मर्ज़ी है कि किसी ना किसी वसीले से वो तासीर करता है। और ऐसे वसीलों से जो उस को पसंद हों इस्तिमाल करता है। वो कलीसिया में सलतनत करता और उनसे काम करवाता है और उस के हर एक शरीक में काम लेता है और जो कुछ वो करता है सो ईसा के नाम पर और उस के जलाल को बढ़ाने के लिए करता है। रूह कादिर हो के वह सब कुछ कर सकता है और अपनी मर्ज़ी के मुताबिक करता रहेगा। और चूँकि वो अपनों से कामिल मुहब्बत रखता है। पस जो कुछ वो करता उन के हाल

की और अबदी भलाई के लिए करता है। ऐ रूह मुबारक मेरे दिल में असर कर कि मैं तेरी मर्जी बजा लाने की आरजू रखूँ और तेरा काम भी करूँ। मेरे दिल में असर कर कि मैं अपनी नजात के काम किए जाऊँ। मेरे दिल में असर कर कि मैं खुदा के जलाल के ज़ाहिर करने में मुस्तइद रहूँ।

“खुदा आप इस पर निशानों और करामातों और तरह-तरह के मोअजिज़ों और रूह-उल-कुद्स की बाँटी हुई नेअमतों से अपनी मर्जी के मुवाफ़िक़ गवाही देता रहा।” (इब्रानियों 2:4)

## रूहे पाक का सरनू पैदा करने वाला होना

“जो जिस्म से पैदा हुआ है जिस्म है और जो रूह से पैदा हुआ रूह है। ताज्जुब ना कर कि मैंने तुझे कहा कि तुम को सरनौ (नए सिरे) पैदा होना ज़रूर है।” (यूहन्ना 3:6-7)

जैसा सोता वैसा धारा, आदम से उसी की सूरत में औलाद पैदा हुई। बज़ाते हम सब के सब जिस्मानी आदमी की सूरत पर पैदा हो के नफ़्सानी बिगड़े और ख़राब पैदा हुए हैं। इस हालत में मुब्तला हो के नामुम्किन है कि खुदा की बादशाहत की खासियतें जानें या उन में खुश हों, चुनान्चे लिखा है कि नफ़्सानी आदमी खुदा की रूह की बातों को नहीं कुबूल करता कि वो उस के आग बेवकुफ़ियां हैं और ना वो उन्हें जान सकता क्योंकि वो रूहानी तौर पर बूझी जाती हैं, इस सबब से रूह-उल-कुद्स का काम निहायत ज़रूरी है और उस के मुताबिक़ मसीह ने खुद कहा कि अगर कोई सरनौ (नए सिरे से) पैदा ना हो तो वो खुदा की बादशाहत को देख नहीं सकता। रूह-ए-पाक की तासीर से नई इन्सानियत पैदा होती है और हम नई मख़लूक बनते हैं। जब उस की मार्फ़त हमारी समझ खुल जाती तब खुदा की शरीअत की रूहानियत और अपने बर्ग़शता और बिगड़े हुए हाल से वाक़िफ़ हो जाते हैं और ये भी जानते हैं कि बे फ़ज़ल के नजात हो नहीं सकती। तब ये भी मालूम करते हैं कि खुदावन्द ईसा मसीह हमारी कुल रूहानी हाजतों को रफ़ा कर सकता है और उस के सिवा कोई दूसरा इस काबिल नहीं है। इस नई पैदाइश का एक फल ये है कि दिल में मसीह के लिए आरजू और शौक पैदा होता है और ईमानदार मसीह

के नक्शे क़दम पर चलता है और मसीह पर लगा रहता है उसी पर तकिया (भरोसा) कर के और उस के साथ सोहबत रख के ईमानदार मसीह का हमशकल बनता है और सभी पर ज़ाहिर होता है कि इस शख्स में कैसी बड़ी तब्दील हुई हैं। बाद इस के वो जिस्मानी शहवतों में मुब्तला नहीं, बल्कि ख़ुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ अपनी ज़िंदगी बसर करता है। वो ख़ुदा के बेटे पर ईमान लाने से ज़िंदा है और गोया मसीह का ख़त है जो सब आदमी जानते और पढ़ते हैं, अगर कोई मसीह में है तो वो नया मख़लूक है। पुरानी चीज़ें गुज़र गईं देखो कुल चीज़ें नई हुईं।

“वो जो जिस्म के तौर पर हैं उनका मिज़ाज जिस्मानी है पर वो जो रूह के तौर पर हैं उनका मिज़ाज रूहानी है।” (रोमियों 8:5)

## रूहे पाक का गुनाह की बाबत काइल करना

“और वो आकर दुनिया को गुनाह से और रास्ती से और अदालत से क़सूरवार ठहराएगा गुनाह से इसलिए कि वो मुझ पर ईमान नहीं लाए।”  
(यूहन्ना 6:8-9)

आयत मज़कूर में दुनिया को गुनाह से क़सूरवार ठहराने से काइल करना मुराद है, बल्कि ऐसा काइल करना कि इस में इल्ज़ाम देना भी शामिल होता है। वो ख़ास गुनाह जिसका इस मुक़ाम में ज़िक्र है बेईमानी है। इन्सान की राय है कि जो शरीअत को उदूल (रुगिरदानी, इन्कार) करते हैं। उन को क़सूर-वार ठहराती हैं पर रूह-ए-पाक का ये काम है कि जो मसीह पर ईमान नहीं लाते, उन को क़सूरवार ठहराता है। वो सिखलाता है कि ईसा मसीह गुनेहगारों के बचाने को दुनिया में आया है। और वो गुनेहगार को बचाने के काबिल और रज़ामंद है और उस को काइल भी करता है कि तू मसीह पर ईमान नहीं लाया और ये तेरा गुनाह है इसलिए हम पर फ़र्ज़ है कि मसीह पर ईमान लाएं क्योंकि ख़ुदा हमको ऐसा हुक़म देता है। चुनान्चे यूं मस्तूर (सतर किया गया, ऊपर लिखा गया) है कि ये लिखी गई ताकि तुम ईमान लाओ कि ईसा मसीह ख़ुदा का बेटा है और ताकि तुम ईमान ला के उस के नाम से ज़िंदगी पाओ। उन्हें जो ईमान लाते हैं नजात का वाअदा किया जाता है, चुनान्चे लिखा है कि जो कोई ईमान लाता और बपतिस्मा पाता है



नजात पाएगा। बेईमानी का फल हलाकत है और इस के मुताबिक ये भी मस्तूर है कि “जो ईमान नहीं लाता उस पर सज़ा का हुकम किया जाएगा।” उन आदमियों में से जिनके पास इन्जील पहुँचती है हर एक मसीह को ख्वाह कुबूल ख्वाह ना कुबूल करता है। जो शख्स ईमान नहीं लाता वो मसीह की बेइज़्जती करता है। और कौनसा गुनाह इस से बड़ा है? काश कि हम इस गुनाह की बुराई समझें और दिल ही से मसीह पर ईमान लाएं। ऐ रूह-उल-कुदस जो ईमान का पैदा करने वाला है। अगर मेरे दिल में ईमान ना हो तो उसे पैदा कर और अगर हो तो उसे ज़्यादा कर ताकि मैं ना फ़क़त अपनी जान बचाने के लिए बल्कि खुदा के जलाल और रहम बढ़ाने के वास्ते भी ईमान लाऊँ।

“और सज़ा के हुकम का सबब ये है कि नूर जहां में आया और इन्सान ने तारीकी को नूर से ज़्यादा प्यार किया क्योंकि उन के काम बुरे थे।”

(यूहन्ना 3:19)

## रूहे पाक का रास्तबाज़ी के हक़ में काइल करना

“और वो अगर दुनिया को रास्ती से क़सूर-वार ठहराएगा इसलिए कि मैं अपने बाप के पास जाता हूँ और तुम मुझे फिर ना देखोगे।”

(यूहन्ना 16:8-10)

रूह-ए-पाक हमको काइल करता है कि ईसा का दावा रास्त और उस का चाल चलन कामिल है और उस ने शरीअत को पूरा किया है और इसी तरह रूह की हिदायत से हम यकीन करते हैं कि ईसा ने खुदा का बेटा होके कामिल रास्तबाज़ी निकाली है जिससे हर एक ईमानदार खुदा के आगे रास्तबाज़ ठहरेगा। रूह-ए-पाक हमको बताता है कि हमारी खुद की रास्तबाज़ी नजात के काम ना आएगी और ये कि वो गंदी धज्जी की सी है और जो किसी दूसरे की रास्तबाज़ी हासिल ना हो तो ज़रूर हलाक होंगे। वो हमको ये भी सिखलाता है कि शरीअत की ग़ायत ये है कि मसीह हर एक ईमानदार की रास्तबाज़ी हो और ये कि हर एक जो ईमान लाता सब बातों से बेगुनाह ठहरता है। रूह की हिदायत से हम समझते हैं कि खुदा जो रास्त है किसी को जो रास्त नहीं रास्तबाज़

नहीं ठहराएगा। और इसलिए कि हम नारास्त हैं। पस अपनी सदाकत को पेश कर के खुदा के हुज़ूर में पहुंच नहीं सकते। फिर रूह-उल-कूदस हमको सिखलाता है कि ईसा की रास्तबाज़ी उन सभी पर जो ईमान लाते हैं गिने जाते हैं और इसी रास्तबाज़ी के सबब से वो खुदा के हुज़ूर में रास्त ठहरते हैं, फिर रूह-ए-पाक के असर करने से गुनेहगार आप और अपने कुल कामों पर नहीं बल्कि बरअक्स इस के मसीह पर भरोसा रखता है और उस को हिक्मत और रास्तबाज़ी और पाकीज़गी और खलासी जान के अपने को उस के सपुर्द करता है। रूह-उल-कुद्स की तासीर से गुनेहगार मसीह पर ईमान लाता है। और उस का फल ये है कि मसीह ईमानदार के नज़दीक सब में और सब कुछ है। इसी तरह मसीह की रास्तबाज़ी मोअस्सर है और जो नारास्त हुए वो रास्त हो जाते हैं, यानी मसीह की रास्तबाज़ी के सबब से जो उन के हिसाब पर गिनी जाती है। वो रास्तबाज़ ठहरते हैं, चुनान्चे कलाम अल-कूदस में मस्तूर है कि जैसा एक शख्स की नाफर्माबदारी से बहुत लोग गुनेहगार ठहरे वैसा ही एक की फ़रमांबदारी के सबब से बहुत लोग रास्तबाज़ ठहरेंगे। ऐ रूह-उल-कुद्स मुझ पर मसीह की रास्तबाज़ी इस क़द्र ज़ाहिर कर कि अपनी रास्तबाज़ी को बातिल जान कर सिर्फ उसी की रास्तबाज़ी का मुश्ताक रहूं।

“और इस वक़्त की बाबत भी अपनी रास्ती ज़ाहिर कर ताकि वो आप ही रास्त रहे और उसे जो ईसा पर ईमान लाए रास्तबाज़ ठहराए।”

(रोमियों 3:26)

## रूहे पाक का अदालत की निस्बत क़ाइल करना

“और वो अगर दुनिया को अदालत से क़सूर-वार ठहराएगा इसलिए कि इस जहान के सरदार पर हुक़म किया गया है।” (यूहन्ना 16:8-11)

रूह-ए-पाक बताता है कि खुदा रास्त व अदल है और उस ने अदालत के वास्ते अपनी मुस्नद क़ायम की और एक रोज़ ठहराया है। जिसमें वो रास्ती से दुनिया की अदालत करेगा और अपने बेटे को मुंसिफ़ ठहराएगा। जो हर एक को उस के काम के मुताबिक़ बदला देगा इस की एक क़वी दलील ये है कि मसीह की मौत के सबब से इस दुनिया के सरदार यानी शैतान पर सज़ा का फ़तवा दिया गया। इलावा इस के गुनेहगार

की तमीज़ भी गोया एक मस्नद-ए-अदालत है। जिसके सामने वो हाज़िर किया जाता है और उस के गुनाह सिलसिले-वार उस पर ज़ाहिर होते हैं। और वो लाजवाब है और कसूर-वार ठहरा और उस पर मौत का फ़त्वा दिया जाता है। वो अपने को हलाक होने के काबिल जानता है। क्योंकि देखता है कि कोई आदमी शरीअत पर अमल करने से खुदा के सामने रास्तबाज़ ना ठहरेगा। तब इन्जील की खुशख़बरी उस पर ज़ाहिर होती है कि बचने की राह खुल गई। और जल्द वो इस जाएपनाह की तरफ़ दौड़ता है वो ईसा के पास जाता है और जो कलाम उस की निस्बत पाक नविशतों में लिखा है उसे कुबूल करता है और नजात के लिए उस पर भरोसा रखता है। माफी हासिल करने के लिए वो मसीह के बहे हुए लहू को पेश करता है। और रास्तबाज़ी पाने को उस की फ़रमांबदारी की दलील लाता है और उस के वाअदे पर तकिया (भरोसा) करता है कि रूह-उल-कुद्स उस को पाक करेगा और उसे आस्मान में बसने के लिए तैयारी देगा। वो अदालत की निस्बत काइल होता है। क्योंकि अपनी तमीज़ में उस को पहचानता और यकीन करता है कि सभी को चाहिए कि मसीह की मस्नद-ए-अदालत के आगे हों वो अपने को ईसा के सपुर्द करता है और उस को यकीन है कि वो मेरी अमानत की उस रोज़ तक हिफ़ाज़त कर सकता है। वो होशयारी से दुनिया में चलता है और हमेशा याद रखता है कि हर एक हम में से खुदा को हिसाब देगा।

“क्योंकि उस ने एक रोज़ मुक़र्रर किया है जिसमें वो रास्ती से दुनिया की अदालत करेगा। उस आदमी की मार्फ़त जिसे उस ने मुक़र्रर किया और उसे मुर्दों में से उठा के ये बात सब पर साबित की।” (आमाल 17:31)

## रूह-ए-पाक का उस्ताद होना

“जो मसह तुमने उस से पाया तुम में बहाल रहता है और तुम इस के मुहताज नहीं कि कोई तुमको सिखाए बल्कि जैसा वो मसह तुम्हें सब बातें सिखाता है और सच्य है और झूट नहीं और जैसा उस ने तुमको सिखाया वैसा तुम उस में कायम रहोगे।” (1 यूहन्ना 2 27)

आयत मज़कूर में लफ़ज़ मसीह से ईमानदार को रूह की बख़्शिश का मिलना मुराद है हर एक ईमानदार को रूह-उल-कुद्स इनायत होता है। और वह ईमानदार को मख़सूस करता है और उस को खुदा के लिए बादशाह और काहिन ठहराता है। रूह-उल-कुद्स ईमानदार का उस्ताद ही हो जाता है और पाक कलाम और खुदा के सारे इंतज़ाम के वसीले से उस को सिखलाया करता है। और अगर कोई दूसरा उस्ताद रूह के ख़िलाफ़ सिखलाए या समझाए तो झूटा ठहरता है उस के पास सारी सच्चाई है और रफ़ता-रफ़ता ईमानदार का दिल रोशन होता है। और वो तारीकी से नहीं पर नूर इलाही से भरपूर और मामूर है जो कुछ हम अपनी निस्बत या ईसा के हक़ में या अपने आस्मानी बाप की निस्बत जानते हैं रूह-उल-कुद्स ने उसे हम पर ज़ाहिर किया है। वो खुदा की उम्मत का उस्ताद है वो मसीह की चीज़ों से पाता है। और उन्हें हमको दिखलाता है। रूह-उल-कुद्स का हिदायत करना ईमानदार की सारी ज़िंदगी में ज़ाहिर होता है और इलाही इंतज़ाम के हादसों खुसूसुन मुतफ़र्रिक आफतों और मुसीबतों के वसीले से और फिर पाक कलाम की मार्फ़त वो हमारी गुनेहगार हालत और खुदावन्द ईसा की लियाक़त और अज़ीज़ होने और खुदा पाक की ला-इंतिहा मुहब्बत के हक़ में हमको सिखाता है और ये बतलाता है कि अबदी सआदत के मुकाबले में दुनिया की खुशी खाक और राख है। ऐ रूह मुबारक हमको हिदायत क्या कर काश कि हम ये जानें कि तू हमारे साथ रहता है और हम पर ईसा को ज़ाहिर करता है। हम तेरे वसीले से ईसा को देखें और उस से बखूबी वाक़िफ़ हों उसी पर अपना सारा भरोसा रखकर हम उस के आर्ज़ूमंद हैं कि उस की मानिंद बनते जाएं।

“और तुमने उस मुक़द्दस से मसह पाया और सब कुछ जानते हो।”

(1 यूहन्ना 2:20)

## रूह-उल-कुद्स का हिदायत करना

“इसलिए कि जितने खुदा की रूह की हिदायत से चलते वही खुदा के फ़र्ज़न्द हैं।” (रोमियों 8:14)

जब हम अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ चलते हैं तब गुनाह और ख़तरे में भटकते जाते हैं और इसलिए रूह-उल-कुद्स हम पर नाज़िल होता है कि हमारी हिदायत और हिमायत

करे। रूह-ए-पाक हमको हमेशा गुनाह की तरफ से मसीह की तरफ और हमारी रास्तबाज़ी की तरफ से मसीह की रास्तबाज़ी की तरफ ले जाता है। माफ़ी हासिल करने के लिए वो हमको मसीह की सलीब के पास ले जाता है और पाकीज़गी पाने को मसीह के लहू के चशमे के पास हमें रहनुमाई करता है और रूहानी आराम व ताज़गी के मिलने के वास्ते हमको दीनी रसूमात दिखलाता है और जब हम सोहबत और मदद इलाही मांगते हैं तो वो हमको फ़ज़ल का तख़्त बतलाता है वह इजाज़त नहीं देता कि कोई अपनी नेकी पर तकिया (भरोसा) करे, बल्कि ये भी नहीं चाहता कि ईमानदार उस के काम पर भरोसा रखे लेकिन बरअक्स इस के वो उस पर मसीह की खूबियां ज़ाहिर करता है और उस को सिखलाता है कि जिंदगी और सलामती के लिए सिर्फ़ मसीह ही पर तकिया (भरोसा) करना चाहिए। रूह-ए-पाक हमेशा गुनेहगार को फ़रोतन करता है और ईसा को सर्फ़राज़ी देता है और अगर हम रूह का ज़हूर रखा करें तो अलबत्ता मसीह हमारे दिलों में सर्फ़राज़ हो, रूह पाक हमको गुनाह से पाकीज़गी की तरफ़ और दुनियावी बातों से रूहानी बातों की तरफ़ ले जाता है। वो हमको तर्गीब देता है कि अपने को आज़माएँ और अपने दिलों से वाक़िफ़ हों और इसी तरह हम ठोकर खाने से बचते हैं वो शरीअत से इन्जील की तरफ़ रहनुमाई करता है। हमको अक़लमंद जान कर वो मक़बूलियत और बड़ी मुहब्बत के साथ हमको फ़र्ज़न्द समझ के ले चलता है। ऐ रूह-उल-कुद्स हमेशा हमारी रहनुमाई कर ऐसी रहनुमाई कि हम ईसा के साथ उस के दुख उठाने में शरीक हों। राह-ए-रास्त में हमको चलाया कर मसीह मस्लूब और मसीह तख़्त नशीन की तरफ़ हमें चला।

“अगर तुम रूह की हिदायत से चलते हो तो शरीअत के बंद में नहीं।”

(ग़लतियों 5:18)

## रूह-उल-कुद्स का दिल का पाक करना

“ऐ भाइयो ख़ुदावन्द के प्यारो लाज़िम है कि हम तुम्हारे वास्ते हमेशा ख़ुदा का शुक्र करें कि ख़ुदा ने तुम्हें शुरू से चुन लिया कि तुम रूह की पाकीज़गी बख़्श तासीर से और सच्चाई पर ईमान लाने से नजात पाओ।”

(2 थिस्सलुनीकियों 2:13)

यहां पर चुन लेने से अलग करना और पाक काम के लिए ठहराना मुराद है। खुदा ने अपने लोगों को मसीह में चुन कर अलग कर दिया है। और रूह-ए-पाक की कुद्रत और तासीर और सुकूनत के वसीले से वो उन को अपने लिए मख्सूस करता है। अजरूए पाकीज़गी के हम मसीह में सरनू (नए सिरे से) पैदा होते हैं और हमारे दिलों में ऐसा काम शुरू होता है जिसका अंजाम ये है कि हम मसीह की मानिंद बनें जिसको रूह-उल-कुद्स पाक-साफ़ करता है। उस का दिल बदल गया और उस की मर्ज़ी नए तौर से अमल करती है और उस का ज़हन खुल जाता है और उस की तमीज़ पाकीज़गी की तरफ़ लगती है और उस की खसलतें रूहानी बनती जाती हैं। सरनू (नए सिरे से) पैदा होने में पाकीज़गी का शुरू होता है पर उस का अंजाम नहीं ये रफ़ता-रफ़ता बढ़ती जाती है और मसीह के दिन में पूरी होगी। वो इन्सान के दिल व बदन से इलाका रखती है और पाक कलाम और दीनी रसूमात और खुदा के इंतिज़ाम के वसीले से तरक्की पाती है, बल्कि सारी चीज़ें उस के बढ़ाने के लिए काम आईं। पहले सब्जी है फिर बालें बाद उस के बालों में तैयार दाने। पहले हम मसीह में हो के बच्चे हैं फिर लड़के फिर जवान और आखिर को बूढ़े। मसीह के साथ पैवस्ता हो के हम उस की भर-पूरी से पाते हैं। और उस के लिए फल लाते हैं। पाकीज़गी दिल में पैदा होती है और वो हर रोज़ की चाल और ज़िंदगी के सब कामों में ज़हूर करती है। अगर कोई शख्स रूह से पाक बनता है तो गुनाह उस को अफ़सोस कराएगा। शैतान उसे आजमाएगा। दुनिया में उस की खुशी ना होगी। और आस्मान उस के नज़दीक दिल पसंद और अज़ीज़ होगा। ऐ रूह-उल-कुद्स हमको पाक-साफ़ कर ताकि हम ईसा की मानिंद बुनते जाएं। हर एक मुसीबत और नेअमत के वसीले से हमें पाक कराए। खुदा हमको अपनी सच्चाई की मार्फ़त पाक कर तेरा कलाम सच्चाई है।

“उन्हें अपनी सच्चाई से पाक कर तेरा कलाम सच्चाई है।” (यूहन्ना 17:17)

## रूह-उल-कुद्स का गवाह होना

“वही रूह हमारी रूह के साथ गवाही देता है कि हम खुदा के फ़र्ज़न्द हैं।”  
(रोमियों 8:16)

रूह-उल-कुद्स अपने सब फ़रज़न्दों को पहचानता है। जब उनका नाम दफ़्तर हयात में लिखा गया तब वो हाज़िर था। वह उन्हें मसीह में सरनू (नए सिरे से) पैदा करता है। वो उन के दिलों में सुकूनत करता है और गवाही देता है कि वो खुदा के फ़र्ज़न्द हैं। अगर पूछा जाये कि वो कब ये गवाही देता है तो जवाब ये है कि जब वो हमारे दिलों में फ़र्ज़दी तबीयत पैदा करता है और हम पर बाप की मुहब्बत ज़ाहिर करता है। और हम को यकीन दिलाता है कि खुदा हमारा बाप है और हम उस के फ़र्ज़न्द तब हमको ये गवाही देता है। कभी-कभी वो खुदा किसी वाअदे को गोया चमकाता और उसे हमारे दिलों पर नक़्श करता है और दलील लाता कि ये वाअदे हमारे ही लिए है। गाह-गाह वो हम पर अपना काम हमारे दिलों में ऐसा साबित करता है कि जो हम अपने लेपालक होने पर शक ला सकें तो अपनी पैदाइश पर भी शक लाएं। वो दिल को नरम करता और खसलतों को खुदा की तरफ़ फेरता और तमीज़ को आराम बख़्शता और हमारे अंदर अब्बा नाम बताता है यहां तक कि हम खुदा की तरफ़ दिल उठा के पुकार सकते हैं कि यकीनन तू हमारा बाप है। फिर वो उन बातों को जो खुदा के कलाम में उस के लोगों की निस्बत मुन्दरज हैं हम पर ऐसा रोशन कर देता है कि हमको यकीन होता है कि सारे ईमानदार एक खानदान के हैं और उनका एक ही बाप है फिर वो कलाम के सुनने की ऐसी तासीर बख़्शता है कि जो बातें खुदा के लोग सुनें उन को समझें और ये भी जानें कि हकीकतन हम खुदा के हैं और बे-ताब गुनेहगार अपने गुनाह से काइल हो के जानें कि बग़ैर ईमान लाए हम ना उम्मीद हैं। ऐ पाक रूह मेरे दिल को सिखला कि वो अपने ले पालक होने को पहचाने और मेरी रूह के साथ गवाही दिया करे कि मैं खुदा का फ़र्ज़न्द हूँ मेरे शुबहे दूर व दफ़ाअ कर और मेरे दिल में पाक यकीन पैदा कर दे तू बख़्श कि मैं अपने फ़र्ज़न्द होने से वाक्फ़ हो कर खुदा के चेहरे के जलवे में चलता रहूँ और रोज़ बरोज़ अपने बड़े भाई मसीह की मानिंद होता जाऊं।

“जो कि खुदा के बेटे पर ईमान लाता है गवाही आप में रखता है।”

(1 यूहन्ना 5:10)

## रूह-ए-पाक का मुहर करना

“और तुम ने भी कलाम-ए-हक़ जो तुम्हारी नजात की ख़ुशख़बरी है सुनकर उस पर भरोसा किया और उस के सबब से तुम को भी जो ईमान लाए रूह-उल-कुद्स की जिसका वाअदा हुआ मुहर मिली।” (इफ़िसियों 1:13)

रूह-ए-पाक की इनायत होने से मसीह के काम के दाअवे और वाअदे और कमालियत पूरी हुई। ईसा का मसीह होना इस से साबित हुआ और ये भी कि उस का काम पूरा हुआ और उस का कफ़ारा ख़ुदा को मक़बूल है रूह की बख़्शिश गोया एक मुहर है जो हमारे लेपालक होने और ख़ुदा से मक़बूल होने को साबित करती है। रूहे पाक बाप की मुहर है जिससे हमें उस के एहसानमंद और मंज़ूर होने और मुहब्बत रखने के हक़ में यक़ीन आता है। वो बेटे की मुहर भी है और हमको यक़ीन दिलाता है कि मसीह का लहू बहाना और उस की रास्तबाज़ी और सिफ़ारिश हमारी माफ़ी और रास्तबाज़ी और नजात के लिए काफ़ी है। रूह-उल-कुद्स हम पर मुहर कर देता है उस की मुहर सच्चाई है, यानी इन्जील की कलाम की सच्चाई वो अपनी मुहब्बत के वसीले से हमारे दिलों को नरम करता और अपनी कुद्रत से उन पर असर करता और मुहर कर देता है। सच्चाई हम पर ईसा को ज़ाहिर करती और गोया ईसा की शबिया हमारे दिलों पर खींचा करती है। ये शबिया ईसा की इस तरह पर ज़ाहिर होती है कि जहां-जहां उस की शहादत है। वहां गुनाह से नफ़रत रखना और पाक होने की आरिज़ो और मसीह को इज़ज़त देने की ख़्वाहिश और उस की मानिंद होने और आखिर को उस के साथ रहने की तमन्ना होती है। रूह की मुहर करने से हमारे दिलों में मसीह मक़बूल होने और उस से मिल जाने और उस के साथ रहने की उम्मीद पैदा होती है। ऐ रूह ईसा मेरे दिल पर मुहर कर बल्कि आप मेरे दिल में रहा कर ताकि मुझे यक़ीन हो कि फ़ज़ल व जलाल मेरे हैं। ऐ मेरी जान में तुझे ताकीद करता हूँ कि पाक रूह को जिससे तुझ पर ख़लासी के दिन तक मुहर हुई रंजीदा मत कर रूह में चलती रह और रूह का फल दिखलाया कर।

“हम इसी से जानते हैं कि हम उस में रहते हैं और वो हम में कि उस ने अपनी रूह से हमें दिया” (1 यूहन्ना 4:13)



## रूह-उल-कुद्स का बैयाना

“और उस ने हम पर मुहर भी की और रूह का बैयाना हमारे दिलों में दिया।” (2 कुरिन्थियों 1:22)

ईमानदारों को खुदा ने एक बड़ी और जलाल वाली मीरास देने का वाअदा किया है, लेकिन चाहिए कि कुछ देर तक उसे ना पाएं और जब तक वो ना मिले ऐसा हो कि हम पर आजमाईशें और शुबहे और डर पड़ें इसलिए रूह-उल-कुद्स हमें इनायत होता है ताकि हम यकीन करें कि उस को मक्बूल हैं और इस वजह से भी कि वो हमारी मीरास का बैयाना हो रूह-ए-पाक का हमारे दिल में बसना गोया खुदा का रहन (गिरवी रखना) है और वो उस के वाअदे को मुस्तहकम करता और हमको यकीन दिलाता है कि मीरास को हासिल करेंगे। रूह-उल-कुद्स का हमारे दिलों में बसना इस मीरास का एक हिस्सा है। यहां तक कि जो रूह को पाता है जरूर खुदा की बादशाहत का वारिस है और अपना हिस्सा पाएगा। रूह पाक आया है कि हमको हमारी मीरास लेने के लिए तैयार करे और हमको उस की खुशी और लज्जतों की हलावत (मिठास, मजा, आराम) बख्शे जो सलामती रूह-ए-पाक हमारे अंदर पैदा करता है और जो खुशी वो हमें बख्शता है और जो आजादगी वो इनायत करता है। उस सलामती और खुशी और आजादगी की मानिंद हैं जो नूर के फ़रज़न्दों को मिलेगी। रूह पाक हमें आस्मान में नहीं ले जाता लेकिन अक्सर हमारे दिलों में आस्मान की पेशबंदी किया करता है वो बैयाना है। और जब खुदा ने बैयाना दिया तो वो मीरास भी देगा। चुनान्चे ईसा ने कहा कि ऐ छोटे झुण्ड मत डर तुम्हारे बाप को पसंद आया कि बादशाहत तुम्हें दे और पौलुस भी रूह की निस्बत कहता है कि वो हमारी मीरास पाने का बैयाना है। जब तक कि खरीदे हुआ की खलासी ना हो ताकि उस के जलाल की सिताइश हो काश कि हमको रूह की मार्फत आस्मान की बहुत सी हलावतें मिलें काश कि वो हम पर ईसा को ऐसा ज़ाहिर करे कि इस दुनिया की खुशी हमें बेकद्र और नाचीज़ हो जाएं।

“और जिसने हमको उसी के लिए तैयार किया सो खुदा है और उस ने हमें रूह का बैयाना भी दिया।” (2 कुरिन्थियों 5:5)

## रूह-पाक का सिफ़ारिश करना

“और वो जो दिलों का जांचने वाला है जानता है कि रूह का क्या मतलब है कि वो खुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ मुक़द्दस लोगों के लिए शफ़ाअत करता है।” (रोमियों 8:27)

ईमानदार को काबिलियत नहीं है कि अपने दिल के सारे मतलब और मंशा बताए। गुनाह के सबब से ऐसा रंज पैदा होता है और उस के अंदर पाकीज़गी के हासिल करने के लिए ऐसी आरज़ूएँ हैं और वो जलाल पाने का इस क़द्र मुश्ताक़ है कि बयान से बाहर है। ये सब रूह से पैदा होता है ये हमारे अंदर उस की शफ़ाअतें हैं और गोया इस शफ़ाअत का गंज है। जिसे मसीह हमारे लिए आस्मान में करता है। आस्मान में ईसा हमारे लिए सिफ़ारिश करता है कि हम पाक हो जाएं। और आखिर को जलाल पाएं और रूह-उल-कुद्स हमारे दिलों को इन बातों पर लगाता है और हमारे अंदर इन बातों के लिए दुआएँ और आरज़ूएँ पैदा करता है। फिर खुदा जानता है कि हमारी पोशीदा लुक्नत करते हुए दुआओं की गर्ज़ क्या है, क्योंकि वो दिलों का जांचने वाला है हमारी आहें और ज़ारियाँ और घबराहटें और मुसीबतें और आरज़ूएँ उस को पुर मअनी मालूम होती हैं।

और वो इनका मतलब पहचान कर उन्हें कुबूल करता है खुदा जानता है कि रूह का क्या मतलब है वो जानता है कि रूह-ए-पाक हमारे दिलों में क्या बोलता है और उस की क्या मर्ज़ी है और वो हम में कौन सी ख़्वाहिशें पैदा करता है। रूह की शफ़ाअत खुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ है। जब हम इन बातों को मांगते हैं जो अपनी तबीयत में बुरी या हमारे नुक़सान के बाइस हों तब रूह-उल-कुद्स हमारी मदद नहीं करता वो खुदा की मर्ज़ी हमारी निस्बत जानता है। हमारी हाजत जानता और ये कि किन बातों में हमारे दिलों को लगाना चाहिए और जब हमारी आरज़ूएँ खुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ हैं। तब हम उस की मदद पाते हैं। और ये मदद मोअस्सर भी है। ऐ रूह-ए-पाक मेरे दिल में शफ़ाअत कर जैसा कि आस्मान में ईसा मेरा शफ़ी है। वैसा ही मेरे अंदर तू मेरा शफ़ी हो, मेरी कमज़ोरियों में मेरी मदद कर और मुझे सिखला कि किन चीज़ों के लिए और कैसी दुआ माँगूँ मुझे मेरी हाजत दिखला और मुझे यक़ीन दिला कि ईसा मेरी कुल एहतियाजें रफ़ा कर सकता है।

“ऐ खुदावन्द तू मिस्कीनों का मतलब सुनता है तू उन के दिलों को मुस्तइद करेगा। और कान रख के सुनेगा।” (ज़बूर 10:17)

## रूह-ए-पाक का हमारा मदद करने वाला होना

“इसी तरह रूह भी हमारी कमज़ोरियों में हमारी मदद करती है क्योंकि जैसा चाहिए हम नहीं जानते कि क्या दुआ मांगें मगर वो रूह ऐसी आहें भर के कि जिनका बयान नहीं हो सकता हमारी सिफ़ारिश करती है।”

(रोमियों 8:26)

हम कमज़ोरियों में खड़े हैं हमारी कमज़ोरी और नादानी बड़ी हैं। गाह-गाह मालूम होता है कि दुआ मांगने की ताकत नहीं है और अगर दुआ मांगें तो हम नहीं जानते कि खुदा से क्या कहें। चाहिए कि ताकत और दानिश के लिए रूह-ए-पाक पर मुतवक्किल हों वह रूहानी बातों की निस्बत हमारी एहतियाज हम पर ज़ाहिर करता है और उस भर-पूरी को जो ईसा में है पेश करता है और गोया हमारे ईमान के हाथ में वाअदा डालता है कि ये हमारे लिए सन्द हो। वो हमारे इशियाक को बढ़ाता है और हमारे अंदर ऐसी आरज़ूएँ पैदा करता है कि बयान से बाहर हैं। गाह-गाह वो हमें अल्फ़ाज़ बताता है कि अपनी हाजत को ज़ाहिर करें और जब वो हमारी ऐसी मदद करता है। तब हम खुदा से कुव्वत पाते हैं और ग़ालिब हो जाते हैं सारी सच्ची दुआएं रूह-ए-पाक की तरफ़ से दिल में पैदा होती हैं। इसी से हम दुआ मांगने में मदद पाते हैं। दुआ मांगने में हमारी सब फ़्तहयाबियाँ उस की मदद पर मुन्हसिर हैं। इसलिए कि जब तक वो हमारी मदद ना करे हम ईमान से दुआ नहीं कर सकते। कभी-कभी वो गोया खुदा की मुहब्बत दिल पर ज़ाहिर करता है कभी कोई कीमती वाअदा दिखलाता है कभी ईसा की मोअस्सर सिफ़ारिश की तरफ़ हमारी आँखें रुजू करता है और तब हमको तर्गीब देता है कि खुदा से दुआ मांगें और हमारी मदद करता है ताकि अपने दिल का सब मतलब बताएं। जब रूह-उल-कुद्स हमारी कमज़ोरियों में मदद करता है। तब दुआ मांगने की इजाज़त क्या ख़ूब व पसंदीदा है लेकिन जब उस की तासीर ना हो तो दुआ करने में दिल व जान क्या ही ख़ुशक और बे-फल रहते हैं। ऐ खुदावन्द ईसा रोज़ बरोज़ तसल्ली देने वाला मेरे दिल में भेज कि वो

तेरी मर्जी बजा लाने और तेरा दीन बढ़ाने और तेरा जलाल ज़ाहिर करने में मेरी मदद करे।

“मेरा फ़ज़ल तुझे किफ़ायत है क्योंकि मेरा ज़ोर कमज़ोरी में पूरा होता है।”

(2 कुरिन्थियों 12:9)

## रूह-उल-कुद्स का जिलाने वाला होना

“रूह ही वो जो जिलाती है जिस्म से कुछ फ़ायदा नहीं ये बातें जो मैं तुम्हें कहता हूँ रूह और ज़िंदगी हैं।” (यूहन्ना 6:63)

कलामे मुक़द्दस हमें सिखलाता है कि इंसान ख़ताओं और गुनाहों के सबब से मुर्दा है और मुर्दा होके वो रूहानी ताक़त नहीं रखता और रूह-उल-कुद्स के बग़ैर वो नेकी करने के क़ाबिल नहीं है। पस रूह-ए-पाक का अहद और काम मुर्दा को जिलाना ही सारी दीनदारी रूह-ए-पाक के जिलाने से शुरू होती है। जब रूह-ए-पाक को मिलती हैं। तब रूहानी ज़िंदगी शुरू होती हैं और गोया नई दुनिया में अपनी आँखें खोलते हैं और रास्तबाज़ी के भूके और प्यासे होते हैं। और आखिर को मज़ा हासिल करते हैं। कि ख़ुदावन्द मेहरबान है तब हमारी नई सोच और नई ख़्वाहिशें और नए ख़ौफ़ और नई उम्मीद और नई खुशी और नए गम होते हैं। ईमानदार की आँख मसीह पर लगी रहती है दिल मसीह की तरफ़ रुजू करता है। और उस की बड़ी आरजू ये है कि मसीह की मानिंद हो जाऊं। रूह-ए-पाक ना सिर्फ़ हमको जिला देता है कि हम मौत से गुज़र के ज़िंदा हो जाएं बल्कि ज़िंदगी-भर वो हमको जिलाया करता है वो हमें यहां तक जिलाता है कि दुआ मांगें बल्कि दुआ मांगने ही में जिला देता है। उस के जिलाने से हम रूहानी ज़िंदगी हासिल करते हैं और शैतान का मुकाबला कर के ईमान में साबित-क़दम रहते हैं जब वो हमें ना जलाए तो हम शिर गर्म और गाफ़िल और सुस्त हो जाएं। तब हमको दुआ मांगने में कुद्रत नहीं और दीनी रसूमात में खुशी नहीं और मुक़द्दसों के साथ गुफ़्तगु करने में आज़ादगी नहीं और बाइबल के पढ़ने से फ़ायदा नहीं होता। जब रूह-उल-कुद्स हमें जिलाता है तब सब कुछ कर सकते हैं। लेकिन उस के जिलाने के बग़ैर हम लाचार हैं ऐ रूहे हयात रोज़ बरोज़ मेरी जान को जिलाया कर।

“मेरी जान खाक से लगी जाती है तू अपने कौल के मुताबिक मुझको  
जिला।” (ज़बूर 119:25)

## रूह-ए-पाक का हमको जिलाना

“पर हम सब बेपर्दा खुदावन्द के जलाल को आइन्दा में देख देख के जलाल  
से जलाल तक खुदावन्द की रूह के वसीले से उसी सूरत पर बनते जाते हैं।”

(2 कुरिन्थियों 3:18)

इन्जील एक आईना है जो मसीह की सूरत का अक्स देता है और ईसा गोया आईना है जो बाप की माहियत (असलियत) व रौनक का नक्श देता है वो हमारे सामने खड़ा होता है मूसा की मानिंद नहीं जब वो अपने मुँह पर निकाब डाल के बनी-इसाईल के सामने खड़ा हुआ बल्कि बे-नकाब और उस के चेहरे में हम खुदा की रौनक देखते हैं रूह-ए-पाक-दिल को रौनक देखते हैं। रूह-ए-पाक-दिल को रोशन करता है और हमारी आँख ईसा पर लगाता है और उस की फ़ज़ीलतें हम पर ज़ाहिर करता है और जैसा कि पहाड़ पर मूसा का चेहरा खुदा के जलाल का कुछ अक्स पा कर जलवागर हुआ वैसा ही हम मसीह की सूरत पर बदल के उसी की मानिंद हो जाते हैं। हम उस की पाकीज़गी और मुहब्बत और सच्चाई और रहमत और अदल व मेहरबानी की सूरत पर बनते जाते हैं हम रूहानी होते जाते हैं। और जो लोग बाहर हैं वो देखते हैं कि हम पर तब्दीली आ गई है। हमारी फ़िरोतनी व सब्र और खैर ख्वाही बढ़ती जाती है हर एक आदमी कमो-बेश उस चीज़ की सूरत पर जिसे वो ज़्यादा प्यार करता है बनता जाता है और ईसाई जिस क़द्र वो ईसा पर सोचता और उस के साथ चलता और सोहबत रखता है उसी क़द्र उसी की सूरत पर बनता जाता है। इन्सान बज़ात खुदा की मानिंद नहीं हैं। लेकिन फ़ज़ल के वसीले से वो उस की मानिंद होता जाता और जलाल में यानी जब अपनी मीरास में पहुँचेगा। ठीक मसीह की मानिंद हो जाएँगे। हम उस वक़्त उस की मानिंद होंगे क्योंकि जैसा वो है वैसा ही उसे देखेंगे। मसीह के देखने से हम उस की मानिंद हो जाएँगे। ऐ रूह-ए-पाक मेरा दिल ईसा पर लगा रख रोज़ बरोज़ मैं उस का जलाल देखूँ और उस की सूरत पर मैं ऐसा बन जाऊँ कि सब लोग गवाही दें कि ये कैसी तब्दीली है। ईसा की

खातिर मुझे जलाल से जलाल तक मुबद्दल कर यहां तक कि मैं ज़ाहिर व बातिन में जलील व जमील हो जाऊं।

“और जिस तरह हमने खाकी की सूरत पाई है हम आस्मानी की सूरत भी पाएँगे।” (1 कुरिन्थियों 15:49)

## रूह-पाक के वसीले से बाप के पास दाखिल होना

“क्योंकि उसी के वसीले हम दोनों एक ही रूह से बाप के पास दखल पाते हैं।” (इफ़िसियों 2:18)

अपनी मौत के वसीले से ईसा ने गुनेहगारों के लिए बाप के पास राह खोली अपनी तालीम में उस ने वो राह दिखलाई और अपनी सिफ़ारिश की मार्फ़त वो हमें इस राह पर चलने की तर्गीब देता है। ये राह यहूदी और ग़ैर क़ौमों के लिए खुल गई। इसी राह से हम खुदा के पास दखल पाते हैं और गोया उस की हुज़ूरी में आते हैं रूह-उल-कुद्स है जो राह हमको दिखलाता और हमें इस राह में चलाता है वो हमें ले चलता और सिखलाता और चलने की ताक़त देता है। बग़ैर उस की मदद के हम कभी खुदा के पास नहीं पहुंच सकते। रसूमात पर तकिया (भरोसा) कर के या अपनी रास्तबाज़ी पर भरोसा रख के हम सिर्फ़ अपने ही राह पर चलते रहेंगे। राह-ए-रास्त पर नहीं लेकिन रूह-उल-कुद्स हम पर असर करता है कि खुदा के साथ क़राबत रखें। और उसी की मुशाबहत कुबूल करें सच्ची दीनदारी ये है कि ईसा के कफ़ारे और रूह के वसीले से हम खुदा के पास दखल पाएं हम खुदा को बाप जान कर उस के पास आते हैं और इस के साथ दलील लाते हैं और उस के हुज़ूर में गुनाहों का इकरार करते हैं और उस से माफ़ी हासिल करते हैं और उसी से फ़ज़ल की नेअमतें पाते हैं। रूह-ए-पाक हमारे लेपालक होने पर गवाही देता है। ऐ मुबारक तसल्ली बख़्श हमें खुदा के पास दखल पाने दे हमको उस के साथ सोहबत रखने दे और तेरी तासीर और तालीम और काम के वसीले से हम रोज़ बरोज़ फ़ज़ल में बढ़ते-बढ़ते आखिर को कामिल तौर से बाप के हुज़ूर में दाखिल हों। हम दीनी रसूमात या अपनी नेकी पर भरोसा ना रखें बल्कि ये कहें कि हमारा मेल बाप के साथ और उस के बेटे ईसा मसीह के साथ है।

“पर ऐ प्यारो तुम अपने पाक तरीन ईमान का घर बनाने रूह-ए-पाक से दुआ मांगते हुए अपने को खुदा की मुहब्बत में महफूज़ रखो और हमेशा की ज़िंदगी के लिए खुदावन्द ईसा मसीह की रहमत के मुंतज़िर रहो।”

(यहूदाह 20, 21)

## रूह में चलना

“अगर हमारी ज़िंदगी रूहानी है तो चाहिए कि हमारा चलन भी रूहानी हो।”

(ग़लतियों 6:25)

रूह-उल-कुद्स हमारी पाकीज़गी की अस्ल और जड़ हो के हम में बस्ता है और हमको चाहिए कि रूह में इस तौर से बसें कि गोया वो हैकल हो जिसमें हम सुकूनत करें। रूहानी चलन ये है कि रूहे पाक हमेशा हमारे दिलों में असर करे और हम उस के कलाम के मुताबिक अपनी ज़िंदगी काटें और हमेशा मालूम करें कि वो हमारे साथ है। जो लोग ऐसी रूहानी चाल चलते हैं तो रूह-ए-पाक उनकी हिदायत करता है और उनको समझाता है और हर खतरे से उन्हें बचाता है। जो ऐसी चाल चलते हैं वो शराअ के तले नहीं बल्कि फ़ज़ल के तले हैं और गुनाह उन के ऊपर सलतनत नहीं करता और वो खुदा के जलाल बढ़ाने के लिए मख्सूस हैं। रूह-ए-पाक हमारा उस्ताद और पेशवा और तसल्ली बख़्श है। हम अपने को उस के सुपुर्द कर के ये आरजू करते हैं कि उस को राज़ी करें और उस को इज़ज़त दें। हम ना उस को ग़मगी किया और ना उस को रोक दिया चाहते हैं और ना उस की पाक तासीरें बुझाना चाहते हैं। रूहानी चाल चलना ये है कि हम मसीह का मिज़ाज रखें और मुखालिफ़त और सताए जाने और मुसीबत व दिक्कत में दिखलाएँ कि अपनी मर्ज़ी नहीं बल्कि मसीह की मर्ज़ी के मुवाफ़िक अपनी ज़िंदगी को बसर किया चाहते हैं। रूहानी चाल ऐसी चाल चलना है जैसा ईसा आप चलता था और ऐसा खयाल व अमल करना जैसा उस ने किया ऐ रूहे पाक हमको सिखला कि आज रूहानी चाल चलें और रोज़ बरोज़ इसी तरह चलते रहें। हम ईसा की मानिंद चलें और उस की मानिंद अपनी ज़िंदगी को बसर करें हम अपने बदन को खुदा की नज़र करें ताकि एक ज़िंदा कुर्बानी मुक़द्दस व पसंदीदा हो कि ये हमारी माकूल इबादत है और इस जहान के हम-

शकल ना हों बल्कि अपने दिल के नए होने से अपनी शकल बदल डालें ताकि खुदा के उस इरादा को जो खूब व पसंदीदा व कामिल है जानें।

“पर मैं कहता हूँ कि तुम रूह से चलन चलो तो तुम जिस्म की ख्वाहिश को पूरा ना करोगे।” (गलतियों 5:16)

## रूहे-पाक का मसीह के हक़ में गवाही देना

“पर जब कि वो तसल्ली देने वाला जिसे मैं तुम्हारे लिए बाप की तरफ़ से भेजूँगा यानी रूहे हक़ जो बाप से निकलती है। तो वो मेरे लिए गवाही देगी।”

(यूहन्ना 15:25)

मसीह के हक़ में गवाही देना रूह-उल-कुद्स का एक खास काम है। कलाम-ए-अक़दस में उस ने ये किया है, चुनान्चे उस कलाम के हर एक हिस्से में मसीह की बाबत गवाही मिलती है। गवाही जो ईसा पर है नबुव्वत की रूह है। शरीअत की अलामतें और निशानियां और नबियों की पेशगोईयां और बाइबल के ज़बूर और गीत मसीह के हक़ में बहुत पेश करते हैं। खासकर नए अहदनामे में रूह-उल-कुद्स ने ईसा पर गवाही दी है। और उस में उस के जन्म और बपतिस्मा और मोअजिज़ों और दाअवों और दुख और मौत और जी उठने और जलाल में चढ़ जाने पर गवाही देता है। जब कलाम अल-हक़ और दीनी रसूमात और वाइज़ के वसीले और अपनी कुद्रत से वो दिल को सर-ए-नौ पैदा करता तब वो मसीह पर गवाही देता है। ईमानदार के दिल में वह मसीह पर और उसी के लिए गवाही देता है। वो उस की उलूहियत पर गवाही देता है और इस पर भी गवाही देता है कि इम्मानुएल यानी खुदा और इन्सान दोनों वही है। वो उस के लहू की तासीर पर गवाही देता है और उस की रास्तबाज़ी की कामिलियत और उस के दिल की मुहब्बत और उस के बचाने की रजामंदी पर गवाह होता है वो इस पर गवाही देता है कि ईसा में ऐसी लियाक़त है कि वो हर एक की हाजत को ख्वाह वो ईमानदार की या गुनेहगार की हो रफ़ा कर सकता है और ये हमको यकीन दिलाता है कि ईसा अपनों को प्यार कर के उन्हें आखिर तक प्यार करेगा। पस लाज़िम है कि हम बखूबी जानें कि रूह-ए-पाक खुदावन्द ईसा के जलाल और लियाक़त और फ़ज़ीलत पर एक कादिर गवाह है। ऐ रूह-



उल-कुदस हमारे दिलों में ईसा की जलाली माहियत (असलियत) और कामिल काम पर गवाही दे काश कि हमारे अंदर वो गवाही हो जो कलाम अल-कूदस की गवाही को यकीन करे।

“क्योंकि उस ने एक ही नज़र (कुर्बानी) गुज़ाने से मुक़द्दसों को हमेशा के लिए कामिल किया और रूह-उल-कूदस भी हमारे लिए गवाही देता है।”

(इब्रानियों 10:14-15)

## रूह-ए-पाक का मसीह की बुजुर्गी करना

“लेकिन जब वो यानी रूहे हक़ आए तो वो तुम्हें सारी सच्चाई की राह बताएगा इसलिए कि वो अपनी ना कहेगा। लेकिन जो कुछ वो सुनेगा सो कहेगा और तुम्हें आइन्दा की ख़बर देगा वो मेरी बुजुर्गी करेगा इसलिए कि वो मेरी चीज़ों से पाएगा और तुम्हें दिखाएगा।” (यूहन्ना 16:13-14)

जो मसीह सर्फ़राज़ ना हो तो चाहिए कि गुनेहगार पस्त हो जाये। पस साफ़ वाज़ेह है कि जिस क़द्र कोई आदमी रूह से सिखलाया जाता और जिस क़द्र वो रूह से मामूर हो जाता है उसी क़द्र वो अपने को फ़रोतन करेगा। और जिस दर्जे वो (अपने) आपको पस्त जाने उसी दर्जा मसीह को सर्फ़राज़ करेगा। रूहे पाक मसीह की शख़्सियत और काम व कलाम और ओहदों और मुहब्बत के हक़ में गवाही दे के उस की बुजुर्गी करता है। जब रूह की बहुतायत हमको मिलती है तो मसीह की बाबत सोचते हैं और उस के साथ शराक़त रखते हैं और उस की तारीफ़ व हम्द गाते रहते हैं जब रूह-ए-पाक मसीह का ला-इंतिहा और बे-तब्दील प्यार और उस के जलाल वाली रास्तबाज़ी और उस का कामिल कफ़़ारा और उस की मुलायम हम्ददी और उस की मुस्तहकम और मोअस्सर सिफ़ारिश हम पर ज़ाहिर करता है। या हमारे दिलों को तर्गीब देता है कि उस के उस ज़हूर को ताकें जब वो आएगा कि अपने मुक़द्दसों से जलाल पाए और अपने सब ईमानदारों में ताज्जुब का बाइस हो तब हमारे दिल मुहब्बत से लबरेज़ हैं हम उस पर यकीन रखते हैं और उस की हम्द तारीफ़ करते हैं। और अपने को और अपना सब कुछ उस के सपुर्द करते हैं और आरजू रखते हैं कि उस के साथ हों और जैसा वह है उस को देखें तब उस

का जलाल और सब जलालों से बरतर है वो हमारा सब कुछ है। और हम उस की सिफ़तों को बयान करते हैं। तब हम पर उस की ऐसी लियाक़त इश्कार है कि बयान से बाहर है और हमको मालूम है कि उस की इज़ज़त व खूबी व जलाल के ज़ाहिर करने के लिए अबदियत भी काफ़ी नहीं है लेकिन अबदियत इसलिए पसंदीदा व जलील है कि उस की तारीफ़ व बुजुर्गी करने में बसर की जाये।

“तुम्हारे वास्ते जो इमान लाए हो वो कीमती है।” (1 पतरस 2:7)

## फ़ज़ल की रूह

“और मैं दाऊद के घराने पर और यरूशलेम के बाशिंदों पर फ़ज़ल और मुनाजात की रूह बरसाऊंगा। और वो मुझ पर जिसे उन्हीं ने छेदा है नज़र करेंगे। और वो उस के लिए मातम करेंगे जैसा कोई अपने इकलौते के लिए मातम करता है। और वो उस के लिए तलख़ काम होंगे। जिस तरह से कोई अपने पहलौठे के लिए तलख़-कामी (नाकामी) में पड़ता है।”

(ज़करियाह 12:10)

कफ़फ़ारे की तर्तीब में रूह-ए-पाक का ये काम है कि बाप से बेटे की माफ़त फ़ज़ल को गुनेहगार के दिल में बर लाए (उम्मीद होना) हमारा आस्मानी बाप सारे फ़ज़ल का खुदा है। ये फ़ज़ल ईसा में ज़ाहिर है बल्कि वो फ़ज़ल और सच्चाई से मामूर है और रूहे पाक की तासीर से भी फ़ज़ल हमारे दिल में दाख़िल होता है। यहां तक कि मसीह की भरपूरी से हम सब पाते हैं बल्कि फ़ज़ल पर फ़ज़ल। जो फ़ज़ल हम ईसा से पाते हैं वो हमें उसी की मानिंद बदल कर देता है वो हमको पाक कर देता और हमारी मुहब्बतें और खसलतें आस्मान की तरफ़ रुजू करता है। और हमको खुदावन्द के जलाल और इज़ज़त ज़ाहिर करने के लिए मख़सूस करता है। फ़ज़ल दुआ करने का चशमा और नेकी करने का सोता और और सारी रूहानी फ़ज़ीलातों की जड़ है। अगर हम खुदा के मक्बूल हों तो चाहिए कि फ़ज़ल के बाइस से मक्बूल हों अगर मसीह की इन्जील के मुवाफ़िक़ अपनी जिंदगी गुज़राँ करें तो चाहिए कि फ़ज़ल से गुज़राँ करें और अगर हम बर्दाशत से दुख

उठाएं तो चाहिए फ़ज़ल के तख़्त के पास बेपर्वा जाएं ताकि हम पर रहम हो और फ़ज़ल जो वक़्त पर मददगार हो हासिल करें हमारे दिलों में जो रूहानी खयाल और नीयतें पैदा होती हैं। वो रूह-ए-पाक से पैदा होती हैं। और उसी से बढ़ती जाती हैं। जैसा कि पौंदे की जिंदगी कि तरावत (ताज़गी) और सूरज की किरनों और उस पर मुन्हसिर है वैसा ही हमारी रूहानी बरूमंदी फ़ज़ल की रूह पर मौकूफ़ होती है। फ़ज़ल के वसीले से हम सब कुछ कर सकते हैं। और उस के बग़ैर हम महज़ लाचार हैं। अफ़ज़ल की रूह हमारे दिलों को फ़ज़ल से मामूर कर और हमारी हिदायत कर कि हम फ़ज़ल से भरपूर हो के ईसा के लिए रहें।

“अपनी नजात की शादमानी मुझको फिर इनायत कर और अपनी आज़ाद रूह से मुझ को आरास्ता करा।” (ज़बूर 51:12)

## लेपालक होने की रूह

“तुमने गुलामी की रूह नहीं पाई कि फिर डरो बल्कि लेपालक होने की रूह पाई जिससे हम अब्बा यानी ऐ बाप पुकारते हैं।” (रोमियों 8:15)

गुलामी की रूह वो है जो शरीअत से पैदा होती है और जिससे हम खुदा के हुज़ूर में खौफ़ रखते और उस के क़हर से डरते हैं, पर लेपालक की रूह रूह-ए-पाक है। जो इन्जील के वसीले से हमें दिया जाता है। हम शरीअत पर अमल करने से नहीं बल्कि ईमान के सबब भी रूह पाते हैं। हम ले पालक होने से फ़र्ज़न्द होते हैं। और सर-ए-नौ पैदा होने से फ़र्ज़न्दियत का मिज़ाज पाते हैं। और तब हम को लेपालक की रूह दी जाती है। रूह-ए-पाक लेपालक होने की रूह हो के हम पर खुदा का बाप होना ज़ाहिर करता है और हमारे दिलों में उस की मुहब्बत जारी करता है। और उसे मसीह की सूरत में हम पर ऐसा ज़ाहिर करता है कि वो हमारा दिलचस्प व अज़ीज़ दिखलाई देता और तब हमको अब्बा नाम बताता है। और हम उस की मदद से खुदा को बाप कह सकते हैं। जब खुदा हम पर ऐसा ज़ाहिर होता है। तब हमारी खुशी पूरी होती है। और खौफ़ और डर जाते रहते हैं और मसीह पर ईमान लाने से हम भरोसे के साथ खुदा के हुज़ूर में दखल रखते हैं। तब पौलुस के इस कलाम की मुराद हम पर आशकार होती है कि पस जब कि हम

ईमान के सबब रास्तबाज़ ठहरे तो हम में और खुदा में हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के वसीला मेल (मिलाप, सुलह) हुआ और उसी के वसीले हम इस फ़ज़ल में जिस पर कायम हैं ईमान के सबब दखल पाने और खुदा के जलाल की उम्मीद पर फ़ख़र करते हैं। ऐ लेपालक बनाने की रूह मेरे दिल में बसा कर और मुझे हर तरह की गुलामी से आज़ाद कर के मुझे मेरी नई फ़र्ज़न्दियत में खुश कर।

“और इसलिए कि तुम बेटे हो खुदा ने अपने बेटे की रूह तुम्हारे दिलों में भेजी जो अब्बा यानी ऐ बाप पुकारती है।” (ग़लतियों 4:6)

## रूह-उल-कुद्स का आज़ादगी रूह होना

“और खुदावन्द वही रूह है और जहां कहीं खुदावन्द की रूह है वहां आज़ादगी है।” (2 कुरिन्थियों 3:17)

जिस दिल में रूह पाक ने दखल नहीं पाया वो शरीअत के तले गिरफ़्तार और गुनाह का गुलाम और शैतान का कैदी है। आज़ादगी उस में नहीं है बल्कि आज़ाद होने की ख्वाहिश भी नहीं, जब तक वो रूह-ए-पाक से जिलाया ना जाये और रोशन ना हो वो अपनी गुलामी को पसंद करता है। जब रूह पाक गोया दिल को खौलता है तब गुनेहगार अपनी ख़तरनाक हालत को पहचान के आज़ादी के लिए आह भरता है। वो अपनी गुलामी से मखलिसी (छुटकारा) चाहता है और तसल्ली बख़्श मुबारक उस की बंद को तोड़ता और उस की जंजीरों को खौलता है। वो गुनाह की ताक़त और ज़बरदस्ती से खलासी पाता है। उस की तमीज़ इल्ज़ाम देने से छूट जाती और उस के दिल से खौफ़ और डर जाता रहता है। वो शरीअत के क़ाबू से आज़ादी पा के इन्जील की आज़ादी में दाखिल होता है। और सलामती और खुशी और दिली आराम हासिल करता है। अब भी गुनाह उस पर सलतनत नहीं कर सकता क्योंकि वो शरीअत के तले नहीं बल्कि फ़ज़ल के तले है। शैतान उस के दिल से निकाल दिया गया है और अगरचे वो दिक् करे और तर्गीब दे और दिल को वरगलाना चाहे तो भी उस की कुद्रत और इख़्तियार मिट गया है। और अपनी मर्ज़ी पर उस को जिला नहीं सकता, तब ईमानदार एतबार से खुदा के हुज़ूर में आ सकता है और खातिरजमा के साथ ईसा पर तकिया (भरोसा) कर सकता है। और ऐसी कामिल आज़ादगी पाता है कि खुदा की खिदमत सच्ची आज़ादगी जानता है जो मसीह में है। वह हकीकतन

आज़ाद है और हमेशा आज़ाद रहेगा। वो गुलाम नहीं बल्कि फ़र्ज़न्द हो के ईसा के वसीले से खुदा का वारिस ठहरता है, अगर बेटा तुमको आज़ाद करेगा। तो तुम हकीकी आज़ाद होगे।

“क्योंकि इस रूह ज़िंदगी की शरीअत ने जो मसीह ईसा में है मुझे गुनाह और मौत की शरीअत से छुड़ा दिया।” (रोमियों 8:2)

## रूह-ए-पाक का याद दिलाने वाला होना

“लेकिन वो तसल्ली देने वाला जो रूह-उल-कुदस है जिसे बाप मेरे नाम से भेजेगा। वही तुम्हें सब चीज़ें सिखलाएगा। और सब बातें जो कुछ कि मैंने तुम्हें बताई हैं तुमको याद दिलाएगा।” (यूहन्ना 14:26)

ईमानदार की याद बिगड़ी और नापाएदार है अक्सर वो बुराई को याद रखता और नेकी को भूल जाता है। अक्सर औकात जब वो अंधेरे या तकलीफ़ में हो या किसी बातिनी सलीब के तले दब गया हो तब जो वाअदे उस की तसल्ली के लिए दिए गए उस की याद में नहीं आते। रूह-ए-पाक का एक काम ये है कि ईमानदार को खुदा के कलाम की निस्बत याद दिलाए, कभी वो मुसीबतज़दा या आजमूदा ईमानदार की आँख को किसी वाअदे पर लगाता है। कभी ईमानदार के किसी शरीक से उस को याद दिलाता है और कभी दिल में ऐसी सोच और खयाल पैदा करता है जिनसे महज़ तसल्ली मिलती है। कितनी बार दिल में कीमती बातें और लज़ीज़ वाअदे और दिलचस्प याद खुदावन्द के काम की निस्बत दिल में आए हैं और हम तो भूल गए होंगे, कि रूह का खास काम ये है कि इसी तरह ईमानदार को सँभाले और तसल्ली दे कभी वो वाइज़ को ऐसी तर्बियत करता है, कि वो ऐसी बातें निकाले जो ठीक हमारी हालत के मुवाफ़िक़ हों या कोई ईसाई हमें सलाह और तसल्ली देता है कि गोया वो हमारी कोठरी के दरवाज़े पर खड़ा होता और हमारी सारी फ़र्यादें सुनता और कभी कलाम अल-कूदस का कोई हिस्सा जो हमको नामालूम था हमें ऐसी तस्कीन बख़शता है कि गोया हमारे ही लिए लिखा गया हो। ये याद दिलाने वाली रूह का काम है। जब हम दुआ मांगने में मशगूल हैं तब बाइबल के हिस्से जो हमारे हाल के लायक़ हैं याद आते हैं। या वो हिस्से जिन्हें बहुत बरस गुज़रे

हमने सुना या पढ़ा था दिल में फिर आते हैं। और उन में नई तासीर व हक-शनासी है और ये भी रूह-ए-पाक का काम है कि वो मसीह की चीजों से पाता और हमें दिखलाता है। ऐ रूह मुबारक रोज़ बरोज़ मुझे ईसा के हक में याद दिला और उस की लज़ीज़ बातें तासीर के साथ मुझ पर ज़ाहिर कर।

“इसलिए जब वो मुर्दों में से जी उठा तो उस के शागिर्दों को याद आया कि उसने ये कहा था और वो किताब और येसू के कलाम पर ईमान लाए।”

(यूहन्ना 2:22)

## रूह से भर जाना

“और शराब पी कर मतवाले ना हो कि उस में खराबी है बल्कि रूह से भर जाओ।” (इफिसियों 5:18)

जो हमारा हक़ खास है सो वो भी हमारा फ़र्ज़ ठहरता है हर ईमानदार पर रूह-उल-कुद्स नाज़िल होता है। लेकिन अक्सर इस का वो पैमाना और मामूरी नहीं मिलती जैसा मिल सकता मामूरी हमारे पास है और उसे बरतर हम हासिल कर सकते हैं। जिनके पास पौलुस ने ख़त मज़कूर लिख भेजा उन में रूह तो नहीं और उन पर उसी से ख़लासी के दिन तक मुहर की गई। पर तो भी उन से हवारी कहता है कि रूह से भर जाओ ऐसा भर जाना हो सकता है और वो मर्ग़ूब है और इस का होना यक़ीन है। हमारे लिए ये मामूरी जो पाई तरह तरह की बुराईयों से बचाओ हो क्योंकि इस से जान व बदन पाक हो जाएगा। और हम मसीह की खिदमत करने और आस्मान पर जाने के लिए तैयारी हासिल करेंगे। रूह से भर जाना हमें कुल फ़राइज़ अदा करने के लिए तैयारी देगा। और हमारी सोच और दिली हरकतों और कलाम पर असर करेगा। वो हमारी ख़्वाहिशों को कब्ज़े में लाएगा। और हमारी बुरी ख़सलतों को रोकेगा और हमारे क़दमों को राह-ए-रास्त में चला के बहर तरह हमारी ख़ुशी व तरक्की बढ़ाएगा। पस लाज़िम है कि ये फ़र्ज़ अमल में लाएं। खुदा के कलाम में वाअदा और दावत और नमूने और तर्ग़ीब और इल्तिमास हमारे सामने पेश किए गए हैं। क्या हम उन सभी को हक़ीर जानें चाहिए कि हर एक शख़्स अपने फ़हम से दर्याफ़्त करे कि कि क्या मैं कभी रूह से बड़ा हूँ? क्या मैं इस का

आर्जूमंद हूँ क्या इस का तालिब हूँ? क्या इस के हासिल करने के बगैर मैं खुश हूँ जो हम पाक व चालाक और फ़ाइदेबख़श और इम्तियाज़ और खुश-दिल हों तो चाहिए कि रूह से भरे हों क्योंकि सिर्फ़ इसी से ये हासिल हो सकता है। ऐ रूह-उल-कुद्स आ और मेरे दिल को भर दे। मैं तो तेरी रोशनी और ज़िंदगी और मुहब्बत व कुद़त और पाकीज़गी से बल्कि आपसे भर जाऊँ।

“क्योंकि वो नेक मर्द था और रूह-उल-कुद्स और ईमान से भरा और एक बड़ी जमाअत खुदावन्द की तरफ़ रूजू लाई।” (आमाल 11:24)

## क्या तुमने रूहे अक़दस को पाया

“क्या तुमने जब से ईमान लाए रूह-उल-कुद्स पाया उन्हीं ने कहा हमने तो सुना भी नहीं कि रूह-उल-कुद्स है।” (आमाल 19:2)

बगैर रूह-उल-कुद्स पाने के रास्तबाज़ और दीनदार होना नामुम्किन है, क्योंकि रूह-उल-कुद्स सब रूहानी ज़िंदगी का बानी व चशमा है और जो दीन व मज़हब रूहानी नहीं है वो मसीह से नहीं, अगर तुमने रूह-उल-कुद्स को पाया है तो जानोगे कि पाया, लेकिन तुम शायद इसी वक़्त ये ना पहचान सको क्योंकि पाक रूह की सब तासीरें तुम को मालूम नहीं हो सकतीं। पर तो भी अगर तुम ने रूह को पाया तो कई एक निशानों से ये जाना जाएगा। पहले तुम जानोगे कि गुज़रे दिनों में तुम्हारा मिज़ाज नफ़सानी था रूहानी नहीं फिर हम खुदगर्ज़ मगुरूर सरकश थे। लेकिन अब फ़रोतन और मुलायम दिल हो गए। तुम्हारे नज़दीक खुदा की शरीअत पाक और रास्त और नेक है। और इन्जील कामिल नजात की खुशखबरी है। तुम इस बात से ख़ौफ़ रखते हो कि शायद तुम फ़रेब खाते या फ़रेबी हो और अपने दिलों को जाँचा करते हो ताकि यकीन हो कि तुम मसीह में नई मख़लूक हो कि नहीं तुम गुनाह से ख़्वाह वो अंदर हो या बाहर नफ़रत रखते हो और तुम्हारी ये आरज़ू है कि सर ता पा (सर से पैर तक) पाक हो। तुम ख़्वाहिशमंद हो कि औरों का फ़ायदा करो और ये कि दिल व रूह व बदन से ईसा का जलाल ज़ाहिर करो क्योंकि तुम उसी के हो। खुदा का कलाम तुम्हारी ज़िंदगी का क़ानून है और इसलिए कि ईसा को इज़ज़त बख़शो और खुदा का जलाल ज़ाहिर करो तुम अपना इन्कार करते हो

जहां ये निशान हैं वहां रूह-उल-कुद्स है। ऐ खुदावन्द मुझे जांच और मेरे दिल को आजमा और मुझे मेरे हकीकी हाल बता जब तक तेरी हुजूरी से मामूर ना हूँ मैं कभी खुश ना हूँगा। मैं तेरी रूह को ना भुजाऊँ और ना उसे रंजीदा करूँ। तेरी रूह ऐ खुदा मेरी हिदायत और रहनुमाई करे और मुझे राह-ए-रास्त पर चलाए।

“जिसमें मसीह की रूह नहीं वो उस का नहीं।” (रोमियों 8:9)

## रूहे पाक की बखिश इमान लाने पर मुन्हसिर है

“क्या तुमने जब से इमान लाए रूह-उल-कुद्स पाया उन्होंने ने उसे कहा हमने तो सुना भी नहीं कि रूह है।” (आमाल 19:2)

जब खुदा पहले ही रूह-उल-कुद्स देता है तब इसलिए देता है कि वो हम पर हमारी हाजत ज़ाहिर करे और मसीह की तरफ़ ये हाजत रफ़ा करने के लिए ले चले और हमारी एसी हकीकी मदद करे कि मसीह में नजात पाएँ। बाद इस के भी रूह-ए-पाक दिया जाता है। और तब उस का ये काम है कि मसीह को हम पर कामिल तौर से ज़ाहिर करे ताकि हमारी खुशी कामिल हो। वो इमानदारों के दिलों में रहता और खुशी और सलामती और कामिल यकीन पैदा करता है। वो हम पर ज़ाहिर करता है कि ईसा में खुशी की भर-पूरी है और कि ये सारी खुशी हमारे लिए है ताकि हम हर वक़्त और हर हाल में खुश हों, चुनान्चे लिखा है कि, “खुदावन्द में हमेशा खुश रहो फिर कहता है हाँ खुश रहो” वो खुदा की बादशाहत आदमियों के दिलों में कायम करता है और ये बादशाहत रास्ती और सलामती और रूह-उल-कुद्स से खुश-वक़ती है। इस के हक़ में जिन्होंने ये बरकत पाई कहा जाता है कि वो खुशी और रूह-उल-कुद्स से भरी थी। रूह का फल खुशी है। इमानदारों की निस्बत अगरचे वो दुखी और मुसीबतज़दा हों। लिखा है कि उस को यानी मसीह को बे-देखे तुम प्यार करते हो और बावजूद ये कि तुम अब उस को नहीं देखते मगर उस पर इमान ला के ऐसी खुशी व ख़ुरमी करते हो जो बयान से बाहर और जलाल से भरी है और फिर लिखा है कि तुम को भी जो इमान लाए रूह-उल-कुद्स की जिसका वाअदा हुआ मुहर मिली। ऐ आस्मानी बाप कुद्रत और किफ़ायत के साथ हमें तसल्ली बख़श दे ऐ रूह मुबारक हम में रहा कर और हमको हमारे गुनाहों और ख़ौफ़ों और ग़मों से छुटकारा दे। ऐ ईसा अपने लोगों को अपनी रूह इनायत कर कह वो इमान लाने में



पायदार और फ़र्ज़ अदा करने में चालाक और दुख उठाने में साबिर और मौत की इंतज़ार में हिम्मती हों।

“अब खुदा जो उम्मीद का बानी है तुमको ईमान ला ने के बाइस सारी खुशी और सलामती से भर देता कि रूह-उल-कुद्स की कुद्रत से तुम्हारी उम्मीद ज्यादातर होती जाये।” (रोमियों 15:13)

## रूह उन में नहीं

“ये वही हैं जो अपने को अलग करते हैं ये नफ़्सानी लोग हैं और रूह उन में नहीं।” (यहूदाह 19)

किसी के पास बहुतेरी चीज़ें हों पर तो भी वो जो खास चीज़ उस को चाहे सो उस के पास नहीं है। वो कलीसिया में ओहदेदार हो और उस की चाल भी मुवाफ़िक हो। वो आस्मान का उम्मीदवार हो और यकीन करे कि मैं खुदा का मक्बूल हूँ। वो बाइबल की तामील को अच्छी तरह से पहचाने और उस की सारी चाल और रविश दुरुस्त हो और तो भी रूह में ना हो। रूह के बग़ैर सच्चा ईमान और तौबा और प्यार और सरगर्मी और गुनाह पर काइल होना और मसीह के हक़ में मोअस्सर सोच और खयाल नहीं हो सकते जो शख्स रूह के बग़ैर है वो कलीसिया के हुकूम में कुछ इख्तियार और खुदावन्द की खिदमत करने के लिए कुछ लियाक़त नहीं रखता और खुदा से मुसाहबत (हमनशीनी, साथ रहना) नहीं रख सकता और खुदा के जलाल को ज़ाहिर नहीं कर सकता अब का हाल ये है तो आइन्दा को वो कैसा खौफ़नाक और पुर-खतर होगा। तब ईसा से खारिज होगा। और बर्रे के ब्याह की ज़ियाफ़त में दखल ना पाएगा। और खुदा के क़हर तले रहेगा। और खुदावन्द के चेहरे से और उस की कुद्रत के जलाल से अबदी हलाकत की सज़ा पाएगा। जो कोई रूह में ना हो तो उस का सारा हासिल क्या चाहिए कि इस बात के हक़ में दर्याफ़्त करें कि हम रूह में हैं या नहीं ता ना हो कि हम फ़रेब खाएं चाहिए कि रूह की भर पूरी हासिल करें। ऐ अज़ीज़ पढ़ने वाले क्या रूह में है? क्या तू रूह में सारी ज़िंदगी बसर करता है? क्या तू रूह में चलता है? खबरदार मबादा तू रूह-उल-कुद्स को बुझाए या उसे रंजीदा करे खयाल कर कि अगर खुदा अपनी रूह से कहे कि उसे जाने

दे तो तेरा कैसा हाल होगा। बहुतेरों ने रूह-ए-पाक से यहां तक लड़ाई की कि उस ने उन को छोड़ दिया और तब शैतान ने उन के दिलों में ऐसी जगह पाई कि जिससे वो फिर बाहर नहीं गया। ऐ अज़ीज़ो ! मसीह की तरफ़ दौड़ो कि तुम्हारा ये हाल ना हो।

“पस जब तुम बुरे हो के अपने लड़कों को अच्छी चीज़ें देना जानते हो। तो वो बाप जो आस्मान पर है कितना ज़्यादा उनको जो उस से मांगते हैं रूह-उल-कुद्स देगा।” (लूका 11:13)

तम्मत

